# जन्म कुंडली

## नमूना व्यक्ति

18/06/1995  07:45:00

Pune, Maharashtra, India

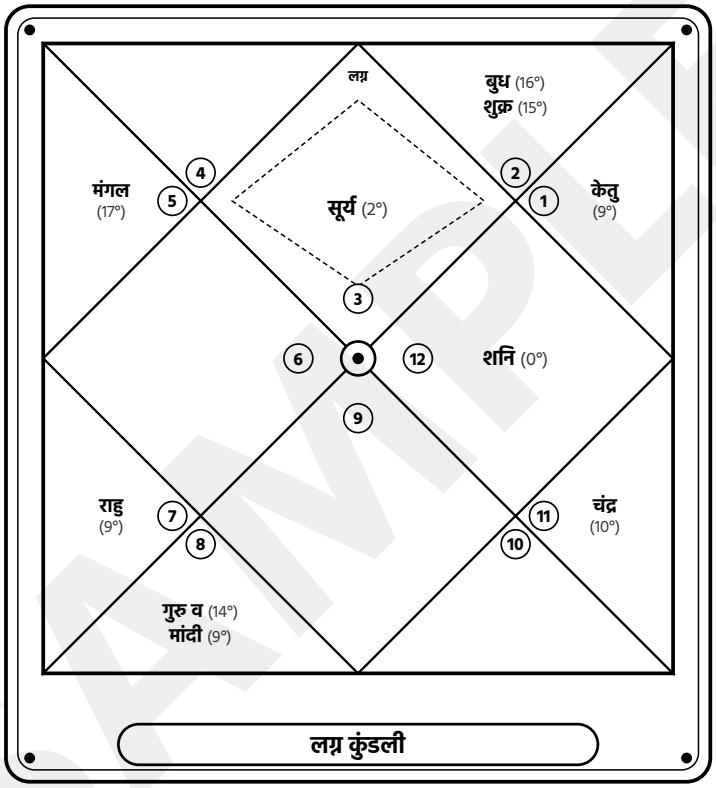


**इस कुंडली में दोष:**

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

*इस कुंडली की गणना सही करने में पूरी सावधानी बरती गई है। ज्योतिष व्याख्या की एक पारंपरिक पद्धति है, और यहाँ दी गई गणनाएँ तथा फलादेश बिना किसी भी प्रकार की गारंटी या वारंटी के, चाहे व्यक्त हो या निहित, दिए गए हैं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले अपने विवेक का उपयोग करें, और चिकित्सा, कानूनी या आर्थिक मामलों में योग्य विशेषज्ञों से सलाह लें।*

निर्मित: kyaboletaare.com

SAMPLE

# जन्म विवरण

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | **नमूना व्यक्ति** | जन्म तिथि | **18/06/1995** |
| जन्म समय | **07:45:00** | स्थान | **Pune, Maharashtra, India** |
| अक्षांश / रेखांश | **18.5196 / 73.8554** | समय क्षेत्र | **UTC+05:30 IST** |
| जन्म का दिन | **रविवार** | सूर्योदय / सूर्यास्त | **06:00:17 / 19:12:48** |
| इष्टकाल (घटी) | **04:21:48** | अयनांश (लाहिड़ी) | **23:47:47** |
| लग्न | **मिथुन 25:50:01** | राशि (चंद्र राशि) | **कुंभ** |
| नक्षत्र | **शतभिषा (चरण 2)** | चंद्र राशि पाया | **रजत** |
| विंशोत्तरी शेष | **राहु 13 वर्ष 2 माह 10 दिन** | | |

## जन्म के समय पंचांग

| | जन्म के समय | आरंभ | समाप्ति |
|---|---|---|---|
| तिथि | **कृष्ण 6 (षष्ठी)** | 17/06/1995 17:31 | 18/06/1995 16:05 |
| नक्षत्र | **शतभिषा** | 18/06/1995 01:31 | 19/06/1995 01:09 |
| योग | **विष्कुंभ** | 17/06/1995 10:57 | 18/06/1995 08:33 |
| करण | **वणिज** | 18/06/1995 04:42 | 18/06/1995 16:05 |
| राशि | **कुंभ** | 17/06/1995 14:00 | 19/06/1995 19:25 |

## अवकहड़ा चक्र

| वर्ण | वश्य | योनि | गण | नाड़ी | युंजा | तत्व |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शूद्र | मानव | अश्व | राक्षस | आदि | अंत्य | वायु |

SAMPLE

# निरयन ग्रह स्थिति

| ग्रह | राशि | अंश | नक्षत्र | चरण | राशि स्वामी | नक्षत्र स्वामी | उप स्वामी | भाव | अवस्था |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | मिथुन | 25:50:01 | पुनर्वसु | 2 | बुध | गुरु | केतु | 1 | - |
| सूर्य | मिथुन | 02:36:43 | मृगशिरा | 3 | बुध | मंगल | केतु | 1 | बाल |
| चंद्र | कुंभ | 10:13:35 | शतभिषा | 2 | शनि | राहु | गुरु | 9 | कुमार |
| मंगल | सिंह | 17:38:50 | पूर्वा फाल्गुनी | 2 | सूर्य | शुक्र | मंगल | 3 | युवा |
| बुध | वृषभ | 16:02:25 | रोहिणी | 2 | शुक्र | चंद्र | शनि | 12 | युवा |
| गुरु (व) | वृश्चिक | 14:40:06 | अनुराधा | 4 | मंगल | शनि | राहु | 6 | युवा |
| शुक्र | वृषभ | 15:13:44 | रोहिणी | 2 | शुक्र | चंद्र | गुरु | 12 | युवा |
| शनि | मीन | 00:40:37 | पूर्वा भाद्रपद | 4 | गुरु | गुरु | मंगल | 10 | मृत |
| राहु (व) | तुला | 09:04:01 | स्वाति | 1 | शुक्र | राहु | गुरु | 5 | कुमार |
| केतु (व) | मेष | 09:04:01 | अश्विनी | 3 | मंगल | केतु | गुरु | 11 | कुमार |
| यूरेनस (व) | मकर | 05:56:35 | उत्तराषाढ़ा | 3 | शनि | सूर्य | बुध | 8 | मृत |
| नेप्च्यून (व) | मकर | 01:06:49 | उत्तराषाढ़ा | 2 | शनि | सूर्य | राहु | 8 | मृत |
| प्लूटो (व) | वृश्चिक | 04:40:32 | अनुराधा | 1 | मंगल | शनि | शनि | 6 | मृत |
| मांदी | वृश्चिक | 09:57:47 | अनुराधा | 2 | मंगल | शनि | शुक्र | 6 | - |
| भाग्यबिंदु | मीन | 03:26:53 | उत्तरा भाद्रपद | 1 | गुरु | शनि | शनि | 10 | - |

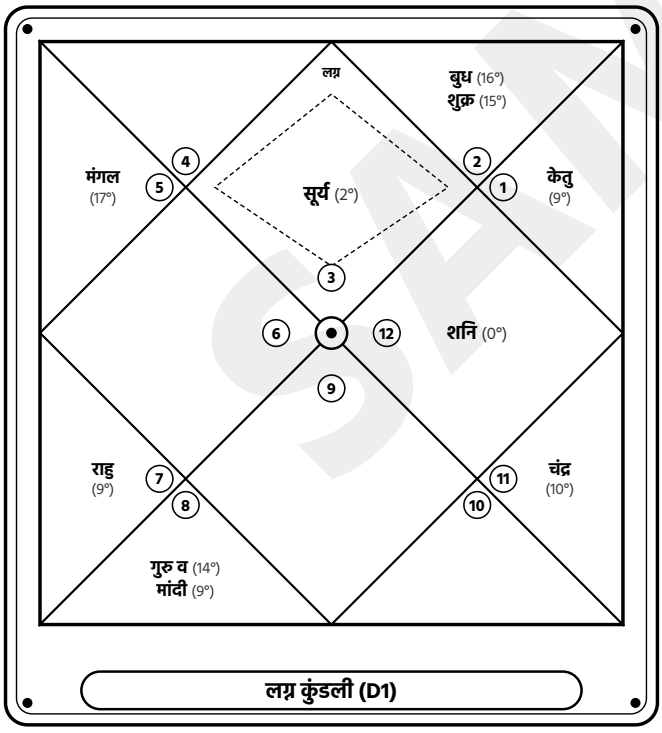

लग्न कुंडली (D1)

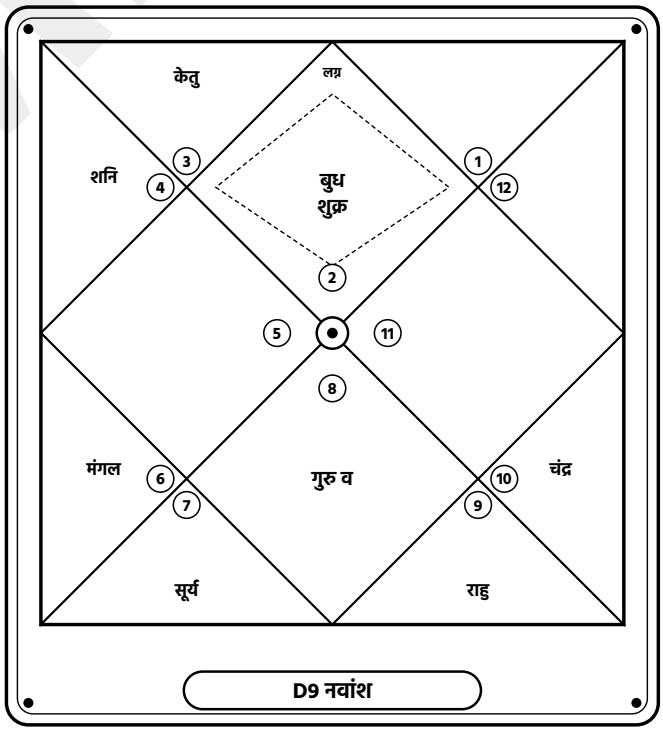

D9 नवांश

## इस कुंडली में दोष:

चंद्र से मांगलिक दोष है (इसे सामान्यतः हल्का माना जाता है): मंगल आपके चंद्र से भाव 7 में है।

इनकी व्याख्या, उपायों सहित, आगे के पृष्ठों में दी गई है।

SAMPLE

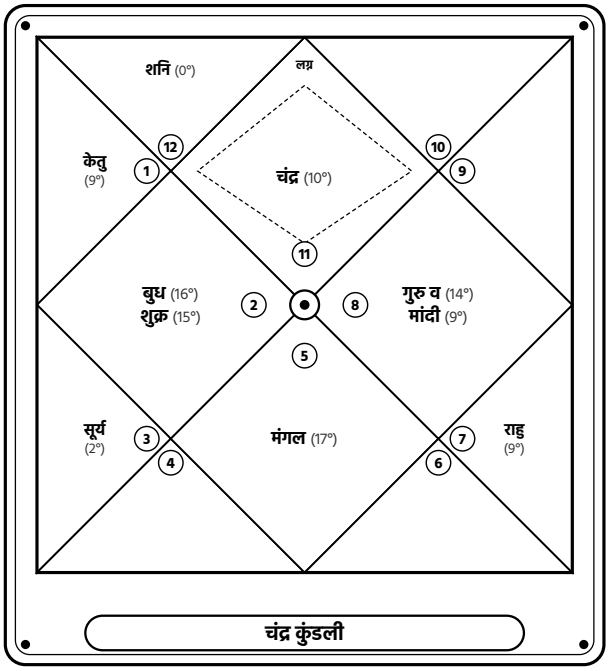


**वर्गोत्तम ग्रह:** बुध, गुरु, शुक्र

SAMPLE

# भाव चलित और के.पी. भाव-संधि

| भाव | चलित आरंभ | चलित मध्य | के.पी. संधि | राशि स्वामी | नक्षत्र स्वामी | उप स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन 09:59:59 | मिथुन 25:50:01 | मिथुन 25:50:01 | बुध | गुरु | केतु |
| 2 | कर्क 09:59:59 | कर्क 24:09:56 | कर्क 20:58:34 | चंद्र | बुध | शुक्र |
| 3 | सिंह 08:19:53 | सिंह 22:29:51 | सिंह 19:05:01 | सूर्य | शुक्र | राहु |
| 4 | कन्या 06:39:48 | कन्या 20:49:45 | कन्या 20:49:45 | बुध | चंद्र | शुक्र |
| 5 | तुला 06:39:48 | तुला 22:29:51 | तुला 24:06:36 | शुक्र | गुरु | बुध |
| 6 | वृश्चिक 08:19:53 | वृश्चिक 24:09:56 | वृश्चिक 26:01:27 | मंगल | बुध | राहु |
| 7 | धनु 09:59:59 | धनु 25:50:01 | धनु 25:50:01 | गुरु | शुक्र | बुध |
| 8 | मकर 09:59:59 | मकर 24:09:56 | मकर 20:58:34 | शनि | चंद्र | शुक्र |
| 9 | कुंभ 08:19:53 | कुंभ 22:29:51 | कुंभ 19:05:01 | शनि | राहु | चंद्र |
| 10 | मीन 06:39:48 | मीन 20:49:45 | मीन 20:49:45 | गुरु | बुध | शुक्र |
| 11 | मेष 06:39:48 | मेष 22:29:51 | मेष 24:06:36 | मंगल | शुक्र | बुध |
| 12 | वृषभ 08:19:53 | वृषभ 24:09:56 | वृषभ 26:01:27 | शुक्र | मंगल | राहु |

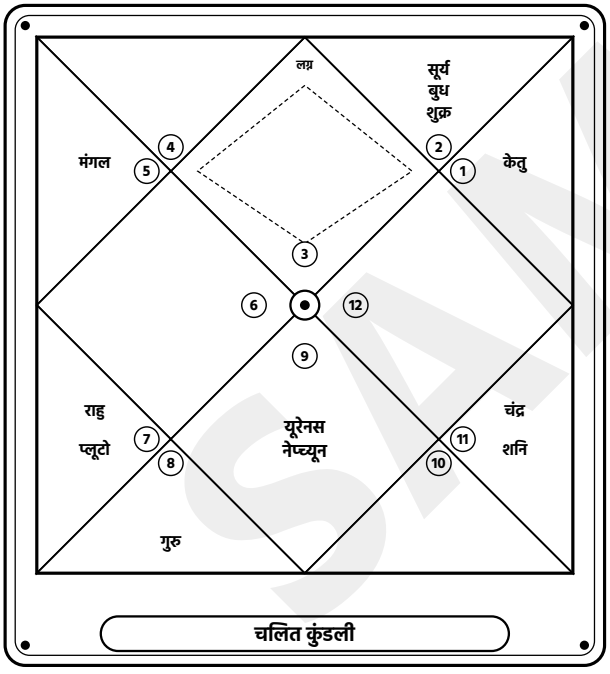

चलित कुंडली

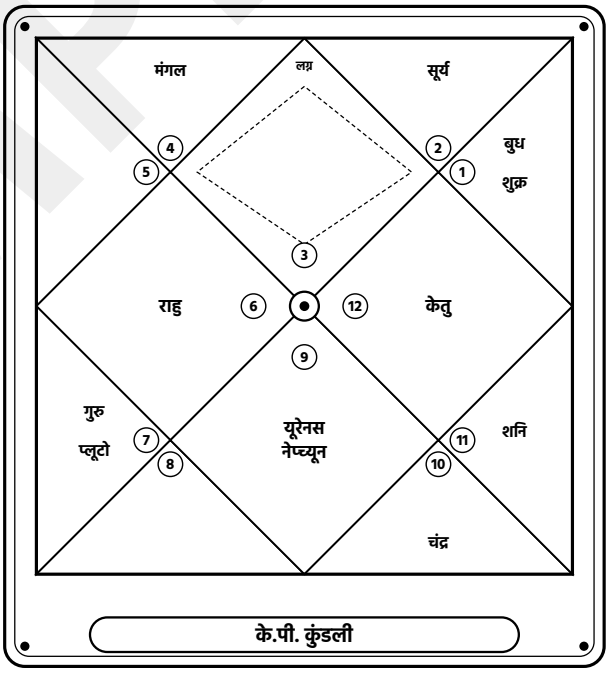

के.पी. कुंडली

SAMPLE

# षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (1/4)

हर वर्ग कुंडली जीवन के किसी एक क्षेत्र को अधिक बारीकी से देखती है। D1 मुख्य जन्म कुंडली है; विवाह और भीतरी बल के लिए D9 (नवांश) और करियर के लिए D10 (दशमांश) देखी जाती है।

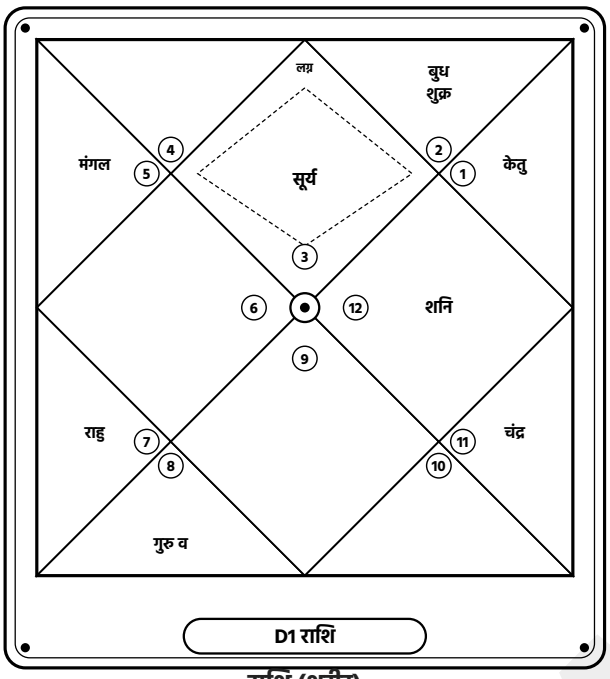


**राशि (शरीर)**

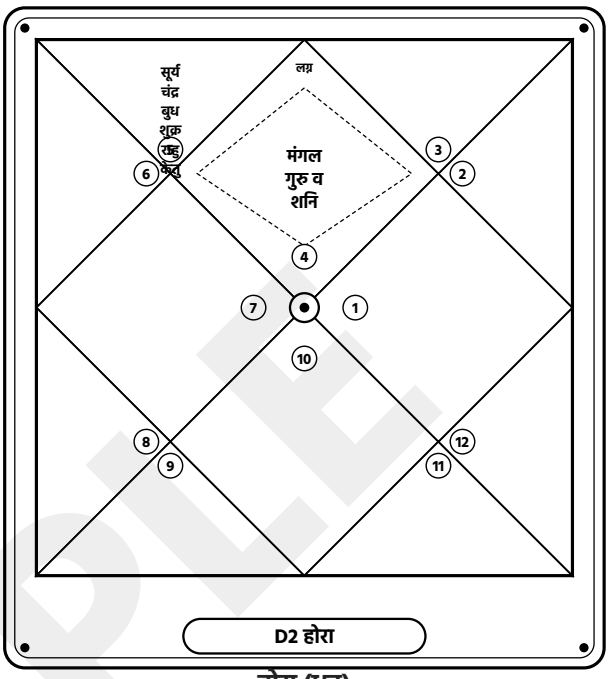


**होरा (धन)**

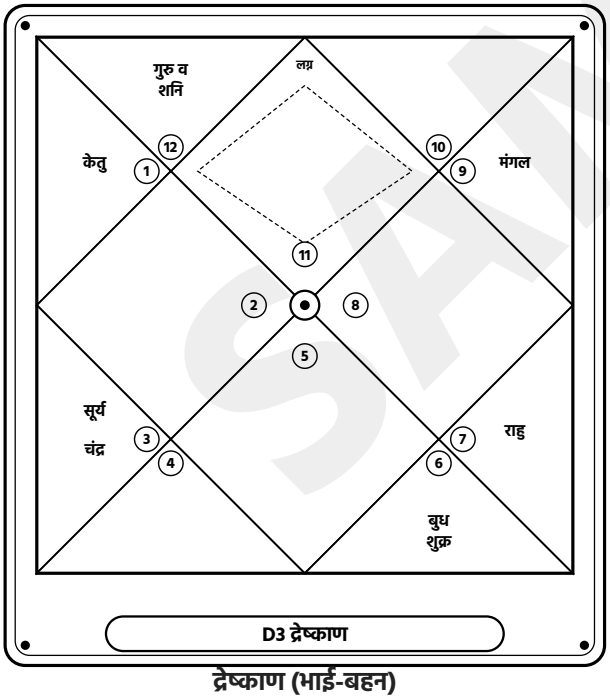


**द्रेष्काण (भाई-बहन)**

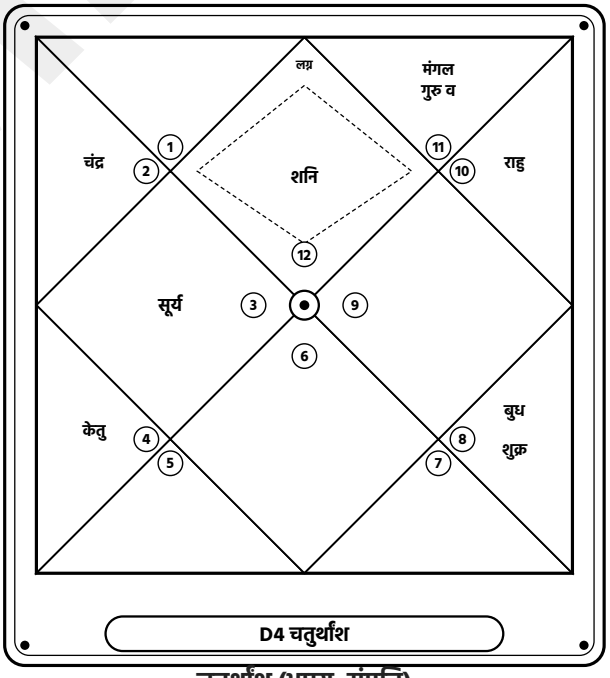


**चतुर्थांश (भाग्य, संपत्ति)**

SAMPLE

# षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (2/4)

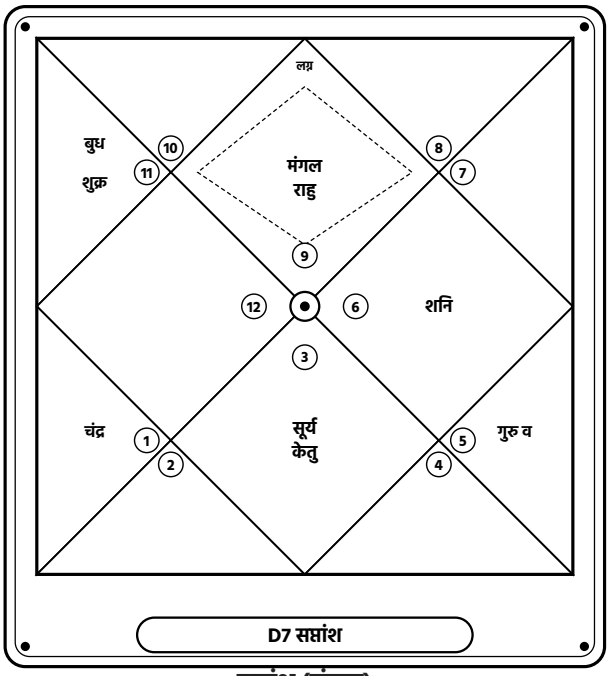


सप्तांश (संतान)

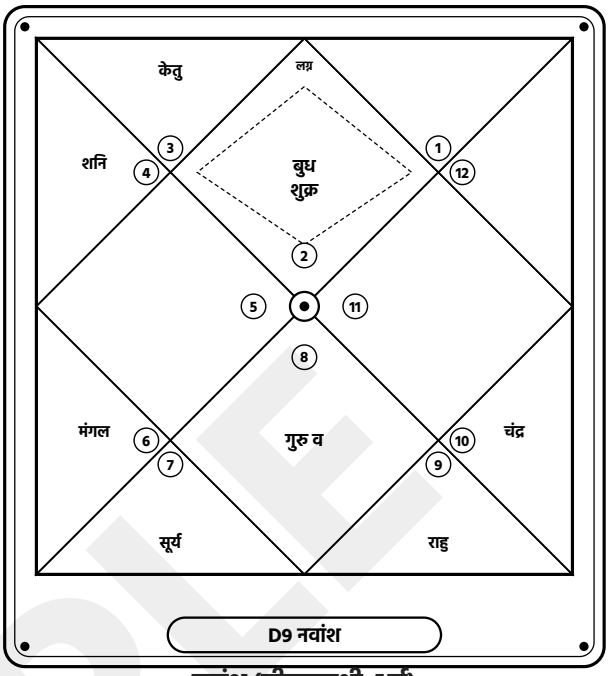


नवांश (जीवनसाथी, धर्म)

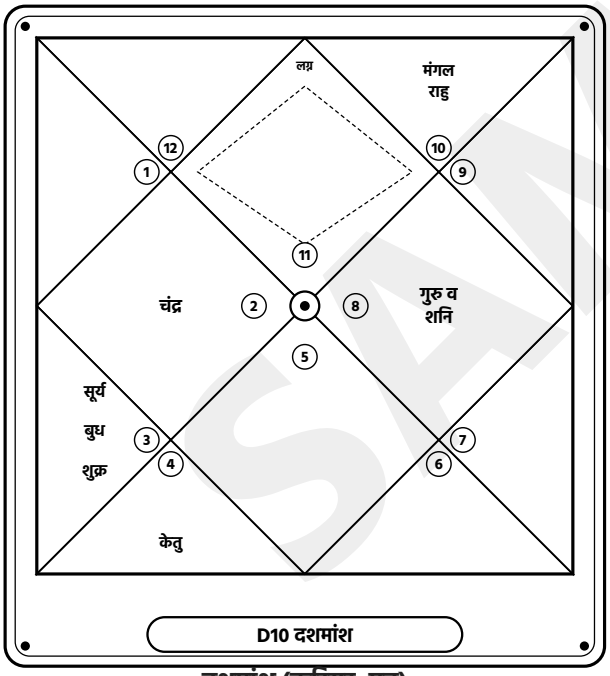


दशमांश (करियर, पद)

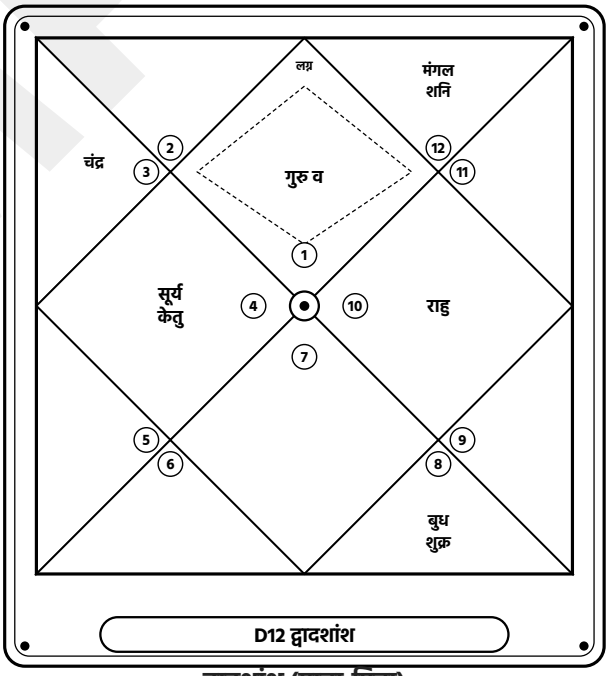


द्वादशांश (माता-पिता)

SAMPLE

# षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (3/4)

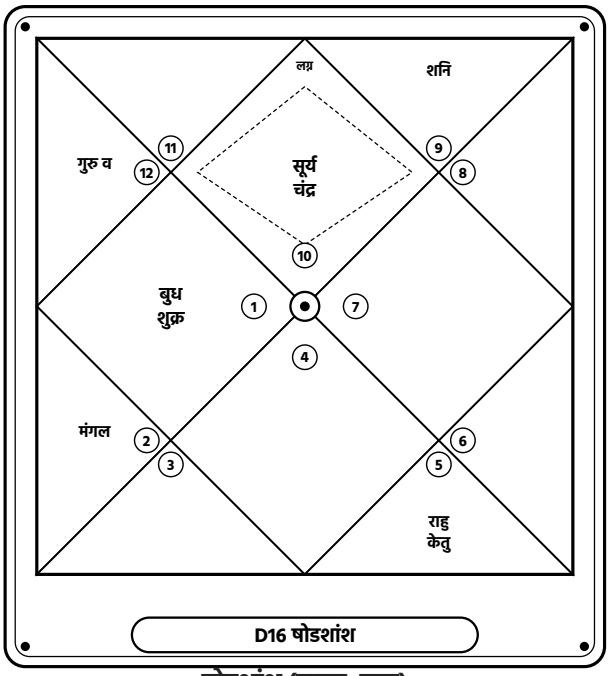


षोडशांश (वाहन, सुख)

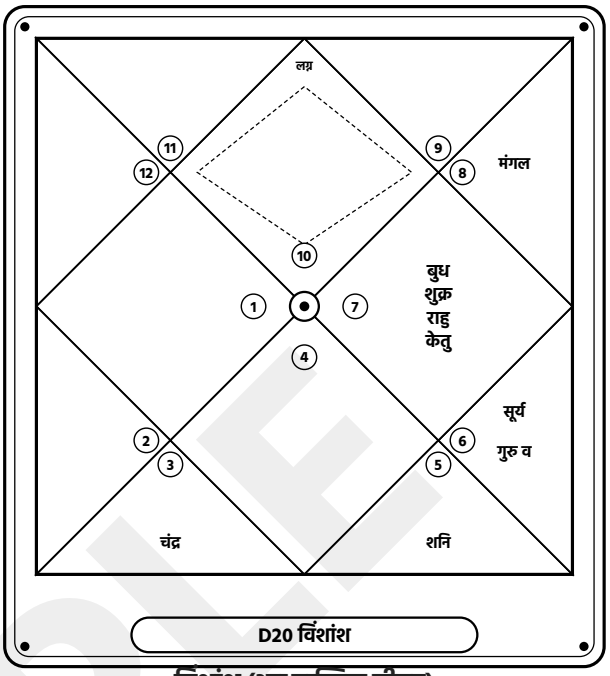


विंशांश (आध्यात्मिक जीवन)

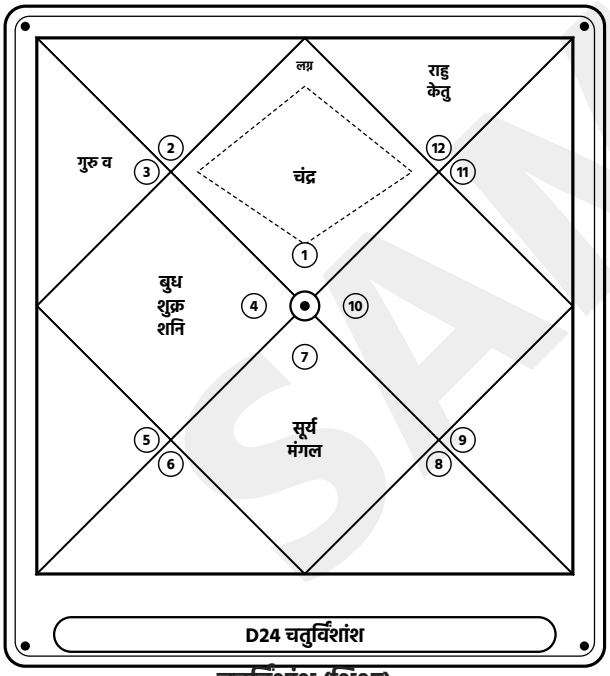


चतुर्विंशांश (शिक्षा)

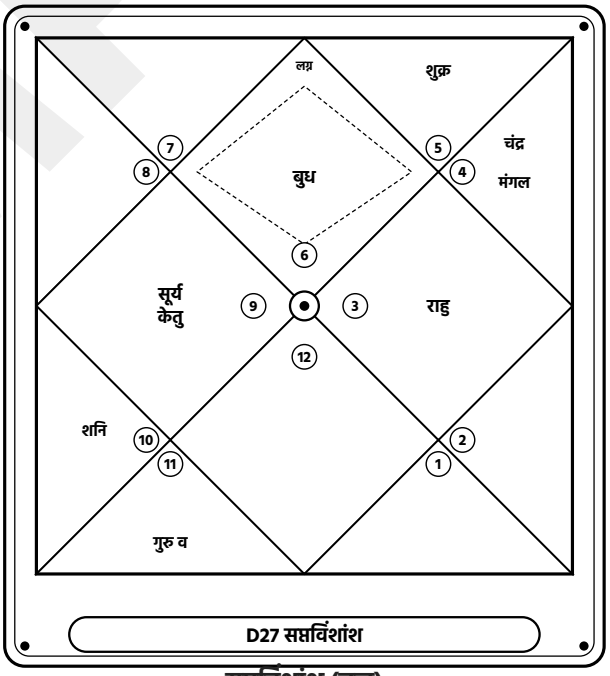


सप्तविंशांश (बल)

SAMPLE

# षोडश वर्ग — सोलह वर्ग कुंडलियाँ (4/4)

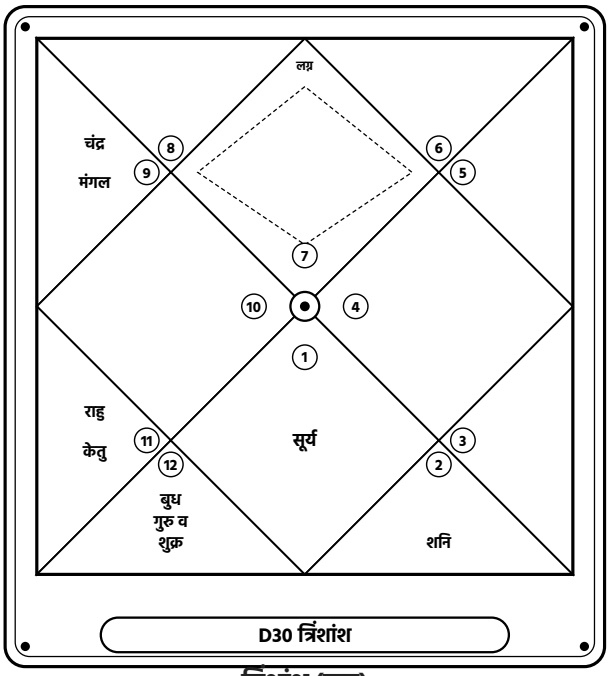


त्रिंशांश (कष्ट)

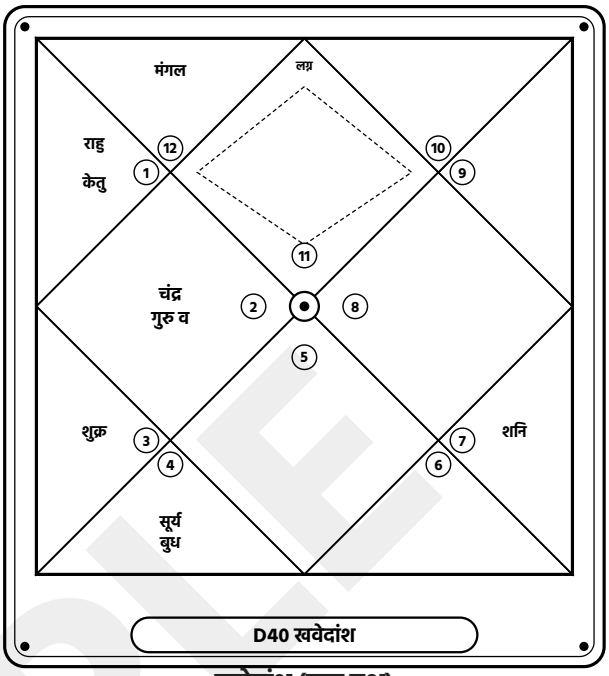


खवेदांश (मातृ पक्ष)

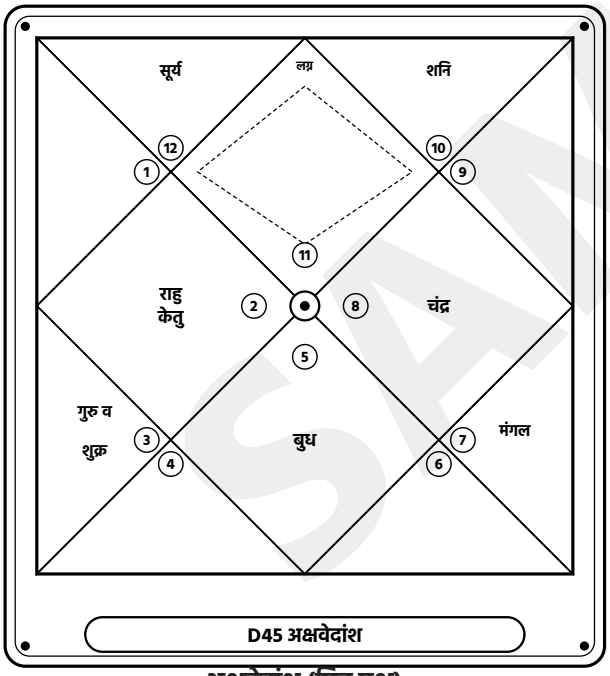


अक्षवेदांश (पितृ पक्ष)

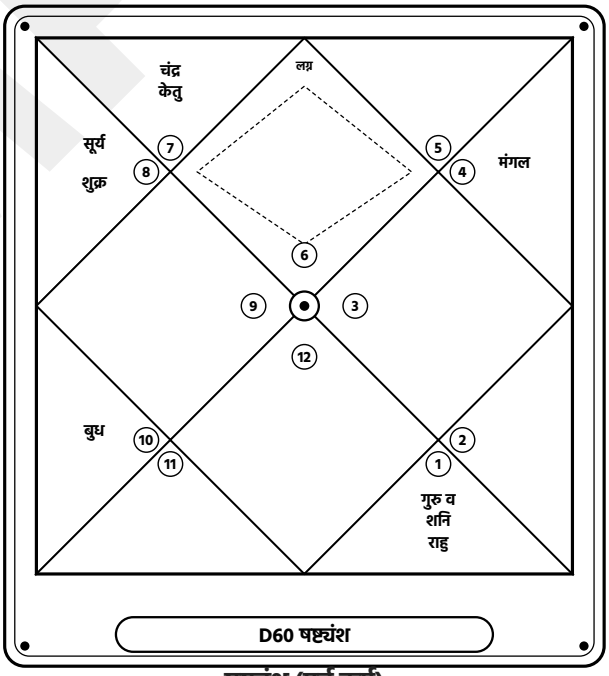


षष्ट्यंश (पूर्व कर्म)

SAMPLE

## सोलह वर्ग कुंडलियाँ आपको क्या बताती हैं

जो ग्रह कई वर्ग कुंडलियों में अपनी या उच्च राशि में आता है, वह भरोसेमंद होता है: वह जिन बातों का कारक है, उनके फल जीवन के कई क्षेत्रों में स्थिर मिलते हैं। जो ग्रह अक्सर नीच राशि में आता है, उन क्षेत्रों में उसे अधिक धैर्य और सहारे की आवश्यकता होती है।

| कुंडली | इसमें लग्न | स्व / उच्च राशि | नीच राशि |
|---|---|---|---|
| D1 राशि | मिथुन | शुक्र | – |
| D2 होरा | कर्क | सूर्य, गुरु | मंगल |
| D3 द्रेष्काण | कुंभ | बुध, गुरु | शुक्र |
| D4 चतुर्थांश | मीन | चंद्र | – |
| D7 सप्तांश | धनु | – | – |
| D9 नवांश | वृषभ | शुक्र | सूर्य |
| D10 दशमांश | कुंभ | चंद्र, मंगल, बुध | – |
| D12 द्वादशांश | मेष | – | – |
| D16 षोडशांश | मकर | गुरु | – |
| D20 विंशांश | मकर | मंगल, शुक्र | – |
| D24 चतुर्विंशांश | मेष | – | सूर्य |
| D27 सप्तविंशांश | कन्या | चंद्र, बुध, शनि | मंगल |
| D30 त्रिंशांश | तुला | सूर्य, गुरु, शुक्र | बुध |
| D40 खवेदांश | कुंभ | चंद्र, शनि | – |
| D45 अक्षवेदांश | कुंभ | शनि | चंद्र |
| D60 षष्ट्यंश | कन्या | – | मंगल, शनि |

| ग्रह | स्व / उच्च राशि में (16 में से) | नीच राशि में (16 में से) |
|---|---|---|
| **सूर्य** | 2 | 2 |
| **चंद्र** | 4 | 1 |
| **मंगल** | 2 | 3 |
| **बुध** | 3 | 1 |
| **गुरु** | 4 | 0 |
| **शुक्र** | 4 | 1 |
| **शनि** | 3 | 1 |

चंद्र, गुरु, शुक्र सबसे अधिक वर्ग कुंडलियों (16 में से 4) में अपनी या उच्च राशि में है, इसलिए यह जिन बातों का स्वामी है उन्हें जीवन के कई क्षेत्रों में सहारा मिलता है।

मंगल 16 में से 3 कुंडलियों में नीच राशि में है। इसकी बातों में धैर्य, लगातार प्रयास और इस रिपोर्ट में दिए उपायों की आवश्यकता है।

वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि, जिससे अतिरिक्त बल मिलता है): बुध, गुरु, शुक्र।

SAMPLE

# विंशोत्तरी अंतर्दशा

भोग्य दशा : राहु – 13 वर्ष, 2 माह, 10 दिन

### राहु (18)
18/06/1995 – 27/08/2008

| | | | |
|---|---|---|---|
| – | | | |
| S+ | गुरु | 03/10/1995 | 0 |
| S* | शनि | 09/08/1998 | 3 |
| * | बुध | 26/02/2001 | 5 |
| s- | केतु | 16/03/2002 | 6 |
| * | शुक्र | 16/03/2005 | 9 |
| -- | सूर्य | 08/02/2006 | 10 |
| -- | चंद्र | 10/08/2007 | 12 |
| * | मंगल | 27/08/2008 | 13 |

### गुरु (16)
27/08/2008 – 27/08/2024

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | गुरु | 15/10/2010 | 15 |
| - | शनि | 28/04/2013 | 17 |
| -- | बुध | 04/08/2015 | 20 |
| - | केतु | 09/07/2016 | 21 |
| -- | शुक्र | 11/03/2019 | 23 |
| * | सूर्य | 28/12/2019 | 24 |
| S++ | चंद्र | 28/04/2021 | 25 |
| S++ | मंगल | 04/04/2022 | 26 |
| S+ | राहु | 27/08/2024 | 29 |

### शनि (19)
27/08/2024 – 28/08/2043

| | | | |
|---|---|---|---|
| S | शनि | 31/08/2027 | 32 |
| ++ | बुध | 10/05/2030 | 34 |
| s++ | केतु | 19/06/2031 | 36 |
| ++ | शुक्र | 19/08/2034 | 39 |
| * | सूर्य | 01/08/2035 | 40 |
| * | चंद्र | 01/03/2037 | 41 |
| -- | मंगल | 10/04/2038 | 42 |
| s* | राहु | 14/02/2041 | 45 |
| - | गुरु | 28/08/2043 | 48 |

### बुध (17)
28/08/2043 – 27/08/2060

| | | | |
|---|---|---|---|
| | बुध | 24/01/2046 | 50 |
| + | केतु | 21/01/2047 | 51 |
| * | शुक्र | 21/11/2049 | 54 |
| S++ | सूर्य | 27/09/2050 | 55 |
| S* | चंद्र | 27/02/2052 | 56 |
| S+ | मंगल | 23/02/2053 | 57 |
| S* | राहु | 12/09/2055 | 60 |
| S- | गुरु | 18/12/2057 | 62 |
| + | शनि | 27/08/2060 | 65 |

### केतु (7)
27/08/2060 – 28/08/2067

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | केतु | 24/01/2061 | 65 |
| ++ | शुक्र | 26/03/2062 | 66 |
| * | सूर्य | 01/08/2062 | 67 |
| * | चंद्र | 02/03/2063 | 67 |
| * | मंगल | 29/07/2063 | 68 |
| - | राहु | 15/08/2064 | 69 |
| - | गुरु | 22/07/2065 | 70 |
| ++ | शनि | 31/08/2066 | 71 |
| + | बुध | 28/08/2067 | 72 |

### शुक्र (20)
28/08/2067 – 28/08/2087

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | शुक्र | 28/12/2070 | 75 |
| * | सूर्य | 28/12/2071 | 76 |
| * | चंद्र | 28/08/2073 | 78 |
| + | मंगल | 28/10/2074 | 79 |
| * | राहु | 28/10/2077 | 82 |
| S- | गुरु | 28/06/2080 | 85 |
| S++ | शनि | 28/08/2083 | 88 |
| S* | बुध | 28/06/2086 | 91 |
| S++ | केतु | 28/08/2087 | 92 |

### सूर्य (6)
28/08/2087 – 28/08/2093

| | | | |
|---|---|---|---|
| | सूर्य | 16/12/2087 | 92 |
| * | चंद्र | 16/06/2088 | 92 |
| s++ | मंगल | 21/10/2088 | 93 |
| -- | राहु | 15/09/2089 | 94 |
| s* | गुरु | 04/07/2090 | 95 |
| s* | शनि | 16/06/2091 | 95 |
| + | बुध | 22/04/2092 | 96 |
| * | केतु | 28/08/2092 | 97 |
| * | शुक्र | 28/08/2093 | 98 |

### चंद्र (10)
28/08/2093 – 29/08/2103

| | | | |
|---|---|---|---|
| | चंद्र | 28/06/2094 | 99 |
| - | मंगल | 27/01/2095 | 99 |
| -- | राहु | 28/07/2096 | 101 |
| + | गुरु | 27/11/2097 | 102 |
| s+ | शनि | 29/06/2099 | 104 |
| ++ | बुध | 28/11/2100 | 105 |
| * | केतु | 29/06/2101 | 106 |
| + | शुक्र | 28/02/2103 | 107 |
| * | सूर्य | 29/08/2103 | 108 |

### मंगल (7)
29/08/2103 – 29/08/2110

| | | | |
|---|---|---|---|
| | मंगल | 26/01/2104 | 108 |
| * | राहु | 12/02/2105 | 109 |
| ++ | गुरु | 19/01/2106 | 110 |
| - | शनि | 28/02/2107 | 111 |
| * | बुध | 25/02/2108 | 112 |
| S* | केतु | 23/07/2108 | 113 |
| S+ | शुक्र | 22/09/2109 | 114 |
| S++ | सूर्य | 28/01/2110 | 114 |
| S* | चंद्र | 29/08/2110 | 115 |

**टिप्पणी:** दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

# अष्टोत्तरी अंतर्दशा

भोग्य दशा : गुरु – 10 वर्ष, 11 माह, 21 दिन

**गुरु** (19)
18/06/1995 – 09/06/2006

| | | | |
|---|---|---|---|
| – | | | |
| – | | | |
| S-- | **शुक्र** | 01/08/1996 | 1 |
| S* | **सूर्य** | 22/08/1997 | 2 |
| ++ | **चंद्र** | 12/04/2000 | 4 |
| s++ | **मंगल** | 08/09/2001 | 6 |
| s-- | **बुध** | 04/09/2004 | 9 |
| - | **शनि** | 09/06/2006 | 10 |

**राहु** (12)
09/06/2006 – 09/06/2018

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **राहु** | 09/10/2007 | 12 |
| * | **शुक्र** | 07/02/2010 | 14 |
| s-- | **सूर्य** | 09/10/2010 | 15 |
| s-- | **चंद्र** | 08/06/2012 | 16 |
| * | **मंगल** | 29/04/2013 | 17 |
| * | **बुध** | 20/03/2015 | 19 |
| * | **शनि** | 29/04/2016 | 20 |
| + | **गुरु** | 09/06/2018 | 22 |

**शुक्र** (21)
09/06/2018 – 09/06/2039

| | | | |
|---|---|---|---|
| S | **शुक्र** | 09/07/2022 | 27 |
| S* | **सूर्य** | 08/09/2023 | 28 |
| S* | **चंद्र** | 09/08/2026 | 31 |
| S+ | **मंगल** | 28/02/2028 | 32 |
| * | **बुध** | 19/06/2031 | 36 |
| ++ | **शनि** | 30/05/2033 | 37 |
| - | **गुरु** | 07/02/2037 | 41 |
| * | **राहु** | 09/06/2039 | 43 |

**सूर्य** (6)
09/06/2039 – 09/06/2045

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | **सूर्य** | 09/10/2039 | 44 |
| s* | **चंद्र** | 08/08/2040 | 45 |
| s++ | **मंगल** | 18/01/2041 | 45 |
| s+ | **बुध** | 29/12/2041 | 46 |
| * | **शनि** | 20/07/2042 | 47 |
| * | **गुरु** | 09/08/2043 | 48 |
| -- | **राहु** | 09/04/2044 | 48 |
| * | **शुक्र** | 09/06/2045 | 49 |

**चंद्र** (15)
09/06/2045 – 09/06/2060

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **चंद्र** | 10/07/2047 | 52 |
| - | **मंगल** | 19/08/2048 | 53 |
| ++ | **बुध** | 29/12/2050 | 55 |
| S+ | **शनि** | 19/05/2052 | 56 |
| S+ | **गुरु** | 08/01/2055 | 59 |
| S-- | **राहु** | 08/09/2056 | 61 |
| + | **शुक्र** | 09/08/2059 | 64 |
| s* | **सूर्य** | 09/06/2060 | 64 |

**मंगल** (8)
09/06/2060 – 09/06/2068

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | **मंगल** | 11/01/2061 | 65 |
| * | **बुध** | 16/04/2062 | 66 |
| - | **शनि** | 12/01/2063 | 67 |
| ++ | **गुरु** | 09/06/2064 | 68 |
| * | **राहु** | 29/04/2065 | 69 |
| + | **शुक्र** | 19/11/2066 | 71 |
| ++ | **सूर्य** | 30/04/2067 | 71 |
| * | **चंद्र** | 09/06/2068 | 72 |

**बुध** (17)
09/06/2068 – 09/06/2085

| | | | |
|---|---|---|---|
| s | **बुध** | 11/02/2071 | 75 |
| + | **शनि** | 08/09/2072 | 77 |
| - | **गुरु** | 05/09/2075 | 80 |
| * | **राहु** | 26/07/2077 | 82 |
| S* | **शुक्र** | 15/11/2080 | 85 |
| S++ | **सूर्य** | 26/10/2081 | 86 |
| S* | **चंद्र** | 06/03/2084 | 88 |
| S+ | **मंगल** | 09/06/2085 | 89 |

**शनि** (10)
09/06/2085 – 10/06/2095

| | | | |
|---|---|---|---|
| S | **शनि** | 13/05/2086 | 90 |
| - | **गुरु** | 15/02/2088 | 92 |
| s* | **राहु** | 27/03/2089 | 93 |
| s++ | **शुक्र** | 07/03/2091 | 95 |
| * | **सूर्य** | 26/09/2091 | 96 |
| * | **चंद्र** | 14/02/2093 | 97 |
| -- | **मंगल** | 12/11/2093 | 98 |
| ++ | **बुध** | 10/06/2095 | 99 |

**टिप्पणी:** दी गई तिथियाँ समाप्ति तिथियाँ हैं। गणना जन्म तिथि से की गई है।
S = साढ़ेसाती, s = छोटी पनौती (ढैया), ++ = अति मित्र, + = मित्र, * = सम, - = शत्रु, -- = अति शत्रु।

SAMPLE

# शनि साढ़ेसाती और ढैया

आपकी चंद्र राशि **कुंभ** है। साढ़ेसाती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है (लगभग साढ़े सात वर्ष)। ढैया या छोटी पनौती तब चलती है जब शनि आपकी चंद्र राशि से चौथी और आठवीं राशि से गुज़रता है (हर बार लगभग ढाई वर्ष)।

| प्रकार | शनि की राशि | से | तक | पाया | सबसे प्रभावी समय |
|---|---|---|---|---|---|
| साढ़ेसाती | मीन | 02/06/1995 | 10/08/1995 | रजत | |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 10/08/1995 | 16/02/1996 | लौह | |
| साढ़ेसाती | मीन | 16/02/1996 | 17/04/1998 | स्वर्ण | 02/05/1996 – 12/02/1997 |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 07/06/2000 | 23/07/2002 | स्वर्ण | 15/05/2001 – 29/05/2001 |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 08/01/2003 | 07/04/2003 | स्वर्ण | |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 10/09/2009 | 15/11/2011 | ताम्र | 02/12/2009 – 08/09/2010 |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 16/05/2012 | 04/08/2012 | रजत | |
| साढ़ेसाती | मकर | 24/01/2020 | 29/04/2022 | लौह | 14/01/2021 – 30/01/2021 |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 29/04/2022 | 12/07/2022 | रजत | |
| साढ़ेसाती | मकर | 12/07/2022 | 17/01/2023 | स्वर्ण | |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 17/01/2023 | 29/03/2025 | ताम्र | 05/04/2023 – 20/01/2024 |
| साढ़ेसाती | मीन | 29/03/2025 | 03/06/2027 | रजत | 13/03/2026 – 28/03/2026 |
| साढ़ेसाती | मीन | 20/10/2027 | 23/02/2028 | लौह | |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 08/08/2029 | 05/10/2029 | रजत | |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 17/04/2030 | 31/05/2032 | लौह | 28/06/2030 – 04/04/2031 |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 22/10/2038 | 05/04/2039 | स्वर्ण | |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 13/07/2039 | 28/01/2041 | रजत | 04/10/2039 – 21/06/2040 |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 06/02/2041 | 26/09/2041 | ताम्र | |
| साढ़ेसाती | मकर | 06/03/2049 | 10/07/2049 | रजत | |
| साढ़ेसाती | मकर | 04/12/2049 | 25/02/2052 | रजत | 22/02/2050 – 10/12/2050 |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 25/02/2052 | 14/05/2054 | स्वर्ण | 12/02/2053 – 28/02/2053 |
| साढ़ेसाती | मीन | 14/05/2054 | 02/09/2054 | ताम्र | |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 02/09/2054 | 05/02/2055 | ताम्र | |
| साढ़ेसाती | मीन | 05/02/2055 | 07/04/2057 | ताम्र | 22/04/2055 – 31/01/2056 |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 28/05/2059 | 11/07/2061 | ताम्र | 04/05/2060 – 18/05/2060 |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 13/02/2062 | 07/03/2062 | रजत | |
| ढैया (छोटी पनौती) | कन्या | 30/08/2068 | 04/11/2070 | लौह | 15/11/2068 – 28/08/2069 |
| साढ़ेसाती | मकर | 15/01/2079 | 12/04/2081 | लौह | 03/05/2079 – 22/01/2080 |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 12/04/2081 | 03/08/2081 | ताम्र | |
| साढ़ेसाती | मकर | 03/08/2081 | 07/01/2082 | रजत | |
| साढ़ेसाती | कुंभ | 07/01/2082 | 20/03/2084 | रजत | 26/03/2082 – 09/01/2083 |
| साढ़ेसाती | मीन | 20/03/2084 | 21/05/2086 | ताम्र | 04/07/2084 – 19/03/2085 |
| साढ़ेसाती | मीन | 10/11/2086 | 08/02/2087 | स्वर्ण | |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 18/07/2088 | 31/10/2088 | रजत | |

SAMPLE

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 05/04/2089 | 19/09/2090 | लौह | 17/06/2089 – 19/03/2090 |
| ढैया (छोटी पनौती) | वृषभ | 25/10/2090 | 21/05/2091 | ताम्र | |

SAMPLE

## तारा चक्र

| तारा | नक्षत्र | स्वामी |
|---|---|---|
| जन्म | शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति | राहु |
| संपत | पूर्वा भाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा | गुरु |
| विपत | उत्तरा भाद्रपद, पुष्य, अनुराधा | शनि |
| क्षेम | रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा | बुध |
| प्रत्यरि | अश्विनी, मघा, मूल | केतु |
| साधक | भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा | शुक्र |
| वध | कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा | सूर्य |
| मित्र | रोहिणी, हस्त, श्रवण | चंद्र |
| अति-मित्र | मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा | मंगल |

## मंगल दोष

| कहाँ से गिना | मंगल का भाव | मंगल दोष |
|---|---|---|
| लग्न | 3 | नहीं |
| चंद्र | 7 | **हाँ** |
| शुक्र | 4 | **हाँ** |

परंपरा से मंगल दोष तब देखा जाता है जब मंगल भाव 1, 2, 4, 7, 8 या 12 में हो। विवाह से पहले इसे जीवनसाथी की कुंडली से मिलाया जाता है; यदि दोनों कुंडलियों में यह दोष हो, तो इसे संतुलित माना जाता है।

SAMPLE

# लाल किताब

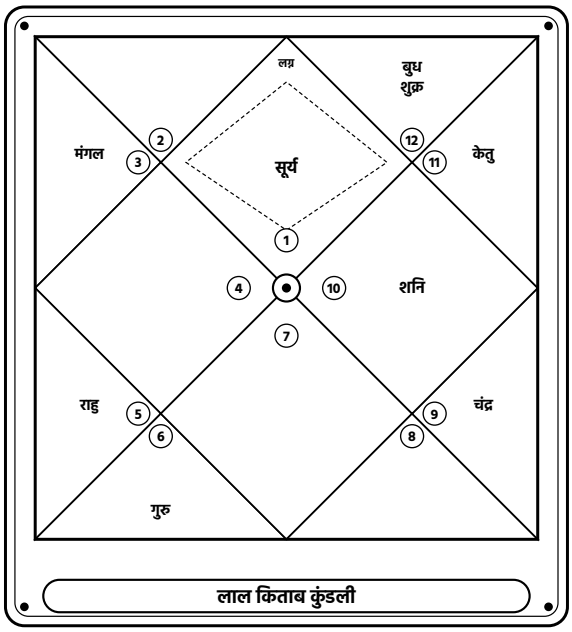


| ग्रह | भाव | पक्का घर | स्थिति | सोया हुआ |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 1 | 1 ✓ | उच्च | हाँ |
| चंद्र | 9 | 4 | - | |
| मंगल | 3 | 3 ✓ | - | |
| बुध | 12 | 7 | नीच | |
| गुरु | 6 | 2 | - | |
| शुक्र | 12 | 7 | उच्च | |
| शनि | 10 | 10 ✓ | - | |
| राहु | 5 | 12 | - | |
| केतु | 11 | 6 | - | |

**सोए हुए भाव:** 2, 4, 8

## लाल किताब 35 वर्षीय दशा

| ग्रह | वर्ष | से | तक | आयु |
|---|---|---|---|---|
| गुरु | 6 | 18/06/1995 | 18/06/2001 | 0–6 |
| सूर्य | 2 | 18/06/2001 | 18/06/2003 | 6–8 |
| चंद्र | 1 | 18/06/2003 | 18/06/2004 | 8–9 |
| शुक्र | 3 | 18/06/2004 | 18/06/2007 | 9–12 |
| मंगल | 6 | 18/06/2007 | 18/06/2013 | 12–18 |
| बुध | 2 | 18/06/2013 | 18/06/2015 | 18–20 |
| शनि | 6 | 18/06/2015 | 18/06/2021 | 20–26 |
| राहु | 6 | 18/06/2021 | 18/06/2027 | 26–32 |
| केतु | 3 | 18/06/2027 | 18/06/2030 | 32–35 |
| गुरु | 6 | 18/06/2030 | 18/06/2036 | 35–41 |
| सूर्य | 2 | 18/06/2036 | 18/06/2038 | 41–43 |
| चंद्र | 1 | 18/06/2038 | 18/06/2039 | 43–44 |
| शुक्र | 3 | 18/06/2039 | 18/06/2042 | 44–47 |
| मंगल | 6 | 18/06/2042 | 18/06/2048 | 47–53 |
| बुध | 2 | 18/06/2048 | 18/06/2050 | 53–55 |
| शनि | 6 | 18/06/2050 | 18/06/2056 | 55–61 |
| राहु | 6 | 18/06/2056 | 18/06/2062 | 61–67 |
| केतु | 3 | 18/06/2062 | 18/06/2065 | 67–70 |

SAMPLE

# अष्टकवर्ग

पाराशर की शास्त्रीय तालिकाओं के अनुसार हर ग्रह द्वारा हर राशि को दिए गए शुभ अंक (बिंदु)। किसी राशि का योग (सर्वाष्टकवर्ग) 0 से 56 तक होता है; 28 औसत है।

| ग्रह | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 8 | 2 | 3 | 4 | 2 | 6 | 3 | 5 | 3 | 3 | 3 | 6 | **48** |
| चंद्र | 4 | 4 | 2 | 4 | 7 | 4 | 2 | 6 | 4 | 4 | 4 | 4 | **49** |
| मंगल | 5 | 1 | 3 | 2 | 4 | 4 | 5 | 4 | 3 | 1 | 1 | 6 | **39** |
| बुध | 6 | 5 | 5 | 4 | 2 | 7 | 4 | 5 | 3 | 4 | 3 | 6 | **54** |
| गुरु | 2 | 4 | 7 | 3 | 6 | 6 | 4 | 3 | 4 | 4 | 7 | 6 | **56** |
| शुक्र | 4 | 4 | 6 | 6 | 3 | 5 | 5 | 1 | 4 | 7 | 3 | 4 | **52** |
| शनि | 6 | 2 | 3 | 4 | 2 | 3 | 4 | 1 | 4 | 4 | 1 | 5 | **39** |
| **सर्वाष्टक** | **35** | **22** | **29** | **27** | **26** | **35** | **27** | **25** | **25** | **27** | **22** | **37** | **337** |

SAMPLE

## शुभ बातें

| | |
|---|---|
| मूलांक | **9** |
| भाग्यांक | **3** |
| मित्र अंक | **1, 3, 6, 9** |
| आयु के शुभ वर्ष | **18, 21, 27, 30, 36, 39, 45, 48** |
| शुभ दिन | **बुधवार, शुक्रवार, शनिवार** |
| शुभ ग्रह | **शुक्र, बुध, शनि** |
| सावधानी वाले ग्रह | **मंगल, गुरु, सूर्य** |
| मित्र राशियाँ | **वृषभ, तुला, मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ** |
| जीवन रत्न (लग्नेश) | **पन्ना** |
| उसी ग्रह के अन्य रत्न | **हरा टूरमलीन, पेरिडॉट** |
| भाग्य रत्न (नवमेश) | **नीलम** |
| विद्या और संतान का रत्न (पंचमेश) | **हीरा** |
| देवता | **विष्णु** |
| धातु | **कांस्य** |
| रंग | **हरा** |
| दिशा | **उत्तर** |
| समय | **सुबह** |
| अनाज | **मूँग** |
| मंत्र | **ॐ बुधाय नमः** |

## अंक ज्योतिष

| | |
|---|---|
| मूलांक (जन्मांक) | **9** (मंगल) |
| भाग्यांक | **3** |
| जीवन पथ अंक | **3** |
| शिखर अंक | **6** (आयु 0–33) **6** (आयु 34–42) **3** (आयु 43–51) **3** (आयु 52–) |
| व्यक्तिगत वर्ष | 2025: **6** 2026: **7** 2027: **8** 2028: **9** 2029: **1** 2030: **2** 2031: **3** 2032: **4** 2033: **5** 2034: **6** 2035: **7** 2036: **8** |

## रत्न मार्गदर्शन

हमारी अपनी अंक-पद्धति: हर ग्रह 50 से शुरू होता है और आपके लग्न के लिए उसकी भूमिका, राशि-बल, भाव और सूर्य से निकटता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जाता है। 55 या अधिक अंक वाले ग्रहों के रत्न पहने जा सकते हैं; बाकी ग्रहों के लिए उनकी वस्तुओं का दान सुझाया जाता है। रत्न पहनने से पहले किसी जानकार से सलाह लें और रत्न की जाँच कर लें।

| ग्रह | रत्न | शुभ % | अशुभ % | सलाह | रुद्राक्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | माणिक (रूबी) | 38 | 62 | **दान करें** | 1 या 12 मुखी |
| चंद्र | मोती | 58 | 42 | **धारण करें** | 2 मुखी |
| मंगल | मूँगा | 40 | 60 | **दान करें** | 3 मुखी |
| बुध | पन्ना | 68 | 32 | **धारण करें** | 4 मुखी |
| गुरु | पुखराज | 40 | 60 | **दान करें** | 5 मुखी |
| शुक्र | हीरा | 75 | 25 | **धारण करें** | 6 मुखी |
| शनि | नीलम | 78 | 22 | **धारण करें** | 7 मुखी |

SAMPLE

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राहु | गोमेद | 66 | 34 | **धारण करें** | 8 मुखी |
| केतु | लहसुनिया (कैट्स आई) | 60 | 40 | **धारण करें** | 9 मुखी |

SAMPLE

# एक नज़र में आपकी कुंडली

| | |
|---|---|
| लग्न / चंद्र राशि / नक्षत्र | **मिथुन / कुंभ / शतभिषा** |
| तत्व संतुलन | वायु 3  पृथ्वी 2  जल 2  अग्नि 1 |
| राशि स्वभाव संतुलन | चर 0  स्थिर 5  द्विस्वभाव 3 |
| सबसे मज़बूत सहायक | **शनि, शुक्र, बुध** |
| सावधानी वाले ग्रह | **मंगल, गुरु, सूर्य** |
| योग | गजकेसरी योग, सुनफा योग, वाशि योग, अमला योग, राजयोग, विमल योग (विपरीत राजयोग) |
| चल रही दशा | **शनि – शनि (31/08/2027 तक)** |

आपकी कुंडली में प्रधान तत्व है वायु तत्व, जो बुद्धि, संवाद और मिलनसारिता देता है। जिन ग्रहों को सबसे मज़बूत सहायक बताया गया है, उनकी दशाएँ, रंग, दिन और रत्न आपको सबसे अधिक सहारा देते हैं।

SAMPLE

# एक नज़र में आपकी कुंडली

यह पृष्ठ आपकी पूरी कुंडली को निष्कर्षों में समेटता है। हर निष्कर्ष भावों, उनके स्वामियों, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रहों, अष्टकवर्ग अंकों, स्वाभाविक कारकों और विभाजित चार्टों को तौलता है। ये निष्कर्ष प्रवृत्तियाँ और ज़रूरी प्रयास बताते हैं; ये गारंटी नहीं हैं, और प्रयास व अच्छे निर्णयों से हर बात सुधर सकती है।

| जीवन का क्षेत्र | निष्कर्ष | अंक (10 में से) | आगे की सबसे अच्छी अवधि |
|---|---|---|---|
| **करियर और व्यवसाय** | बहुत मज़बूत | 8.6 | शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32) |
| **धन और आर्थिक स्थिति** | बहुत मज़बूत | 8.3 | शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32) |
| **विवाह और साझेदारी** | मज़बूत | 6.2 | शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48) |
| **संतान** | मध्यम | 4.9 | शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39) |
| **शिक्षा और विद्या** | मध्यम | 4.6 | बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50) |
| **स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति** | प्रयास ज़रूरी | 3.7 | बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50) |
| **घर, संपत्ति और वाहन** | मज़बूत | 6.7 | बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50) |
| **यात्रा और विदेश से संबंध** | प्रबल संकेत | 7.8 | बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54) |
| **आध्यात्मिक जीवन** | मौजूद | 4.6 | शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32) |

आपकी कुंडली करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, घर, संपत्ति और वाहन के लिए सबसे मज़बूत है। जिन क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रयास और धैर्य चाहिए वे हैं शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति।

## आपकी मुख्य शक्तियाँ

- आपकी कुंडली में राजयोग है: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं। जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।
- आपके लग्न के स्वामी बुध बलवान हैं (मित्र राशि, भाव 12), जो स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सफलता का ठोस आधार देता है।
- आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है। चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।
- आपकी कुंडली में अमला योग है: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है। लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।

## किस पर ध्यान चाहिए

- आपके लग्न के स्वामी बुध कठिन भाव 12 में हैं, इसलिए स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की रक्षा करनी होगी; नियमित आदतें और पर्याप्त आराम मदद करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।
- भाव 12 (खर्च, विदेश) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।

## आपका सबसे बलवान ग्रह

शनि आपकी कुंडली का सबसे बलवान ग्रह है (सम राशि, भाव 10, 100 में से 78)। इसकी अपनी दशा (27/08/2024 से 28/08/2043 तक) और उससे जुड़ी अंतर्दशाएँ आपके सबसे उपयोगी और सहायक समय हैं।

## जो अवधि अभी चल रही है

शनि – शनि 31/08/2027 तक। कुल स्वर: शुभ। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और

SAMPLE

व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

## अगले 8 वर्षों की मुख्य अवधियाँ

| अवधि | तिथियाँ | आयु | स्वर | मुख्य केंद्र |
|---|---|---|---|---|
| शनि – शनि | 22/11/2026 – 31/08/2027 | 31–32 | शुभ | आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय |
| शनि – बुध | 31/08/2027 – 10/05/2030 | 32–34 | शुभ | यात्रा और विदेश से संबंध, आध्यात्मिक जीवन |
| शनि – केतु | 10/05/2030 – 19/06/2031 | 34–36 | शुभ | आध्यात्मिक जीवन |
| शनि – शुक्र | 19/06/2031 – 19/08/2034 | 36–39 | शुभ | आध्यात्मिक जीवन, संतान |
| शनि – सूर्य | 19/08/2034 – 01/08/2035 | 39–40 | अधिकतर अनुकूल | करियर और व्यवसाय, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति |

SAMPLE

# आपकी जीवन-कथा

यह अध्याय आपकी पूरी कुंडली को एक कहानी की तरह पढ़ता है: आप कौन हैं, आपका जीवन चरण-दर-चरण कैसे खुलता है, जीवन के बड़े विषय और मोड़, और जीवन आपसे क्या माँगता है। यह इस रिपोर्ट की बाकी गणनाओं पर ही आधारित है और सरल शब्दों में लिखा गया है। कुंडली प्रवृत्तियाँ दिखाती है, तय घटनाएँ नहीं: आपका प्रयास, चरित्र और निर्णय हमेशा मायने रखते हैं।

## आप कौन हैं

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ और आपका चंद्र कुंभ राशि में, शतभिषा नक्षत्र में है।

आपके लग्न के स्वामी बुध भाव 12 में बैठे हैं। बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

आपका चंद्र, यानी मन, भाव 9 में बैठा है। नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

मिथुन वायु तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जिसका स्वामी बुध है। आप जिज्ञासु, हाज़िरजवाब और बातूनी हैं, और नई चीज़ें आसानी से सीखते हैं। आपको पढ़ना, यात्रा, बातचीत और विविधता पसंद है, और आप प्रायः किसी प्रश्न के दोनों पहलू देख पाते हैं। इसका दूसरा पहलू बेचैनी है: एक साथ बहुत सी रुचियाँ आपकी ऊर्जा बिखेर सकती हैं, और आप आसपास के लोगों की अपेक्षा से अधिक बार अपना मन बदल सकते हैं।

आपकी कुंडली का सबसे बलवान ग्रह शनि है; इसके गुण (कर्म, अनुशासन, ज़िम्मेदारी और विलंब) आपकी स्वाभाविक प्रतिभाएँ हैं। जिस ग्रह के लिए सबसे अधिक प्रयास चाहिए वह सूर्य है; इसके विषय (आत्मविश्वास, पिता, अधिकार और मान-सम्मान) वहाँ हैं जहाँ जीवन आपसे अधिक मेहनत और धैर्य माँगता है।

### आपकी कुंडली के वरदान

- आपकी कुंडली में राजयोग है: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं। जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।
- आपके लग्न के स्वामी बुध बलवान हैं (मित्र राशि, भाव 12), जो स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सफलता का ठोस आधार देता है।
- आपकी कुंडली में गजकेसरी योग है: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है। चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।

### किस पर ध्यान चाहिए

- आपके लग्न के स्वामी बुध कठिन भाव 12 में हैं, इसलिए स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की रक्षा करनी होगी; नियमित आदतें और पर्याप्त आराम मदद करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।
- भाव 12 (खर्च, विदेश) में अष्टकवर्ग अंक कम हैं, इसलिए उसके विषयों का आधार हल्का है और अतिरिक्त ध्यान चाहिए।

## आयु के अनुसार आपका जीवन

जीवन विंशोत्तरी पद्धति की मुख्य दशाओं (महादशाओं) से होकर चलता है। नीचे हर चरण में दिखाया गया है कि वह किन आयु-वर्षों को घेरता है, रोज़मर्रा के जीवन में क्या सामने आता है, और उसके भीतर सबसे अच्छी तथा सबसे कठिन उप-दशाएँ कौन-सी हैं।

SAMPLE

### आयु 0 से 13: राहु महादशा (18/06/1995 से 27/08/2008 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 5 सामने आता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ)।

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान के बारे में खुशी, प्रगति और अच्छी खबर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: अच्छी एकाग्रता और पढ़ाई व परीक्षा में सफलता। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 0–3), बुध (आयु 3–5)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 9–10), मंगल (आयु 12–13)।

### आयु 13 से 29: गुरु महादशा (27/08/2008 से 27/08/2024 तक)

इस चरण का स्वर मिश्रित है। इस चरण में भाव 6 सामने आता है। भाव 7 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (मिश्रित), विवाह और साझेदारी (मिश्रित), धन और आर्थिक स्थिति (मिश्रित)।

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 15–17), बुध (आयु 17–20)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 23–24), मंगल (आयु 25–26)।

### आयु 29 से 48: शनि महादशा (27/08/2024 से 28/08/2043 तक) (अभी चल रही है)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 10 सामने आता है। भाव 8 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: उन्नति, पहचान और काम में एक कदम आगे बढ़ना। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: व्यापार का विस्तार और बाज़ार में बेहतर नाम। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 29–32), शुक्र (आयु 36–39)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 39–40), मंगल (आयु 41–42)।

### आयु 48 से 65: बुध महादशा (28/08/2043 से 27/08/2060 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 12 सामने आता है। भाव 1 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: शिक्षा और विद्या (शुभ), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (शुभ), घर, संपत्ति और वाहन (शुभ)।

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है।

SAMPLE

विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: बुध (आयु 48–50), शुक्र (आयु 51–54)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 54–55), मंगल (आयु 56–57)।

### आयु 65 से 72: केतु महादशा (27/08/2060 से 28/08/2067 तक)

इस चरण का स्वर अधिकतर अनुकूल है। इस चरण में भाव 11 सामने आता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (अधिकतर अनुकूल)।

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 70–71), बुध (आयु 71–72)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 66–67), मंगल (आयु 67–68)।

### आयु 72 से 92: शुक्र महादशा (28/08/2067 से 28/08/2087 तक)

इस चरण का स्वर शुभ है। इस चरण में भाव 12 सामने आता है। भाव 5 भी सक्रिय होता है। यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: संतान (शुभ), यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), शिक्षा और विद्या (शुभ)।

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (आयु 85–88), बुध (आयु 88–91)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (आयु 75–76), मंगल (आयु 78–79)।

## आपके जीवन के बड़े विषय

**करियर और व्यवसाय (बहुत मज़बूत).** करियर आपकी कुंडली के बेहतर समर्थित क्षेत्रों में से है: वास्तविक उन्नति, ज़िम्मेदारी और मान-सम्मान की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)।

**धन और आर्थिक स्थिति (बहुत मज़बूत).** धन अच्छी तरह समर्थित है: आपकी कुंडली कमाने और जमा करने की अच्छी क्षमता दिखाती है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32)।

**घर, संपत्ति और वाहन (मज़बूत).** घर, संपत्ति और वाहन अच्छी तरह समर्थित हैं: घर में सुख और संपत्ति में लाभ की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

**शिक्षा और विद्या (मध्यम).** शिक्षा मध्यम रूप से समर्थित है: परिणाम नियमित दिनचर्या और सही विषय पर निर्भर करते हैं। आगे का

SAMPLE

सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

**स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (प्रयास ज़रूरी).** स्वास्थ्य पर सचेत ध्यान चाहिए: नियमित जाँच, आराम और अनुशासित दिनचर्या सामान्य से अधिक मायने रखती है, विशेषकर परीक्षा वाली अवधियों में। आगे का सबसे अच्छा समय: बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

## जीवन के मोड़

गुरु लगभग हर बारह वर्ष में अपनी जन्म राशि में लौटता है: आयु 11 (2006), आयु 23 (2018), आयु 35 (2030), आयु 47 (2042), आयु 58 (2053), आयु 70 (2065), आयु 82 (2077)। ये विकास, शुभकामना और नए अवसरों के समय होते हैं।

शनि लगभग हर उनतीस वर्ष में अपनी जन्म राशि में लौटता है: आयु 1 (1996), आयु 30 (2025), आयु 59 (2054)। ये परिपक्वता, ज़िम्मेदारी और ईमानदार पुनर्मूल्यांकन के समय हैं; जो आप तब बनाते हैं वह टिकता है।

राहु–केतु अक्ष लगभग 19, 37, 56 और 74 वर्ष की आयु में अपनी जन्म-स्थिति पर लौटता है: ये बदलाव, नई दिशाओं और पुराने को छोड़ने के समय हैं।

साढ़ेसाती, यानी आपकी चंद्र राशि पर शनि की लंबी परीक्षा, इन समयों में आती है: आयु 0–2 (02/06/1995 – 17/04/1998); आयु 24–32 (24/01/2020 – 23/02/2028); आयु 53–61 (06/03/2049 – 07/04/2057); आयु 83–88 (15/01/2079 – 20/03/2084)। इसमें धैर्य, लगातार काम और स्वास्थ्य की देखभाल चाहिए, और यह प्रायः आपको अधिक मज़बूत बना देती है।

## आपके सबक और आशीर्वाद

- शनि भाव 10 में है: यहीं जीवन धैर्य, अनुशासन और ज़िम्मेदारी माँगता है, और यहीं स्थिर प्रयास का फल सबसे अधिक मिलता है। दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।
- राहु भाव 5 में है: आप इन विषयों की ओर तीव्र खिंचाव अनुभव करेंगे; इन्हें ईमानदारी से, बिना शॉर्टकट के सँभालने से उन्नति होती है। पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।
- केतु भाव 11 में है: आप इन विषयों से अनासक्त महसूस कर सकते हैं, और समय के साथ आपको इनके बारे में सच्ची समझ मिलती है। ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।
- गुरु भाव 6 में है: आशीर्वाद, मार्गदर्शन और सौभाग्य इन्हीं विषयों के माध्यम से मिलते हैं। छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

## संक्षेप में

आपकी कुंडली करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, घर, संपत्ति और वाहन के लिए सबसे मज़बूत है, और शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति में सबसे अधिक प्रयास तथा धैर्य माँगती है। आप अभी शनि – शनि दशा में हैं, जिसका स्वर शुभ है। अपने बड़े कदम अनुकूल समयों में उठाएँ, कठिन समयों में इस रिपोर्ट में दी गई सरल व्यावहारिक सलाह पर चलें, और याद रखें कि कुंडली प्रवृत्तियाँ दिखाती है जबकि परिणाम आपके प्रयास, चरित्र और प्रार्थना से बनता है।

SAMPLE

# आपका व्यक्तिगत फलादेश

## मिथुन लग्न

### स्वभाव

मिथुन वायु तत्व की द्विस्वभाव राशि है, जिसका स्वामी बुध है। आप जिज्ञासु, हाज़िरजवाब और बातूनी हैं, और नई चीज़ें आसानी से सीखते हैं। आपको पढ़ना, यात्रा, बातचीत और विविधता पसंद है, और आप प्रायः किसी प्रश्न के दोनों पहलू देख पाते हैं। इसका दूसरा पहलू बेचैनी है: एक साथ बहुत सी रुचियाँ आपकी ऊर्जा बिखेर सकती हैं, और आप आसपास के लोगों की अपेक्षा से अधिक बार अपना मन बदल सकते हैं।

### शरीर और स्वास्थ्य

पारंपरिक वर्णन है — लंबा, दुबला और युवा दिखने वाला शरीर, भाव-भरे हाथ और चंचल आँखें। फेफड़े, कंधे, बाँहें, नसें और त्वचा संवेदनशील क्षेत्र हैं। मानसिक अधिक काम, अनियमित नींद और घबराहट परेशानी के सबसे आम कारण हैं, इसलिए आराम, प्राणायाम और शांत दिनचर्या आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

### काम और धन

बुध शब्दों, अंकों और व्यापार में कौशल देता है। लेखन, अध्यापन, पत्रकारिता, मीडिया, बिक्री, मार्केटिंग, संचार, लेखा, कंप्यूटर, छपाई और प्रकाशन, तथा कमीशन पर आधारित व्यवसाय — ये सब आपके अनुकूल हैं। आप एक साथ आय के एक से अधिक स्रोत चला सकते हैं। लिखित रिकॉर्ड रखना और शुरू किया काम पूरा करना आपके बहुत से विचारों को धन में बदलता है।

### संबंध

आप ऐसा साथी चाहते हैं जो ऐसा मित्र भी हो जिससे आप बात कर सकें। सातवाँ भाव धनु है, जिसका स्वामी गुरु है, जो प्रायः सिद्धांतवादी, पढ़ा-लिखा या धार्मिक सोच वाला साथी देता है। एक-दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करना, और ज़रूरत के समय साथी को पूरा ध्यान देना, संबंध को मज़बूत रखता है।

### मार्गदर्शन

लग्नेश बुध घर और मन के चौथे भाव का भी स्वामी है। इस लग्न के लिए शुक्र मज़बूत मित्र है, जबकि छठे और ग्यारहवें भाव का स्वामी मंगल सावधानी माँगता है। उद्देश्य में स्थिरता और नियमित आध्यात्मिक साधना आपकी स्वाभाविक चतुराई को गहराई देते हैं।

## आपकी कुंडली में ध्यान माँगने वाले ग्रह

आपके लग्न के लिए कुछ ग्रह कठिन भावों (तीसरे, छठे, आठवें और बारहवें) के स्वामी हैं। वे "बुरे" ग्रह नहीं हैं: वे केवल मेहनत, देरी या खर्च के रास्ते अपनी सीख देते हैं, और कितनी परेशानी देंगे यह इस पर निर्भर है कि वे कहाँ बैठे हैं और कितने बलवान हैं। यहाँ बताया गया है कि हर एक आपके लिए क्या अर्थ रख सकता है, कब असर दिखाता है, और क्या करना चाहिए।

### मंगल — भाव 6 और 11 के स्वामी

मंगल भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़; आय, लाभ) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल) बने रहते हैं।

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) के स्वामी के रूप में यह ला सकता है: कर्ज़, विवाद, स्वास्थ्य की छोटी परेशानियाँ, प्रतिस्पर्धा और काम या कानूनी मामलों में टकराव। क्या मदद करता है: कर्ज़ और बहस से बचें, स्वास्थ्य की निश्चित दिनचर्या रखें, और विवादों को जल्दी तथा शांति से सुलझाएँ।
- यह भाव 11 (आय, लाभ) का भी स्वामी है, इसलिए इसके कुछ फल सहायक हैं, विशेषकर उन विषयों के लिए।

यह भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में सिंह राशि में बैठा है। यह वृद्धि का भाव, जहाँ मेहनत लाभ में बदलती है, इसलिए समय के साथ

SAMPLE

कठिनाई घटती है है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 40 है।

- इसकी मुख्य दशा (मंगल महादशा) 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; तब इसके विषय सबसे प्रबल होते हैं।
- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।

**क्या करें:** मंगलवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग लाल अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ मंगलाय नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

### गुरु — भाव 7 और 10 के स्वामी

गुरु भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म) बने रहते हैं।

- यह भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का भी स्वामी है, इसलिए इसके कुछ फल सहायक हैं, विशेषकर उन विषयों के लिए।

यह भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में वृश्चिक राशि में बैठा है। यह एक और कठिन भाव; कठिन भाव का स्वामी कठिन भाव में बैठे तो अपनी ही परेशानी घटा देता है, पर वह समस्याओं को अधिक निजी और भीतरी बना सकता है, इसलिए तनाव, स्वास्थ्य और खर्च पर लगातार ध्यान चाहिए है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 40 है।

- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।

**क्या करें:** गुरुवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग पीला अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ गुरवे नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

### सूर्य — भाव 3 के स्वामी

सूर्य भाव 3 (साहस, भाई-बहन) के स्वामी हैं। आपके लग्न के लिए यह उन ग्रहों में है जो सुख से अधिक मेहनत लाते हैं, हालाँकि इनके स्वाभाविक गुण (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति) बने रहते हैं।

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन) के स्वामी के रूप में यह ला सकता है: मेहनत भरे उपक्रम, भाई-बहनों या सहकर्मियों से कुछ खटपट, थकाने वाली छोटी यात्राएँ, और काम पूरा करने के लिए खुद को आगे धकेलने की ज़रूरत। क्या मदद करता है: आवेग में नहीं, योजना बनाकर निर्णय लें, भाई-बहनों और पड़ोसियों से अच्छे संबंध रखें, और कौशल कदम-दर-कदम बनाएँ।

यह भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में मिथुन राशि में बैठा है। यह ऐसा भाव जो बल देता है, कठिनाई को कम करता है और ग्रह के अच्छे पक्ष को सहारा देता है है। आपकी कुंडली में इसका कुल बल 100 में से 38 है।

- इसकी मुख्य दशा (सूर्य महादशा) 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है; तब इसके विषय सबसे प्रबल होते हैं।
- अन्य महादशाओं के भीतर इसकी अंतर्दशाएँ, जब वही विषय सतह पर आते हैं: शनि – सूर्य (19/08/2034 – 01/08/2035)।

**क्या करें:** रविवार को दान और शुभ कर्मों का दिन रखें, रंग लाल, नारंगी अपनाएँ, और श्रद्धा से ॐ सूर्याय नमः का जाप करें। इसका रत्न तब तक न पहनें जब तक ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली न जाँची हो, क्योंकि ऐसे ग्रहों के रत्न उनकी कठिनाई बढ़ा सकते हैं।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राशियों का वर्णन; प्रथम भाव के फल; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — राशियों का स्वभाव; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — लग्न राशि के फल।*

## आपकी चंद्र राशि: कुंभ

कुंभ राशि में चंद्रमा होने से आप मित्रवत, स्वतंत्र और मानवतावादी हैं। आप समाज और विचारों के बारे में सोचते हैं और असामान्य विषयों में रुचि लेते हैं। आप तटस्थ लग सकते हैं, पर आपकी मित्रताएँ सच्ची होती हैं। दिमाग और दिल में संतुलन बनाना आपकी

SAMPLE

सीख है।

*आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — बारह राशियों में चंद्रमा के फल; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — राशियों में चंद्रमा; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — चंद्र राशि के फल।*

## आपका जन्म नक्षत्र: शतभिषा (चरण 2)

स्वामी ग्रह: राहु · देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल के देवता) · प्रतीक: खाली वृत्त

शतभिषा स्वतंत्रता, वैज्ञानिक सोच और उपचार की क्षमता देता है। आप संकोची, सत्यवादी और रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। चिकित्सा, शोध, ज्योतिष, तकनीक और उपचार आपके अनुकूल हैं। एकांत आपको ताज़गी देता है, पर स्वयं को अलग-थलग करने से बचें।

*आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — नक्षत्रों में जन्म के फल; पृथुयशस का होरासार — जन्म नक्षत्र के फल; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — नक्षत्रों के गुण।*

SAMPLE

# आपके भावों में ग्रह

### भाव 1 में सूर्य (मिथुन, सम राशि)

पहले भाव में सूर्य होने से आपमें आत्म-बोध प्रबल होता है, व्यवहार में गरिमा होती है और नेतृत्व करने की इच्छा होती है। लोग आपको नोटिस करते हैं, और आप अपने पैरों पर खड़ा होना पसंद करते हैं। आत्मविश्वास और सम्मान की भावना आपकी शक्ति हैं; अभिमान, तेज़ गुस्सा और आलोचना के प्रति अधीरता वे कमज़ोरियाँ हैं जिन्हें संभालना है। शास्त्र इस स्थिति को अच्छी जीवन-शक्ति के साथ-साथ गरमी से जुड़ी परेशानियों, आँखों पर ज़ोर और कभी-कभी सिरदर्द से भी जोड़ते हैं। ज़िम्मेदारी के पदों पर आप अच्छा करते हैं, और ईमानदारी से काम करने पर सरकार या वरिष्ठों का सहयोग मिलने की संभावना है।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में सूर्य।*

### भाव 9 में चंद्र (कुंभ, सम राशि)

नौवें भाव में चंद्रमा धार्मिक, दयालु और भाग्यशाली स्वभाव देता है। आपको यात्रा, तीर्थ और सीखना अच्छा लगता है, और प्रायः माता या मातृतुल्य व्यक्तियों का सहारा मिलता है। शास्त्र इसे भाग्य और प्रतिष्ठा के लिए अच्छी स्थिति मानते हैं। जीवन के साथ आपकी मान्यताएँ विकसित हो सकती हैं। दान और गुरुजनों का आदर आपके भाग्य को बल देते हैं।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में चंद्रमा।*

### भाव 3 में मंगल (सिंह, मित्र राशि)

तीसरे भाव में मंगल उसकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है। यह असाधारण साहस, पहल और प्रतिस्पर्धियों पर विजय की क्षमता देता है। खेल, सेना, तकनीकी काम, बिक्री या निडर प्रयास माँगने वाले किसी भी क्षेत्र में आप अच्छा कर सकते हैं। शास्त्र पराक्रम और अपने प्रयास से सफलता के लिए इस स्थिति की प्रशंसा करते हैं। भाई-बहनों से संबंध प्रतिस्पर्धी पर रक्षा करने वाले हो सकते हैं।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में मंगल।*

### भाव 12 में बुध (वृषभ, मित्र राशि)

बारहवें भाव में बुध बुद्धि को आध्यात्मिकता, शोध, विदेशी कामकाज या पर्दे के पीछे के काम की ओर मोड़ता है। शास्त्र गलतफ़हमी से होने वाले खर्च की चेतावनी देते हैं और कागज़ी कार्रवाई में सावधानी की सलाह देते हैं। ध्यान अति-सक्रिय मन को शांत करता है। विदेशी व्यापार या एकांत में लेखन फलदायी हो सकता है।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में बुध।*

### भाव 6 में गुरु (वृश्चिक, वक्री, मित्र राशि)

छठे भाव में गुरु समझदारी और न्यायपूर्ण व्यवहार से शत्रुओं पर विजय पाने में मदद करता है, और कानून, चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा और सेवा-कार्य में करियर को सहारा देता है। शास्त्र लिवर, वज़न और शुगर-संतुलन, तथा कर्ज़ के मामले में सावधानी का उल्लेख करते हैं। दूसरों की सेवा से आपको सम्मान मिलता है।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में गुरु।*

### भाव 12 में शुक्र (वृषभ, स्वराशि)

बारहवें भाव में शुक्र को परंपरा से सुख-सुविधा, शय्या-सुख और विलास, यात्रा तथा कलाओं पर खर्च के लिए अच्छा माना जाता है। यह करुणा और आध्यात्मिक आनंद में रुचि भी देता है। शास्त्र बारहवें भाव को ऐसा भाव मानते हैं जहाँ शुक्र असामान्य रूप से अच्छा करता है। खर्च पर नियंत्रण रखें और छिपे भोग-विलास से बचें।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शुक्र।*

SAMPLE

### भाव 10 में शनि (मीन, सम राशि)

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी पर बना प्रभावशाली करियर दे सकता है। उन्नति धीमी हो सकती है, पर पक्की होती है। सरकार, प्रशासन, इंजीनियरिंग, खनन, निर्माण और प्रबंधन आपके अनुकूल हैं। शास्त्र यहाँ शनि को बलवान मानते हैं। ईमानदारी आवश्यक है, क्योंकि शनि ईमानदार काम का फल देता है और शॉर्टकट का दंड।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में शनि।*

### भाव 5 में राहु (तुला, मित्र राशि)

पाँचवें भाव में राहु असामान्य, आविष्कारशील बुद्धि और तकनीक, शोध या लीक से हटकर विषयों में रुचि देता है। शास्त्र संतान और सट्टे के मामले में सावधानी की सलाह देते हैं। पढ़ाई में शॉर्टकट से बचें। मौलिक सोच आपकी शक्ति है।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में राहु।*

### भाव 11 में केतु (मेष, मित्र राशि)

ग्यारहवें भाव में केतु लाभ देता है, प्रायः अप्रत्याशित, और विरक्ति के भाव के साथ इच्छाओं की पूर्ति। शास्त्र इसे अच्छी स्थिति मानते हैं। मित्र कम पर सच्चे हो सकते हैं।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — राहु और केतु के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भावों में ग्रहों के फल; नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि — बारह भावों में केतु।*

SAMPLE

# एक-एक ग्रह

यहाँ हर ग्रह का वर्णन इस आधार पर है कि वह किसका कारक है, कहाँ बैठा है, किन भावों का स्वामी है और किन पर दृष्टि डालता है, किन ग्रहों के साथ है और आपकी कुंडली में उसकी कुल स्थिति कैसी है।

## सूर्य

| | |
|---|---|
| कारक | आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति |
| स्थिति | मिथुन 02:36:43, भाव 1 |
| नक्षत्र | मृगशिरा चरण 3 (स्वामी मंगल) |
| बल (D1 / D9) | सम राशि / तुला में नीच |
| स्वामित्व वाले भाव | 3 |
| साथ में | कोई नहीं |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 3 |
| कुल अंक | 38 / 100 |

सूर्य की दृष्टि भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी देता है। केवल 3 अष्टकवर्ग अंक होने से इसे अपना श्रेष्ठ देने के लिए सहारे की ज़रूरत है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में सूर्य

सूर्य भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

यह मंगल के नक्षत्र में है, जो भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक मंगल के माध्यम से मिलते हैं: भाव 3 और मंगल के स्वामित्व वाले भावों के विषय सूर्य के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

सूर्य आपकी कुंडली में दबाव में है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति) उसे सचेत सहारा चाहिए, और इसकी दशाओं में धैर्य और समझदार योजना ज़रूरी है। इसका कुल बल 100 में से 38 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है।

## चंद्र

| | |
|---|---|
| कारक | मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता |
| स्थिति | कुंभ 10:13:35, भाव 9 |
| नक्षत्र | शतभिषा चरण 2 (स्वामी राहु) |
| बल (D1 / D9) | सम राशि / मकर में सम राशि |
| स्वामित्व वाले भाव | 2 |
| साथ में | कोई नहीं |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 4 |
| कुल अंक | 58 / 100 |

SAMPLE

चंद्र की दृष्टि भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) पर है, जिन्हें यह देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता देता है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में चंद्र

चंद्र भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

यह राहु के नक्षत्र में है, जो भाव 5 (संतान, शिक्षा) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक राहु के माध्यम से मिलते हैं: भाव 5 और राहु के स्वामित्व वाले भावों के विषय चंद्र के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (मंगल) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

चंद्र आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 58 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2093 से 29/08/2103 तक चलती है।

## मंगल

| | |
|---|---|
| कारक | साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल |
| स्थिति | सिंह 17:38:50, भाव 3 |
| नक्षत्र | पूर्वा फाल्गुनी चरण 2 (स्वामी शुक्र) |
| बल (D1 / D9) | मित्र राशि / कन्या में शत्रु राशि |
| स्वामित्व वाले भाव | 6, 11 |
| साथ में | कोई नहीं |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 4 |
| कुल अंक | 40 / 100 |

मंगल की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु), भाव 9 (भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ), भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) पर है, जिन्हें यह ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव देता है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में मंगल

मंगल भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

यह शुक्र के नक्षत्र में है, जो भाव 12 (खर्च, विदेश) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक शुक्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 12 और शुक्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय मंगल के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 9 (भाग्य, पिता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह

SAMPLE

(चंद्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

- भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (शनि) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

मंगल आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 40 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है।

## बुध

| | |
|---|---|
| कारक | बुद्धि, वाणी, व्यापार, शिक्षा और मित्र |
| स्थिति | वृषभ 16:02:25, भाव 12 |
| नक्षत्र | रोहिणी चरण 2 (स्वामी चंद्र) |
| बल (D1 / D9) | मित्र राशि / वृषभ में मित्र राशि — वर्गोत्तम |
| स्वामित्व वाले भाव | 1, 4 |
| साथ में | शुक्र |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 5 |
| कुल अंक | 68 / 100 |

बुध की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु) पर है, जिन्हें यह बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा देता है। शुक्र के साथ होने से यह अपने फल उनके फलों के साथ मिलाकर देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है। 5 अष्टकवर्ग अंकों के साथ यह अपनी राशि में अच्छे बल से काम करता है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में बुध

बुध भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

यह चंद्र के नक्षत्र में है, जो भाव 9 (भाग्य, पिता) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक चंद्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 9 और चंद्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय बुध के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

**इसके साथ बैठे ग्रह:**

- शुक्र के साथ: मोहक वाणी और कलात्मक कौशल, डिज़ाइन, मीडिया और व्यापार के लिए अच्छा।

बुध आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (बुद्धि, वाणी, व्यापार, शिक्षा और मित्र) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 68 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है।

## गुरु

| | |
|---|---|
| कारक | ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म |

SAMPLE

| | |
|---|---|
| स्थिति | वृश्चिक 14:40:06, भाव 6, वक्री |
| नक्षत्र | अनुराधा चरण 4 (स्वामी शनि) |
| बल (D1 / D9) | मित्र राशि / वृश्चिक में मित्र राशि — वर्गोत्तम |
| स्वामित्व वाले भाव | 7, 10 |
| साथ में | कोई नहीं |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 3 |
| कुल अंक | 40 / 100 |

गुरु की दृष्टि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार), भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद), भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) पर है, जिन्हें यह सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है। केवल 3 अष्टकवर्ग अंक होने से इसे अपना श्रेष्ठ देने के लिए सहारे की ज़रूरत है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में गुरु

गुरु भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए स्वभाव से अनुकूल नहीं है, इसलिए इसकी दशा अपने विषयों में मेहनत या बाधाएँ ला सकती है; इसे बलवान करने के बजाय दान और मंत्र से शांत करें।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

यह शनि के नक्षत्र में है, जो भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक शनि के माध्यम से मिलते हैं: भाव 10 और शनि के स्वामित्व वाले भावों के विषय गुरु के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (शनि) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 12 (खर्च, विदेश): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (बुध, शुक्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 2 (धन, परिवार और वाणी): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को।

गुरु आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 40 है, और यह मित्र राशि में है।

## शुक्र

| | |
|---|---|
| कारक | विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य |
| स्थिति | वृषभ 15:13:44, भाव 12 |
| नक्षत्र | रोहिणी चरण 2 (स्वामी चंद्र) |
| बल (D1 / D9) | स्वराशि / वृषभ में स्वराशि — वर्गोत्तम |
| स्वामित्व वाले भाव | 5, 12 |
| साथ में | बुध |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 4 |
| कुल अंक | 75 / 100 |

शुक्र की दृष्टि भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु) पर है, जिन्हें यह सामंजस्य, सुख और आकर्षण देता है। बुध के साथ होने से यह अपने फल उनके फलों के साथ मिलाकर देता है। वर्गोत्तम (जन्म कुंडली और नवांश में एक ही राशि) होने से यह स्थिर और भरोसेमंद फल देता है।

SAMPLE

### गहराई से: आपकी कुंडली में शुक्र

शुक्र भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए मिले-जुले फल देता है: जहाँ बलवान है वहाँ अच्छे और जहाँ कमज़ोर है वहाँ साधारण या परीक्षा वाले।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

यह चंद्र के नक्षत्र में है, जो भाव 9 (भाग्य, पिता) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक चंद्र के माध्यम से मिलते हैं: भाव 9 और चंद्र के स्वामित्व वाले भावों के विषय शुक्र के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़): यह रक्षा करता है और सहारा देता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (गुरु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।

**इसके साथ बैठे ग्रह:**

- बुध के साथ: मोहक वाणी और कलात्मक कौशल, डिज़ाइन, मीडिया और व्यापार के लिए अच्छा।

शुक्र आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 75 है, और यह अपनी राशि में है। इसकी मुख्य दशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है।

## शनि

| | |
|---|---|
| कारक | अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य |
| स्थिति | मीन 00:40:37, भाव 10 |
| नक्षत्र | पूर्वा भाद्रपद चरण 4 (स्वामी गुरु) |
| बल (D1 / D9) | सम राशि / कर्क में शत्रु राशि |
| स्वामित्व वाले भाव | 8, 9 |
| साथ में | कोई नहीं |
| अपनी राशि में अपने अष्टकवर्ग अंक | 8 में से 5 |
| कुल अंक | 78 / 100 |

शनि की दृष्टि भाव 12 (खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद), भाव 4 (घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति), भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा देता है। 5 अष्टकवर्ग अंकों के साथ यह अपनी राशि में अच्छे बल से काम करता है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में शनि

शनि भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) के स्वामी हैं। यह आपके लग्न के लिए अनुकूल ग्रह है, इसलिए इसकी दशा जिन विषयों का यह स्वामी है उनमें मदद करती है, और इसे बलवान करना उपयोगी है।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

यह गुरु के नक्षत्र में है, जो भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में स्थित है, इसलिए इसके फल कुछ हद तक गुरु के माध्यम से मिलते हैं: भाव 6 और गुरु के स्वामित्व वाले भावों के विषय शनि के फलों में घुल जाते हैं।

**यह कहाँ देखता है:**

SAMPLE

- भाव 12 (खर्च, विदेश): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (बुध, शुक्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 4 (घर, माता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।
- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

शनि आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 78 है, और यह सम राशि में है। इसकी मुख्य दशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है।

## राहु

| | |
|---|---|
| कारक | महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय, तकनीक और लीक से हटकर बातें |
| स्थिति | तुला 09:04:01, भाव 5 |
| नक्षत्र | स्वाति चरण 1 (स्वामी राहु) |
| बल (D1 / D9) | मित्र राशि / धनु में सम राशि |
| स्वामित्व वाले भाव | — (छाया ग्रह) |
| साथ में | कोई नहीं |
| कुल अंक | 66 / 100 |

राहु की दृष्टि भाव 9 (भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ), भाव 11 (आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति), भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) पर है, जिन्हें यह महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी देता है।

### गहराई से: आपकी कुंडली में राहु

राहु छाया ग्रह है: यह जिस राशि में है उसके और उस राशि के स्वामी शुक्र के माध्यम से काम करता है, जो भाव 12 (खर्च, विदेश) में बैठा है। इसके फलों पर भाव 5 और उस ग्रह के स्वामित्व वाले भावों के विषयों का रंग चढ़ता है।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 9 (भाग्य, पिता): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (चंद्र) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 11 (आय, लाभ): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (केतु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (सूर्य) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं। क्योंकि लग्न छुआ जा रहा है, आपका स्वास्थ्य, आत्मविश्वास और सामान्य दृष्टिकोण इस प्रभाव को महसूस करते हैं।

राहु आपकी कुंडली में बलवान है, जब गरिमा, स्थिति, दृष्टियाँ और अष्टकवर्ग एक साथ तौले जाएँ, इसलिए यह जिसका कारक है (महत्वाकांक्षा, विदेश से जुड़े विषय, तकनीक और लीक से हटकर बातें) वह भरोसेमंद है और इसकी दशाएँ फलदायी रहती हैं। इसका कुल बल 100 में से 66 है, और यह मित्र राशि में है।

## केतु

| | |
|---|---|
| कारक | आध्यात्मिकता, वैराग्य, शोध और मोक्ष |
| स्थिति | मेष 09:04:01, भाव 11 |
| नक्षत्र | अश्विनी चरण 3 (स्वामी केतु) |
| बल (D1 / D9) | मित्र राशि / मिथुन में सम राशि |
| स्वामित्व वाले भाव | — (छाया ग्रह) |

SAMPLE

| | |
|---|---|
| साथ में | कोई नहीं |
| कुल अंक | 60 / 100 |

केतु की दृष्टि भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद), भाव 5 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता), भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार) पर है, जिन्हें यह वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन देता है।

## गहराई से: आपकी कुंडली में केतु

केतु छाया ग्रह है: यह जिस राशि में है उसके और उस राशि के स्वामी मंगल के माध्यम से काम करता है, जो भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में बैठा है। इसके फलों पर भाव 11 और उस ग्रह के स्वामित्व वाले भावों के विषयों का रंग चढ़ता है।

**यह कहाँ देखता है:**

- भाव 3 (साहस, भाई-बहन): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (मंगल) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 5 (संतान, शिक्षा): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को। वहाँ स्थित ग्रह (राहु) भी इसका प्रभाव महसूस करते हैं।
- भाव 7 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार): यह इन विषयों में दबाव, ऊर्जा और अनुशासन की ज़रूरत जोड़ता है इन विषयों को।

केतु आपकी कुंडली में साधारण बल का है, इसलिए यह जिसका कारक है (आध्यात्मिकता, वैराग्य, शोध और मोक्ष) उसमें ठीक-ठाक फल मिलते हैं जो प्रयास और अच्छे समय से सुधरते हैं। इसका कुल बल 100 में से 60 है, और यह मित्र राशि में है। इसकी मुख्य दशा 27/08/2060 से 28/08/2067 तक चलती है।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — ग्रहों का स्वभाव, कारकत्व और दृष्टि; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — ग्रहों के कारकत्व।*

SAMPLE

# नक्षत्रों में ग्रह

हर ग्रह 27 नक्षत्रों में से किसी एक में बैठा है। उस नक्षत्र का स्वामी (नक्षत्रेश) तय करता है कि ग्रह किन विषयों के माध्यम से फल देगा, चरण बताता है कि कौन-सी नवांश राशि उसे रंग देती है, और आपके जन्म नक्षत्र से उसकी गिनती (तारा) बताती है कि वह आपके कल्याण में सहायक है या नहीं।

### मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य, चरण 3

देवता: सोम (चंद्र देवता) · प्रतीक: हिरण का सिर · नक्षत्र स्वामी: मंगल (भाव 3) · तारा: अति-मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी मंगल भाव 3 में बैठा है, इसलिए सूर्य अपने फल का बड़ा भाग साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण तुला नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में विचारशील और मिलनसार गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

### शतभिषा नक्षत्र में चंद्र, चरण 2

देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल के देवता) · प्रतीक: खाली वृत्त · नक्षत्र स्वामी: राहु (भाव 5) · तारा: जन्म

इसका नक्षत्र स्वामी राहु भाव 5 में बैठा है, इसलिए चंद्र अपने फल का बड़ा भाग संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण मकर नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। यह आपके जन्म नक्षत्र वाली (जन्म) तारा में है, इसलिए इसके फल सीधे आपके शरीर और मन को छूते हैं।

### पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में मंगल, चरण 2

देवता: भग (सौभाग्य के देवता) · प्रतीक: पलंग के अगले पाए · नक्षत्र स्वामी: शुक्र (भाव 12) · तारा: साधक

इसका नक्षत्र स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है, इसलिए मंगल अपने फल का बड़ा भाग खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण कन्या नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

### रोहिणी नक्षत्र में बुध, चरण 2

देवता: ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) · प्रतीक: रथ या गाड़ी · नक्षत्र स्वामी: चंद्र (भाव 9) · तारा: मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है, इसलिए बुध अपने फल का बड़ा भाग भाग्य, पिता, गुरु से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

### अनुराधा नक्षत्र में गुरु, चरण 4

देवता: मित्र (मित्रता के देवता) · प्रतीक: कमल · नक्षत्र स्वामी: शनि (भाव 10) · तारा: विपत

इसका नक्षत्र स्वामी शनि भाव 10 में बैठा है, इसलिए गुरु अपने फल का बड़ा भाग करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृश्चिक नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में भावुक और देखभाल करने वाला गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह कठिन तारा में पड़ता है, इसलिए इसकी दशा धैर्य और सावधानी माँगती है; इस ग्रह के उपाय सहायक हैं।

### रोहिणी नक्षत्र में शुक्र, चरण 2

देवता: ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) · प्रतीक: रथ या गाड़ी · नक्षत्र स्वामी: चंद्र (भाव 9) · तारा: मित्र

इसका नक्षत्र स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है, इसलिए शुक्र अपने फल का बड़ा भाग भाग्य, पिता, गुरु से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण वृषभ नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में व्यावहारिक और स्थिर गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

SAMPLE

### पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में शनि, चरण 4

देवता: अज एकपाद (रुद्र का एक-पाद रूप) · प्रतीक: अर्थी का अगला भाग · नक्षत्र स्वामी: गुरु (भाव 6) · तारा: संपत

इसका नक्षत्र स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है, इसलिए शनि अपने फल का बड़ा भाग प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग से जुड़े विषयों के माध्यम से देता है। इसका चरण कर्क नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में भावुक और देखभाल करने वाला गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह शुभ तारा में पड़ता है, इसलिए यह प्रायः आपके स्वास्थ्य और भाग्य को सहारा देता है।

### स्वाति नक्षत्र में राहु, चरण 1

देवता: वायु (पवन) · प्रतीक: हवा में झूलता नन्हा पौधा · नक्षत्र स्वामी: राहु (भाव 5) · तारा: जन्म

राहु अपने ही नक्षत्र में है, जिससे इसके फल केंद्रित और शुद्ध होते हैं; यह सीधे उन भावों के माध्यम से काम करता है जिनमें यह बैठा है और जिनका स्वामी है। इसका चरण धनु नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में उग्र और सक्रिय गुण जोड़ता है। यह आपके जन्म नक्षत्र वाली (जन्म) तारा में है, इसलिए इसके फल सीधे आपके शरीर और मन को छूते हैं।

### अश्विनी नक्षत्र में केतु, चरण 3

देवता: अश्विनी कुमार (देवताओं के वैद्य) · प्रतीक: घोड़े का सिर · नक्षत्र स्वामी: केतु (भाव 11) · तारा: प्रत्यरि

केतु अपने ही नक्षत्र में है, जिससे इसके फल केंद्रित और शुद्ध होते हैं; यह सीधे उन भावों के माध्यम से काम करता है जिनमें यह बैठा है और जिनका स्वामी है। इसका चरण मिथुन नवांश में पड़ता है, जो इसके काम करने के ढंग में विचारशील और मिलनसार गुण जोड़ता है। आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर यह कठिन तारा में पड़ता है, इसलिए इसकी दशा धैर्य और सावधानी माँगती है; इस ग्रह के उपाय सहायक हैं।

*आधार: वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — नक्षत्रों में जन्म के फल; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — तारा बल।*

SAMPLE

# राशियों में ग्रह

ग्रह जिस राशि में बैठा है, वह उसके प्रकट होने के ढंग को रंग देती है: उसका बल (राशि-बल) और उसके काम करने की शैली।

### मिथुन में सूर्य

मिथुन में सूर्य जीवंत बुद्धि, बहुमुखी प्रतिभा और शब्दों तथा अंकों में कौशल देता है। आप जल्दी सीखते हैं और विविधता का आनंद लेते हैं। अपनी प्रतिभा का पूरा उपयोग करने के लिए कुछ ही लक्ष्यों पर ध्यान दें।

### कुंभ में चंद्र

कुंभ में चंद्रमा मित्रवत, मानवतावादी और स्वतंत्र मन देता है। आपकी रुचि विचारों और सामाजिक कार्यों में है।

### सिंह में मंगल

सिंह में मंगल नेतृत्व, साहस और स्वाभिमानी, प्रभावशाली ऊर्जा देता है। आप उदार और निडर हैं।

### वृषभ में बुध

वृषभ में बुध व्यावहारिक, स्थिर सोच और अच्छी व्यापारिक समझ देता है। आप धीरे सीखते हैं पर अच्छी तरह याद रखते हैं।

### वृश्चिक में गुरु

वृश्चिक में गुरु गहरा ज्ञान, गूढ़ विद्याओं और शोध में रुचि, और दृढ़ विश्वास देता है।

### वृषभ में शुक्र

वृषभ में शुक्र अपनी राशि में होता है। यह आकर्षण, सौंदर्य, सुख-सुविधा और कलाओं का प्रेम, और स्थिर स्नेह देता है।

### मीन में शनि

मीन में शनि आध्यात्मिक अनुशासन, करुणा और सेवा देता है। सांसारिक मामलों में अतिरिक्त प्रयास लग सकता है।

### तुला में राहु

तुला में राहु साझेदारी के प्रति लीक से हटकर दृष्टिकोण और व्यापार तथा कानून में सफलता देता है।

### मेष में केतु

मेष में केतु अचानक साहस और सहज कर्म देता है, निजी यश से विरक्ति के साथ।

*आधार: कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — बारह राशियों में ग्रह; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — राशियों में ग्रह; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — राशियों में ग्रहों के फल।*

SAMPLE

# आपकी कुंडली के बारह भाव

कुंडली का हर भाव जीवन के एक हिस्से का स्वामी है। उसकी स्थिति इस पर निर्भर करती है कि उसमें कौन-सी राशि है, कौन-से ग्रह बैठे हैं और सबसे बढ़कर, उसका स्वामी ग्रह (भावेश) कहाँ बैठा है।

हर भाव को नीचे पूरे विस्तार से समझाया गया है: जीवन में उसका अर्थ, उसकी राशि और स्वामी उसे कैसे ढालते हैं, उसमें बैठे या उसे देखने वाले ग्रह, रोज़मर्रा की जिन बातों को वह छूता है (क्या हो सकता है और क्या मदद करता है), वे दशाएँ और गोचर जब वह सक्रिय होता है, और उसे मज़बूत रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं।

## भाव 1 — स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत (सावधानी चाहिए)

राशि: मिथुन · स्वामी: बुध (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: सूर्य

पहला भाव आप स्वयं हैं: आपका शरीर, स्वास्थ्य, रूप, स्वभाव और दुनिया को आप पहली नज़र में कैसे दिखते हैं। यह भी बताता है कि आप काम की शुरुआत कैसे करते हैं, आपमें कितनी जीवन-शक्ति है और जीवन के प्रति आपका मूल दृष्टिकोण क्या है। बाकी हर भाव इसी के सापेक्ष पढ़ा जाता है, इसलिए इसकी स्थिति पूरी कुंडली को रंग देती है।

इस भाव पर मिथुन राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो जिज्ञासु, लचीले और बातूनी है।

बारहवें भाव में लग्नेश विदेश में जीवन, आध्यात्मिक रुचियाँ और खर्च ला सकता है। आप विदेश, अस्पतालों या संस्थाओं में काम कर सकते हैं। स्वास्थ्य और खर्च में सावधानी की सलाह है।

इस भाव के स्वामी बुध मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- सूर्य इस भाव में बैठा है और इस भाव में अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। सूर्य, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

**व्यवहार में:** नियमित आराम, व्यायाम और जाँच से स्वास्थ्य और आत्म-विश्वास की रक्षा करें; छोटी-छोटी स्थिर जीतों से आत्मविश्वास बढ़ता है।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर गलत समझा जाना या आलोचना। क्या सहायक है: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

SAMPLE

- इस भाव के स्वामी बुध की महादशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – बुध (31/08/2027 – 10/05/2030)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (सूर्य) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 26/04/2037 – 11/05/2038; 03/04/2049 – 02/04/2050; 23/07/2060 – 10/08/2061। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 31/05/2032 – 13/07/2034; 07/03/2062 – ...। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए बुधवार (बुध का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, हरा रंग को प्राथमिकता दें और ॐ बुधाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 2 — धन, परिवार और वाणी (मध्यम)

राशि: कर्क · स्वामी: चंद्र (भाव 9 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

दूसरा भाव संसाधनों का है: जो धन आप कमाते और बचाते हैं, जिस परिवार में आपका जन्म हुआ, वाणी, भोजन, आरंभिक शिक्षा और आपके मूल्य। यह बताता है कि आप बचत कैसे सँभालते हैं, आप किसे मूल्यवान मानते हैं और आपके शब्द आस-पास के लोगों पर कैसा असर डालते हैं।

इस भाव पर कर्क राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो देखभाल करने वाले, रक्षक और भावुक है।

नौवें भाव में दूसरे भाव का स्वामी धन के लिए भाग्यशाली है। धन भाग्य, पिता, गुरुजनों या धार्मिक और शैक्षिक कार्यों से आता है।

इस भाव के स्वामी चंद्र सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 9 में हैं, इस भाव के विषय भाव 9 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

**व्यवहार में:** धन ठीक-ठाक आता है; नियमित बचत और सोच-समझकर बोलना पारिवारिक सौहार्द की रक्षा करते हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का नियमित आना और बेहतर बचत; कठिन पक्ष में, धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
- **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: घर में तालमेल, एकजुटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
- **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: ऐसी बातें जिनका वज़न हो और लोग आपको सुनें; कठिन पक्ष में, कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **भोजन और खान-पान की आदतें** — क्या हो सकता है: अच्छे भोजन और पारिवारिक भोजन का आनंद; कठिन पक्ष में, अनियमित खान-पान या अति। क्या सहायक है: समय पर खाएँ, सादा भोजन रखें और रात में भारी भोजन से बचें।
- **पारिवारिक संपत्ति और कीमती वस्तुएँ** — क्या हो सकता है: पारिवारिक संपत्ति, सोने या कीमती वस्तुओं में वृद्धि; कठिन पक्ष में, पारिवारिक संपत्ति को लेकर चिंता या पारिवारिक बँटवारे में देरी। क्या सहायक है: कीमती चीज़ें सुरक्षित रखें, कागज़ात व्यवस्थित रखें और पारिवारिक संपत्ति पर शांति से खुलकर बात करें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

SAMPLE

- इस भाव के स्वामी चंद्र की महादशा 28/08/2093 से 29/08/2103 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – चंद्र (01/08/2035 – 01/03/2037)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 11/05/2038 – 02/06/2039; 02/04/2050 – 19/09/2050; 10/08/2061 – 03/09/2062। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 13/07/2034 – 27/08/2036। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए सोमवार (चंद्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, क्रीम रंग को प्राथमिकता दें और ॐ सोमाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 3 — साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद (मध्यम)

राशि: सिंह · स्वामी: सूर्य (भाव 1 में) · यहाँ ग्रह: मंगल

तीसरा भाव प्रयास और पहल का है: साहस, कौशल और शौक, छोटे भाई-बहन, पड़ोसी, छोटी यात्राएँ, लेखन और हर तरह का संवाद। यह बताता है कि आप अपने हाथ, मन और आवाज़ से क्या कर सकते हैं।

इस भाव पर सिंह राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो आत्मविश्वासी, उदार और स्वाभिमानी है।

लग्न में तीसरे भाव का स्वामी साहस, आत्मविश्वास और संवाद की प्रतिभा देता है। आप उद्यमी हैं और पहल करने को तैयार रहते हैं।

इस भाव के स्वामी सूर्य सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 1 में हैं, इस भाव के विषय भाव 1 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- मंगल इस भाव में बैठा है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- चंद्र इस भाव को देखता है और इस भाव में देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। मंगल, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

**व्यवहार में:** मेहनत फल देती है; छोटी यात्राएँ और संवाद योजना बनाकर करने पर अच्छे रहते हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा; कठिन पक्ष में, बिखरे प्रयास या हिचकिचाहट। क्या सहायक है: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
- **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग; कठिन पक्ष में, ग़लतफ़हमी या किसी छोटे भाई-बहन की चिंता। क्या सहायक है: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
- **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ; कठिन पक्ष में, यात्रा में देरी या छोटी-मोटी असुविधाएँ। क्या सहायक है: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **लेखन, मीडिया और कौशल** — क्या हो सकता है: लेखन, बिक्री, मीडिया, फ़ोन-संपर्क और कौशल-विकास में सफलता; कठिन पक्ष में, संवाद में गड़बड़ी या कागज़ खो जाना। क्या सहायक है: संदेश और कागज़ात भेजने से पहले दोबारा जाँचें और प्रतियाँ रखें।
- **पड़ोसी और आस-पास के लोग** — क्या हो सकता है: पड़ोसियों और आस-पास के लोगों से अच्छा सहयोग; कठिन पक्ष में,

SAMPLE

पड़ोसियों या सहकर्मियों से छोटे झगड़े। क्या सहायक है: विनम्र रहें, गपशप से बचें और छोटी बातें जल्दी सुलझा लें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी सूर्य की महादशा 28/08/2087 से 28/08/2093 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – सूर्य (19/08/2034 – 01/08/2035)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (मंगल) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 31/10/2026 – 24/07/2028; 02/06/2039 – 29/06/2040; 19/09/2050 – 17/10/2051। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 27/08/2036 – 13/07/2039। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए रविवार (सूर्य का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल, नारंगी रंग को प्राथमिकता दें और ॐ सूर्याय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 4 — घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति (मध्यम)

राशि: कन्या · स्वामी: बुध (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

चौथा भाव जीवन की नींव है: घर, माता, संपत्ति, भूमि, वाहन, प्रारंभिक स्कूली शिक्षा और सबसे बढ़कर मन की शांति। यह बताता है कि आप कहाँ सुरक्षित महसूस करते हैं और भीतर से कितने स्थिर हैं।

इस भाव पर कन्या राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो सावधान, विश्लेषणात्मक और सेवा-भाव वाले है।

बारहवें भाव में चौथे भाव का स्वामी विदेश में या जन्मस्थान से दूर निवास ला सकता है। संपत्ति और घर पर सोच-समझकर खर्च करें।

इस भाव के स्वामी बुध मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। चंद्र, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (मन, भावनाएँ, माता, घर का सुख और जनता), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

**व्यवहार में:** घरेलू जीवन ठीक-ठाक है; खरीद की योजना सावधानी से बनाएँ और आराम व परिवार के लिए समय रखें।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **माता** — क्या हो सकता है: माता से निकटता, आशीर्वाद और सुकून; कठिन पक्ष में, माता के स्वास्थ्य की चिंता या उनसे मतभेद। क्या सहायक है: उनके साथ समय बिताएँ, बिना बहस के सुनें और उनकी नियमित जाँच न छूटे यह देखें।
- **घर और पारिवारिक शांति** — क्या हो सकता है: शांत और सुखी घर; कठिन पक्ष में, बेचैनी या घर में छोटे झगड़े। क्या सहायक है: घर व्यवस्थित रखें, छोटी बातें तुरंत सुलझाएँ और रोज़ परिवार को कुछ समय दें।
- **संपत्ति और भूमि** — क्या हो सकता है: मकान, ज़मीन या संपत्ति के मामलों में प्रगति या लाभ; कठिन पक्ष में, संपत्ति के काम में देरी या विवाद। क्या सहायक है: खरीदने से पहले हर कागज़ वकील से जँचवाएँ और जल्दबाज़ी के सौदों से बचें।
- **वाहन** — क्या हो सकता है: अच्छा वाहन खरीदने या उसका सुख लेने का अवसर; कठिन पक्ष में, मरम्मत का खर्च या छोटी दुर्घटनाएँ। क्या सहायक है: वाहन की सर्विस समय पर कराएँ, गति-सीमा में चलाएँ और बीमा चालू रखें।
- **मन की शांति** — क्या हो सकता है: शांत मन और संतोष; कठिन पक्ष में, भीतरी बेचैनी या चिंता। क्या सहायक है: रोज़ कुछ समय शांत बैठें, बाहर टहलें और पूजा या ध्यान जारी रखें।

SAMPLE

- **प्रारंभिक शिक्षा और सुख-सुविधाएँ** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, सीखना और स्थिर जीवन; कठिन पक्ष में, घर या पढ़ाई में ध्यान भटकना और असुविधा। क्या सहायक है: पढ़ाई और आराम के लिए एक तय जगह और समय रखें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी बुध की महादशा 28/08/2043 से 27/08/2060 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – बुध (31/08/2027 – 10/05/2030)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 24/07/2028 – 25/08/2029; 29/06/2040 – 31/07/2041; 17/10/2051 – 16/11/2052। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 13/07/2039 – 26/09/2041। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए बुधवार (बुध का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, हरा रंग को प्राथमिकता दें और ॐ बुधाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 5 — संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता (सावधानी चाहिए)

राशि: तुला · स्वामी: शुक्र (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: राहु

पाँचवाँ भाव रचनात्मकता और आनंद का है: संतान, शिक्षा, बुद्धि, प्रेम, रचनात्मक प्रतिभा, भक्ति और पिछले शुभ कर्मों का पुण्य। यह सट्टे और दूसरों को दी जाने वाली सलाह को भी छूता है।

इस भाव पर तुला राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो संतुलित, कूटनीतिक और न्यायप्रिय है।

बारहवें भाव में पाँचवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक रुचियाँ देता है और संतान या शिक्षा पर खर्च, या विदेश में पढ़ाई ला सकता है।

इस भाव के स्वामी शुक्र अपनी ही राशि में, जो स्थिर, सुखद फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 12 में हैं, इस भाव के विषय भाव 12 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- राहु इस भाव में बैठा है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

**व्यवहार में:** सीखने और संतान के विषयों में धैर्य और अच्छा मार्गदर्शन चाहिए; नियमित दिनचर्या और विश्वास मदद करते हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **रचनात्मकता और प्रतिभा** — क्या हो सकता है: रचनात्मक रुकावट, संदेह या अधूरे काम। क्या सहायक है: रोज़ थोड़ा तय समय अभ्यास करें और छोटे-छोटे काम पूरे करें।
- **प्रेम** — क्या हो सकता है: ग़लतफ़हमियाँ या प्रेम में अनुचित निर्णय। क्या सहायक है: ईमानदार रहें, धीरे चलें और जल्दबाज़ी में प्रतिबद्धता न करें।
- **सट्टा और निवेश** — क्या हो सकता है: टिप्स, शॉर्टकट या जुए से हानि। क्या सहायक है: सट्टे और टिप्स से बचें। निवेश केवल योग्य वित्तीय सलाहकार की सलाह से करें, और कभी उधार के पैसे से नहीं।
- **बुद्धि और भक्ति** — क्या हो सकता है: भ्रम या ज़्यादा सोचना। क्या सहायक है: निर्णय कारण सहित लिख लें, और रोज़ थोड़ी प्रार्थना या मंत्र-साधना रखें।

SAMPLE

- **संतान** — क्या हो सकता है: संतान की पढ़ाई, स्वास्थ्य या व्यवहार की चिंता। क्या सहायक है: उन्हें धैर्य से समय दें, दबाव के बिना मार्गदर्शन करें और कुछ चिंताजनक लगे तो डॉक्टर या शिक्षक से जल्दी बात करें।
- **शिक्षा और पढ़ाई** — क्या हो सकता है: ध्यान भटकना या मेहनत से कम परिणाम। क्या सहायक है: तय समय-सारणी अपनाएँ, छोटे केंद्रित सत्रों में पढ़ें और फ़ोन दूर रखें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी शुक्र की महादशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – शुक्र (19/06/2031 – 19/08/2034)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (राहु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 25/08/2029 – 23/09/2030; 31/07/2041 – 28/08/2042; 16/11/2052 – 16/12/2053। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 26/09/2041 – 30/08/2044। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए शुक्रवार (शुक्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, हल्के रंग रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शुक्राय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 6 — प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु (मध्यम)

राशि: वृश्चिक · स्वामी: मंगल (भाव 3 में) · यहाँ ग्रह: गुरु

छठा भाव रोज़ के संघर्ष का है: काम की दिनचर्या, सेवा, प्रतिस्पर्धा, शत्रु, कर्ज़, बीमारी और स्वास्थ्य-लाभ, तथा कर्मचारी और पालतू जानवर। यह बताता है कि आप दबाव को कैसे सँभालते हैं और बाधाओं से ऊपर उठ पाते हैं या नहीं।

इस भाव पर वृश्चिक राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो तीव्र, निजी और दृढ़ निश्चयी है।

तीसरे भाव में छठे भाव का स्वामी विरोधियों को हराने का साहस देता है। विजय के लिए यह सामान्यतः अच्छी स्थिति है।

इस भाव के स्वामी मंगल मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 3 में हैं, इस भाव के विषय भाव 3 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सम स्थिति है।

- गुरु इस भाव में बैठा है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- बुध इस भाव को देखता है और इस भाव में बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शुक्र इस भाव को देखता है और इस भाव में सामंजस्य, सुख और आकर्षण, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। मंगल, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (साहस, ऊर्जा, भाई, भूमि-संपत्ति और तकनीकी कौशल), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

**व्यवहार में:** प्रतिस्पर्धा और रोज़ का काम अनुशासन से सँभलने योग्य हैं; स्वास्थ्य और कर्ज़ व्यवस्थित रखें।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: अच्छी रिकवरी और दिनचर्या में अनुशासन; कठिन पक्ष में, पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
- **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: मेहनत और सेवा की सराहना; कठिन पक्ष में, काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।

SAMPLE

- **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद में अनुकूल परिणाम; कठिन पक्ष में, विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **प्रतिद्वंद्वी और प्रतिस्पर्धा** — क्या हो सकता है: प्रतिद्वंद्वियों और आलोचकों पर सफलता; कठिन पक्ष में, कड़ा विरोध या दफ़्तर की राजनीति। क्या सहायक है: शांत रहें, अपने काम का रिकॉर्ड रखें और गपशप से बचें।
- **कर्ज़ और ऋण** — क्या हो सकता है: कर्ज़ चुकाने और बकाया निपटाने का अवसर; कठिन पक्ष में, कर्ज़ या किस्तों का दबाव। क्या सहायक है: भुगतान की योजना पहले से बनाएँ, नया कर्ज़ न लें और देरी की आशंका हो तो ऋणदाता से जल्दी बात करें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी मंगल की महादशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (गुरु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/09/2030 – 15/10/2031; 28/08/2042 – 11/09/2043; 16/12/2053 – 11/01/2055। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 30/08/2044 – 08/12/2046। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए मंगलवार (मंगल का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल रंग को प्राथमिकता दें और ॐ मंगलाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 7 — विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार (सावधानी चाहिए)

राशि: धनु · स्वामी: गुरु (भाव 6 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

सातवाँ भाव साझेदारी का है: विवाह और जीवनसाथी, व्यापारिक साझेदार, ग्राहक, समझौते और जनता से हर आमने-सामने का व्यवहार। यह बताता है कि आप दूसरों से बराबरी के स्तर पर कैसे जुड़ते हैं।

इस भाव पर धनु राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो आशावादी, स्वतंत्रता-प्रेमी और दार्शनिक है।

छठे भाव में सातवें भाव का स्वामी विवाह, साझेदारी और कानूनी मामलों में धैर्य और सावधानी माँगता है।

इस भाव के स्वामी गुरु मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 6 में हैं, इस भाव के विषय भाव 6 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- सूर्य इस भाव को देखता है और इस भाव में अधिकार, ध्यान और कुछ गरमी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- केतु इस भाव को देखता है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। शुक्र, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (विवाह, प्रेम, सुख-सुविधा, वाहन, कला और सौंदर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

**व्यवहार में:** साझेदारी में धैर्य और सावधान चुनाव चाहिए; कुंडलियाँ ध्यान से मिलाएँ और जल्दबाज़ी की प्रतिबद्धताओं से बचें।

SAMPLE

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से मतभेद, दूरी या अहंकार का टकराव। क्या सहायक है: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
- **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: विवाह के निर्णय में देरी या असमंजस। क्या सहायक है: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: साझेदार से मतभेद या अस्पष्ट शर्तें। क्या सहायक है: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: कठिन ग्राहक या सार्वजनिक आलोचना। क्या सहायक है: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: शर्तों पर देरी या असहमति। क्या सहायक है: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 15/10/2031 – 23/10/2032; 11/09/2043 – 16/02/2044; 11/01/2055 – 31/01/2056। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 08/12/2046 – 04/12/2049। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए गुरुवार (गुरु का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, पीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ गुरवे नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 8 — अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु (मध्यम)

राशि: मकर · स्वामी: शनि (भाव 10 में) · यहाँ ग्रह: कोई नहीं

आठवाँ भाव छिपे और अचानक का है: रूपांतरण, शोध, रहस्य, विरासत, बीमा, जीवनसाथी के संसाधन, लंबे समय का स्वास्थ्य और आयु। यह जीवन के गहरे सबकों का भाव है।

इस भाव पर मकर राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो अनुशासित, धैर्यवान और महत्वाकांक्षी है।

दसवें भाव में आठवें भाव का स्वामी करियर में बदलाव ला सकता है। शोध, बीमा, खनन या जाँच-पड़ताल आपके अनुकूल हैं।

इस भाव के स्वामी शनि सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 10 में हैं, इस भाव के विषय भाव 10 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- इस भाव में न कोई ग्रह बैठा है और न इसे देखता है, इसलिए इसे मुख्यतः इसके स्वामी से पढ़ा जाता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार औसत है। शनि, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

**व्यवहार में:** बदलाव सँभलने योग्य ढंग से आते हैं; बीमा और बचत गद्दी का काम करते हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **अचानक बदलाव** — क्या हो सकता है: अप्रत्याशित सहायता और सकारात्मक मोड़; कठिन पक्ष में, अचानक बदलाव या आश्चर्य जो योजनाओं को हिला दें। क्या सहायक है: महत्वपूर्ण बातों के लिए एक छोटा आपातकालीन कोष और वैकल्पिक योजना रखें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ; कठिन पक्ष में, विरासत या साझा धन में देरी या विवाद। क्या सहायक है: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह

SAMPLE

लें।

- **शोध और गूढ़ विषय** — क्या हो सकता है: गहरा शोध, अंतर्दृष्टि और गूढ़ विषयों के अध्ययन में सफलता; कठिन पक्ष में, भ्रम या अत्यधिक चिंता। क्या सहायक है: नियमित दिनचर्या रखें और अति या जोखिम भरी साधनाओं से बचें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: बीमारी के दौर के बाद स्वास्थ्य-लाभ; कठिन पक्ष में, पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।
- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी शनि की महादशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/10/2032 – 18/03/2033; 16/02/2044 – 02/03/2045; 31/01/2056 – 14/02/2057। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 04/12/2049 – 25/02/2052। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए शनिवार (शनि का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, काला, गहरा नीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शनये नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 9 — भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ (सावधानी चाहिए)

राशि: कुंभ · स्वामी: शनि (भाव 10 में) · यहाँ ग्रह: चंद्र

नौवाँ भाव भाग्य और अर्थ का भाव है: सौभाग्य, पिता, गुरु और मार्गदर्शक, धर्म और आस्था, तीर्थ और लंबी यात्राएँ, उच्च शिक्षा और दान। यह बताता है कि आपके अपने प्रयास से परे आपको क्या सहारा देता है।

इस भाव पर कुंभ राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो स्वतंत्र, मौलिक और समुदाय-भाव वाले है।

दसवें भाव में नौवें भाव का स्वामी मज़बूत राजयोग बनाता है (नौवें और दसवें भाव के स्वामी)। यह पद-प्रतिष्ठा, सफलता और सम्मान देता है।

इस भाव के स्वामी शनि सम राशि में, जो साधारण फल देता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 10 में हैं, इस भाव के विषय भाव 10 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सहायक स्थिति है।

- चंद्र इस भाव में बैठा है और इस भाव में देखभाल, संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार कमज़ोर है, इसलिए इसके पास कम भंडार है और अधिक ध्यान चाहिए। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

**व्यवहार में:** भाग्य प्रयास से कमाना पड़ता है; बड़ों का सम्मान और नियमित धार्मिक साधना इसे बल देते हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: प्रयास के बावजूद देरी या अपेक्षा से कम परिणाम। क्या सहायक है: लगातार

SAMPLE

काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।

- **पिता** — क्या हो सकता है: पिता या बड़ों को लेकर ग़लतफ़हमी, दूरी या स्वास्थ्य की चिंता। क्या सहायक है: उनसे अक्सर बात करें, पुरानी बहसों से बचें और उनकी नियमित स्वास्थ्य जाँच न छूटे यह देखें।
- **गुरु और मार्गदर्शक** — क्या हो सकता है: मार्गदर्शन की कमी या गुरु या बड़े से मतभेद। क्या सहायक है: गुरुजनों का सम्मान करें, बड़े निर्णयों से पहले उनकी सलाह लें और विनम्रता से सीखें।
- **धर्म और आस्था** — क्या हो सकता है: संदेह, या बिना आंतरिक शांति के कर्मकांड। क्या सहायक है: एक सरल दैनिक साधना रखें और आशीर्वाद के बदले पैसे माँगने वाले से सावधान रहें।
- **लंबी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: लंबी यात्राओं में देरी और अतिरिक्त खर्च। क्या सहायक है: पहले से योजना और बुकिंग करें, बीमा और कागज़ात तैयार रखें।
- **उच्च शिक्षा** — क्या हो सकता है: उच्च शिक्षा की योजनाओं में बाधा या बदलाव। क्या सहायक है: जल्दी आवेदन करें और वैकल्पिक विकल्प तैयार रखें।
- **दान और पुण्य कर्म** — क्या हो सकता है: ऐसा दान जो ग़लत जगह जाए या जिसकी कद्र न हो। क्या सहायक है: चुपचाप सच्चे कार्यों के लिए दें और कभी अपनी सामर्थ्य से अधिक न दें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी शनि की महादशा 27/08/2024 से 28/08/2043 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- इस भाव में बैठे ग्रह (चंद्र) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 18/03/2033 – 28/03/2034; 02/03/2045 – 13/03/2046; 14/02/2057 – 25/02/2058। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 25/02/2052 – 05/02/2055। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए शनिवार (शनि का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, काला, गहरा नीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शनये नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 10 — करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार (सावधानी चाहिए)

राशि: मीन · स्वामी: गुरु (भाव 6 में) · यहाँ ग्रह: शनि

दसवाँ भाव दुनिया में कर्म का है: करियर, पेशा, प्रतिष्ठा, अधिकार, सार्वजनिक छवि और अधिकारियों व सरकार से आपका व्यवहार। यह बताता है कि आप किस बात के लिए जाने जाएँगे।

इस भाव पर मीन राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो कोमल, सहज-बोध वाले और आदर्शवादी है।

छठे भाव में दसवें भाव का स्वामी सेवा, चिकित्सा, कानून या प्रशासन में करियर देता है, साथ में काम में प्रतिस्पर्धा।

इस भाव के स्वामी गुरु मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 6 में हैं, इस भाव के विषय भाव 6 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- शनि इस भाव में बैठा है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- मंगल इस भाव को देखता है और इस भाव में ऊर्जा, जोश और संभावित टकराव, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। सूर्य, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (आत्मा, आत्मविश्वास, पिता, अधिकार, सरकार और जीवन-शक्ति), आपकी कुंडली में दबाव में हैं, इसलिए इस भाव के आशीर्वाद देर

SAMPLE

से आते हैं और सचेत सहारा माँगते हैं।

**व्यवहार में:** करियर में धैर्य और स्पष्ट विशेषज्ञता चाहिए; बार-बार बदलाव से बचें और बदलाव के लिए अनुकूल अवधियाँ चुनें।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **अधिकारी और अधिकारधारी लोग** — क्या हो सकता है: किसी वरिष्ठ या अधिकारी से टकराव। क्या सहायक है: स्पष्ट संवाद करें, समय पर काम पूरा करें और सार्वजनिक बहस से बचें।
- **प्रतिष्ठा और सार्वजनिक छवि** — क्या हो सकता है: किसी छोटी बात पर आलोचना या मान-हानि। क्या सहायक है: आचरण निर्दोष रखें और ऑनलाइन कुछ भी डालने से पहले दो बार सोचें।
- **सरकारी और आधिकारिक मामले** — क्या हो सकता है: आधिकारिक कामों में देरी। क्या सहायक है: कागज़ात पूरे रखें और नियमों का सख्ती से पालन करें।
- **नौकरी और करियर में उन्नति** — क्या हो सकता है: ठहराव, दबाव या काम में थोपा गया बदलाव। क्या सहायक है: गुणवत्ता से काम करें, कौशल बढ़ाते रहें और दूसरा प्रस्ताव हाथ में लिए बिना जल्दबाज़ी में नौकरी न छोड़ें।
- **व्यापार और पेशा** — क्या हो सकता है: धीमा व्यापार या कड़ी प्रतिस्पर्धा। क्या सहायक है: खर्च पर नियंत्रण रखें, हिसाब साफ़ रखें और विस्तार से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – गुरु (14/02/2041 – 28/08/2043)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (शनि) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 28/03/2034 – 06/04/2035; 13/03/2046 – 21/03/2047; 25/02/2058 – 04/03/2059। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 29/03/2025 – 23/02/2028; 05/02/2055 – 07/04/2057। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए गुरुवार (गुरु का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, पीला रंग को प्राथमिकता दें और ॐ गुरवे नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 11 — आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति (मध्यम)

राशि: मेष · स्वामी: मंगल (भाव 3 में) · यहाँ ग्रह: केतु

ग्यारहवाँ भाव लाभ और पूर्ति का है: आय, मुनाफ़ा, मित्र और संपर्क, बड़े भाई-बहन और आपकी इच्छाओं की पूर्ति। यह बताता है कि आपके प्रयास का प्रतिफल आपको किस रूप में लौटकर मिलता है।

इस भाव पर मेष राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो साहसी, सीधे और तुरंत कदम उठाने वाले है।

तीसरे भाव में ग्यारहवें भाव का स्वामी प्रयास, भाई-बहनों, संवाद और यात्रा से लाभ देता है।

इस भाव के स्वामी मंगल मित्र की राशि में, जो इसके फलों को सुखद रखता है हैं। क्योंकि इसके स्वामी भाव 3 में हैं, इस भाव के विषय भाव 3 के विषयों से जुड़े हैं: एक में प्रगति का असर दूसरे में महसूस होता है। यह सम स्थिति है।

- केतु इस भाव में बैठा है और इस भाव में वैराग्य, अंतर्दृष्टि और अचानक परिवर्तन, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।
- राहु इस भाव को देखता है और इस भाव में महत्वाकांक्षा, असामान्य घटनाएँ और बेचैनी, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार मज़बूत है, इसलिए इसके पास सहारे के लिए अच्छा भंडार है। गुरु, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (ज्ञान, संतान, गुरुजन, धन और धर्म), आपकी कुंडली में साधारण बल के हैं।

**व्यवहार में:** लाभ नियमित प्रयास से आते हैं; बड़ा मित्र-वर्ग मदद करता है।

SAMPLE

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह; कठिन पक्ष में, बड़े भाई-बहनों से मतभेद। क्या सहायक है: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।
- **इच्छाओं की पूर्ति** — क्या हो सकता है: लंबे समय से अटकी इच्छाएँ पूरी होने लगती हैं; कठिन पक्ष में, ऐसी इच्छाएँ जिनके लिए और धैर्य चाहिए। क्या सहायक है: यथार्थवादी लक्ष्य रखें और चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ें।
- **समूह और संगठन** — क्या हो सकता है: समूहों, संगठनों और समुदायों से सहयोग; कठिन पक्ष में, किसी समूह के झगड़ों में खिंच जाना। क्या सहायक है: समूहों के झगड़ों से दूर रहें और अपना समय वहीं दें जहाँ उसकी कद्र हो।
- **आय और लाभ** — क्या हो सकता है: आय, बोनस या धन के नए स्रोतों में वृद्धि; कठिन पक्ष में, अपेक्षा से कम आय या भुगतान में देरी। क्या सहायक है: अपेक्षित आय पर पहले से खर्च न करें और बकाया का साफ़ रिकॉर्ड रखें।
- **मित्र और संपर्क** — क्या हो सकता है: सहायक मित्र और उपयोगी संपर्क; कठिन पक्ष में, ऐसे मित्र जो निराश करें या आपका समय और पैसा खींचें। क्या सहायक है: संगति सोच-समझकर चुनें और मित्रों को पैसे उधार न दें, न ही उनकी गारंटी लें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी मंगल की महादशा 29/08/2103 से 29/08/2110 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – मंगल (01/03/2037 – 10/04/2038)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (केतु) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 06/04/2035 – 15/04/2036; 21/03/2047 – 28/03/2048; 04/03/2059 – 04/03/2060। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 23/02/2028 – 17/04/2030; 07/04/2057 – 28/05/2059। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए मंगलवार (मंगल का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, लाल रंग को प्राथमिकता दें और ॐ मंगलाय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

## भाव 12 — खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद (मध्यम)

राशि: वृषभ · स्वामी: शुक्र (भाव 12 में) · यहाँ ग्रह: बुध, शुक्र

बारहवाँ भाव छोड़ने का है: खर्च और हानि, विदेश, अस्पताल, नींद, एकांत, आध्यात्मिक जीवन और मुक्ति। यह बताता है कि आप क्या खर्च करते हैं, कहाँ विश्राम लेते हैं और शांति कैसे पाते हैं।

इस भाव पर वृषभ राशि है, इसलिए आप इन विषयों को ऐसे ढंग से लेते हैं जो स्थिर, व्यावहारिक और सुख-प्रेमी है।

अपने ही भाव में बारहवें भाव का स्वामी आध्यात्मिक जीवन, विदेश में बसने और दान पर खर्च को सहारा देता है।

इस भाव के स्वामी शुक्र अपनी ही राशि में, जो स्थिर, सुखद फल देता है हैं। क्योंकि स्वामी अपने ही भाव में है, ये विषय आत्मनिर्भर हैं और आपके अपने प्रयास पर चलते हैं। यह कठिन स्थिति है, इसलिए ये विषय अतिरिक्त मेहनत, देरी या खर्च के साथ आते हैं।

- बुध इस भाव में बैठा है और इस भाव में बुद्धिमत्ता, संवाद और बहुमुखी प्रतिभा, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शुक्र इस भाव में बैठा है और इस भाव में सामंजस्य, सुख और आकर्षण, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- गुरु इस भाव को देखता है और इस भाव में सुरक्षा, वृद्धि और ज्ञान, जो इन विषयों को सहारा देता है।
- शनि इस भाव को देखता है और इस भाव में अनुशासन, देरी और स्थायी ढाँचा, इसलिए इन विषयों में अतिरिक्त मेहनत और धैर्य चाहिए।

इस भाव का अष्टकवर्ग आधार कमज़ोर है, इसलिए इसके पास कम भंडार है और अधिक ध्यान चाहिए। शनि, इन विषयों के स्वाभाविक कारक (अनुशासन, आयु, कर्म, सेवक और धैर्य), आपकी कुंडली में अच्छी तरह समर्थित हैं, जो इस भाव को अतिरिक्त सहारा देता है।

SAMPLE

**व्यवहार में:** खर्च और आराम बजट और नियमित नींद से सँभलने योग्य हैं।

**रोज़मर्रा के जीवन में यह भाव इन बातों को छूता है:**

- **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: पुरानी चिंताओं से स्वास्थ्य-लाभ और मुक्ति; कठिन पक्ष में, अस्पताल जाना पड़ना या छिपी चिंताएँ। क्या सहायक है: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
- **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: किसी पुराने बोझ का अंत; कठिन पक्ष में, लापरवाही से हानि, या छिपा विरोध। क्या सहायक है: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
- **खर्च** — क्या हो सकता है: सुख-सुविधा, परिवार या अच्छे कार्यों पर होने वाला खर्च; कठिन पक्ष में, अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।
- **विदेश और यात्रा** — क्या हो सकता है: विदेश-यात्रा, पढ़ाई या काम के अवसर; कठिन पक्ष में, वीज़ा और यात्रा में देरी या कागज़ी अड़चनें। क्या सहायक है: कागज़ात व्यवस्थित रखें और केवल अधिकृत एजेंटों का उपयोग करें।
- **नींद और विश्राम** — क्या हो सकता है: गहरी नींद और शांत रातें; कठिन पक्ष में, बिगड़ी नींद या रात की चिंताएँ। क्या सहायक है: सोने का समय तय रखें, सोने से पहले स्क्रीन से बचें और हल्का रात्रि-भोजन करें।
- **आध्यात्मिक उन्नति** — क्या हो सकता है: आंतरिक शांति, ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति; कठिन पक्ष में, अकेलेपन की भावना या अंतर्मुखी हो जाना। क्या सहायक है: रोज़ ध्यान करें और परिवार तथा मित्रों के संपर्क में रहें।

**यह भाव कब सक्रिय होता है:**

- इस भाव के स्वामी शुक्र की महादशा 28/08/2067 से 28/08/2087 तक चलती है; इन विषयों की गतिविधि तब सबसे अधिक रहती है।
- यह दूसरी महादशाओं के भीतर की अंतर्दशाओं में भी सक्रिय होता है: शनि – शुक्र (19/06/2031 – 19/08/2034)।
- इस भाव में बैठे ग्रह (बुध) भी अपनी दशाओं में इन विषयों को आगे लाते हैं।
- गुरु इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 15/04/2036 – 26/04/2037; 28/03/2048 – 03/04/2049; 04/03/2060 – 23/07/2060। यह आम तौर पर इन विषयों में वृद्धि, सद्भावना और सहयोग देता है।
- शनि इस भाव से इन अवधियों में गुज़रता है: 17/04/2030 – 31/05/2032; 28/05/2059 – 07/03/2062। यह आम तौर पर इन विषयों में परीक्षा, अनुशासन और टिकाऊ परिणाम देता है।

**क्या करें:** इस भाव को सहारा देने के लिए शुक्रवार (शुक्र का दिन) को दान और शुभ कार्यों के लिए रखें, सफ़ेद, हल्के रंग रंग को प्राथमिकता दें और ॐ शुक्राय नमः का श्रद्धा से जप करें। रत्न तभी पहनें जब किसी ज्योतिषी ने आपकी पूरी कुंडली देख ली हो।

यहाँ बताए गए उपाय पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित हैं और उसी भाव से दिए गए हैं। स्वास्थ्य, क़ानूनी या धन संबंधी मामलों में कृपया योग्य डॉक्टर, वकील या वित्तीय सलाहकार से भी सलाह लें।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावेशों के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव स्वामियों के फल।*

SAMPLE

# आपकी कुंडली के योग

योग ग्रहों का एक विशेष मेल है। शुभ योग स्वाभाविक शक्ति के क्षेत्र दिखाते हैं; "सावधानी" वाले योग वे क्षेत्र दिखाते हैं जहाँ प्रयास और उपाय मदद करते हैं। योग अपने फल मुख्यतः उन ग्रहों की दशाओं में देते हैं जिनसे वे बनते हैं।

### गजकेसरी योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से गिनने पर गुरु भाव 10 में है।

चंद्रमा से केंद्र में गुरु होने पर बनता है। यह सबसे प्रसिद्ध योगों में से एक है और बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, समृद्धि तथा विरोधियों पर विजय पाने की क्षमता देने वाला कहा गया है। इसकी शक्ति गुरु और चंद्रमा के बल पर निर्भर करती है।

### सुनफा योग (शुभ)

कैसे बना: चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि।

चंद्रमा से दूसरे भाव में (सूर्य के अतिरिक्त) ग्रह होने पर बनता है। यह स्वयं अर्जित धन, बुद्धि और अच्छी प्रतिष्ठा देता है।

### वाशि योग (शुभ)

कैसे बना: सूर्य से बारहवें भाव में बुध, शुक्र।

सूर्य से बारहवें भाव में ग्रह होने पर बनता है। यह उदारता, कौशल और सुख देता है।

### अमला योग (शुभ)

कैसे बना: गुरु लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में है।

लग्न या चंद्रमा से दसवें भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर बनता है। यह बेदाग प्रतिष्ठा, नैतिक आचरण और अच्छे कामों से स्थायी यश देता है।

### राजयोग (शुभ)

कैसे बना: बुध (भाव 4 का स्वामी) और शुक्र (भाव 5 का स्वामी) साथ हैं।

जब केंद्र (कर्म के भाव) का स्वामी त्रिकोण (भाग्य के भाव) के स्वामी से मिलता है, तब बनता है। यह पद-प्रतिष्ठा, अधिकार और सफलता में वृद्धि देता है, विशेषकर संबंधित ग्रहों की दशाओं में।

### विमल योग (विपरीत राजयोग) (शुभ)

कैसे बना: भाव 12 का स्वामी शुक्र भाव 12 में है।

बारहवें भाव के स्वामी के कठिन भाव में होने पर बनता है। यह अच्छा आचरण, आत्मनिर्भरता और बचत देता है, तथा खर्च घटाता है।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — योगों के अध्याय (नाभस, चंद्र, सूर्य, राज और धन योग); मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — योग अध्याय; कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी) — चंद्रमा और सूर्य से बनने वाले योग।*

SAMPLE

# जीवन के क्षेत्र

जीवन के हर क्षेत्र को उससे जुड़ी सब बातों को मिलाकर परखा जाता है: उसके भाव और उनके स्वामी, उनमें बैठे या उन्हें देखने वाले ग्रह, स्वाभाविक कारक, अष्टकवर्ग अंक और उसका अध्ययन करने वाला विभाजित चार्ट। हर क्षेत्र के लिए आपको स्पष्ट निष्कर्ष मिलता है, उसके पक्ष और विपक्ष के कारण, क्या अपेक्षा करें, और वे अवधियाँ जिनमें वह सबसे अधिक सक्रिय रहने की संभावना है।

## करियर और व्यवसाय — बहुत मज़बूत (8.6/10)

करियर का विचार मुख्यतः दसवें भाव (पद और कर्म) से होता है, साथ में छठे (रोज़ का काम और सेवा) और दूसरे (कमाई) से। शनि लगातार प्रयास, सूर्य अधिकार और बुध कौशल दिखाता है। दशमांश (D10) से तस्वीर और साफ़ होती है।

**निष्कर्ष:** करियर आपकी कुंडली के बेहतर समर्थित क्षेत्रों में से है: वास्तविक उन्नति, ज़िम्मेदारी और मान-सम्मान की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

### क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 37 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- शनि यहाँ बैठे हैं, और भाव 10 में पाप ग्रह मेहनत से ऊर्जा और परिणाम देता है।
- भाव 6 के स्वामी मंगल भाव 3 (साहस, भाई-बहन) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।

### क्या रोकता है

- भाव 10 के स्वामी गुरु कठिन भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- स्वाभाविक कारक सूर्य आपकी कुंडली में कम समर्थित है (100 में से 38)।

### क्या अपेक्षा करें

- आपकी कुंडली के दसवें भाव के अनुकूल क्षेत्र: उद्योग और विनिर्माण, बड़े संगठन, भूमि और कृषि, खनन और तेल, ढाँचेबद्ध दीर्घकालिक सेवा (शनि द्वारा दर्शाए गए, जो आपके दसवें भाव पर सबसे प्रबल प्रभाव हैं)।
- बल की दूसरी धारा बुध है, जो आपकी कुंडली का एक मज़बूत ग्रह है: व्यापार, लेखा और वित्त, लेखन और मीडिया, शिक्षण, आईटी और संचार।
- दसवें भाव के स्वामी भाव 6 में हैं, जो सेवा, उपचार या प्रतिस्पर्धी क्षेत्र की ओर संकेत करता है।

### विस्तार से: करियर और व्यवसाय

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 10 है। यह मीन राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है।

दसवें भाव में मीन राशि कल्पनाशील और करुणामय है: उपचार, कला, आध्यात्मिकता, जल से जुड़े व्यवसाय और पर्दे के पीछे का काम आपके अनुकूल हैं, और स्पष्ट लक्ष्य विचारों को परिणाम में बदलने में मदद करते हैं।

आपके दसवें भाव का स्वामी छठे भाव में बैठा है: सेवा, उपचार, कानून, प्रतिस्पर्धा और समस्या-समाधान आपके अनुकूल हैं; आप वे कठिनाइयाँ सँभालकर सफल होते हैं जिनसे दूसरे बचते हैं, और नौकरी अक्सर व्यवसाय से अधिक स्थिर रहती है।

दसवें भाव में शनि कड़ी मेहनत से धीमी पर टिकाऊ उन्नति देता है; अनुशासन, धैर्य और ज़िम्मेदारी आपका मार्ग हैं, और सफलता आमतौर पर तीस के दशक की शुरुआत के बाद सबसे मज़बूत होती है।

नौकरी या व्यवसाय? आपकी कुंडली किसी संगठन या संस्था में नौकरी की ओर झुकी है, जहाँ स्थिर उन्नति, पद और सुरक्षा मायने रखते हैं; भरोसेमंद साझेदार के साथ और ठोस अनुभव के बाद व्यवसाय संभव है।

आयु 18 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–बुध (17/06/2013 से 04/08/2015 तक, आयु 18–20); गुरु–शुक्र

SAMPLE

(09/07/2016 से 11/03/2019 तक, आयु 21–23); शनि–शनि (27/08/2024 से 31/08/2027 तक, आयु 29–32)।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 31/01/2027 से 10/06/2027 तक (आयु 31): गुरु कर्क में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शनि दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 02/10/2030 से 19/02/2031 तक (आयु 35): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 07/05/2041 से 05/08/2041 तक (आयु 45–46): गुरु कन्या में और शनि कन्या में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 11/12/2049 से 27/09/2050 तक (आयु 54–55): गुरु कर्क में और शनि मकर में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – सूर्य दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

## समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50)।

## सलाह

- ऊँचा लक्ष्य रखें और नेतृत्व की भूमिकाएँ लें; आपकी कुंडली मान-सम्मान का साथ देती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी सूर्य है। इसे मज़बूत करने के लिए: रविवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल, नारंगी पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ सूर्याय नमः)।

SAMPLE

# धन और आर्थिक स्थिति — बहुत मज़बूत (8.3/10)

धन का विचार दूसरे भाव (बचत और पारिवारिक धन), ग्यारहवें (आय और लाभ) और नौवें (भाग्य) से होता है। गुरु और शुक्र समृद्धि के नैसर्गिक कारक हैं। होरा कुंडली (D2) से और विवरण मिलता है।

**निष्कर्ष:** धन अच्छी तरह समर्थित है: आपकी कुंडली कमाने और जमा करने की अच्छी क्षमता दिखाती है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

## क्या सहारा देता है

- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।
- दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी (चंद्र और मंगल) जुड़े हुए हैं (एक-दूसरे को देखते हुए), जो कमाई और बचत का शास्त्रीय धन योग है।

## क्या रोकता है

- केतु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

## क्या अपेक्षा करें

- आपकी आय सबसे अधिक तकनीकी कौशल, संपत्ति या शारीरिक उद्यम के रास्ते आने की संभावना है (मंगल द्वारा दर्शाई गई, जो ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं)।
- बचत और पारिवारिक धन चंद्र से दर्शाया जाता है, जो दूसरे भाव के स्वामी हैं और जनता से व्यवहार, खान-पान, यात्रा या देखभाल से जुड़े हैं।
- ग्यारहवें भाव के स्वामी सरल भाव में नहीं हैं, इसलिए आय मेहनत से बढ़ती है और जोखिम के बजाय नियमित बचत से बेहतर बनती है।

## विस्तार से: धन और आर्थिक स्थिति

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 2 है। यह कर्क राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी चंद्र भाव 9 में बैठा है।

दूसरे भाव में कर्क राशि धन को परिवार, घर और भावनात्मक सुरक्षा से जोड़ती है; आप अपनों के लिए बचाते हैं, और संपत्ति, भोजन या घर से जुड़ी आमदनी सहायक हो सकती है।

आपके दूसरे भाव का स्वामी नौवें भाव में बैठा है: भाग्य आपके वित्त का साथ देता है, और शिक्षण, कानून, यात्रा, धर्म या पिता से लाभ होता है; धन अच्छे कर्म और उदारता के साथ आता है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

आपके दूसरे भाव (बचत) में 27 अष्टकवर्ग अंक हैं और ग्यारहवें भाव (आमदनी) में 35; औसत 28 है। यह औसत आधार है: स्थिर प्रयास और नियमित बचत परिणाम तय करते हैं।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले

SAMPLE

भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 13/07/2034 से 09/04/2035 तक (आयु 39): गुरु मीन में और शनि कर्क में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 10/09/2036 से 19/11/2036 तक (आयु 41): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 28/04/2037 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 23/01/2038 से 13/05/2038 तक (आयु 42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

### समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48)।

### सलाह

- नियमित और योजनाबद्ध ढंग से निवेश करें; आपकी कुंडली वास्तविक संचय का साथ देती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

SAMPLE

# विवाह और साझेदारी — मज़बूत (6.2/10)

विवाह का विचार सातवें भाव (जीवनसाथी और साझेदारी) से होता है, साथ में दूसरे (पारिवारिक जीवन) और बारहवें (निकटता और शय्या-सुख) से। शुक्र विवाह का कारक है (और स्त्री की कुंडली में गुरु पति का कारक)। यहाँ नवांश (D9) अत्यंत आवश्यक है।

**निष्कर्ष:** विवाह और साझेदारी अच्छी तरह समर्थित हैं: आपकी कुंडली स्थिर, स्नेहपूर्ण रिश्ते के पक्ष में है।

## क्या सहारा देता है

- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- गुरु वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।

## क्या रोकता है

- भाव 7 के स्वामी गुरु कठिन भाव 6 (प्रतियोगिता, कर्ज़) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- सूर्य, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

## क्या अपेक्षा करें

- सातवाँ भाव धनु राशि में पड़ता है और उसके स्वामी गुरु भाव 6 में हैं। जीवनसाथी समझदार, दयालु और सुशिक्षित, अच्छे संस्कारों वाला होने की संभावना है (गुरु द्वारा दर्शाया गया)।
- शुक्र भाव 12 में है और गुरु भाव 6 में; शुक्र, गुरु और सातवें भाव के स्वामी की दशाएँ विवाह और रिश्ते में महत्वपूर्ण बदलावों के सबसे संभावित समय हैं।
- शनि सातवें भाव को प्रभावित करते हैं: विवाह अक्सर कुछ देर से होता है, परिपक्व या गंभीर जीवनसाथी के साथ, और समय के साथ मज़बूत होता है।

## विस्तार से: विवाह और साझेदारी

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 7 है। यह धनु राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी गुरु भाव 6 में बैठा है।

सातवें भाव में धनु राशि एक प्रसन्न, ईमानदार और स्वतंत्रता-प्रेमी साथी की ओर संकेत करती है, जो शायद अलग पृष्ठभूमि या स्थान से हो; साझा मूल्य और यात्रा बंधन में मदद करते हैं।

आपके सातवें भाव का स्वामी छठे भाव में बैठा है: साथी से काम या सेवा के माध्यम से भेंट हो सकती है, और रिश्ते को धैर्य चाहिए, क्योंकि रोज़ के कर्तव्यों और छोटी असहमतियों को सावधानी से सँभालना पड़ता है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

अपनी राशि वृषभ में शुक्र आपको स्नेही, इंद्रिय-सुखप्रिय और वफ़ादार बनाता है; आप सुख-सुविधा, अच्छे भोजन और स्थायी प्रतिबद्धता को महत्व देते हैं।

आयु 21 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–शुक्र (09/07/2016 से 11/03/2019 तक, आयु 21–23); शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 22/11/2026 से 31/01/2027 तक (आयु 31): गुरु सिंह में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 02/10/2030 से 19/02/2031 तक (आयु 35): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले

SAMPLE

भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 22/08/2032 से 31/10/2032 तक (आयु 37): गुरु धनु में और शनि मिथुन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।
- 06/02/2043 से 05/08/2043 तक (आयु 47–48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 14/09/2043 से 13/12/2043 तक (आयु 48): गुरु धनु में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, इसलिए ये विषय सामने आते हैं।

### समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–गुरु (14/02/2041 से 28/08/2043 तक, आयु 45–48); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

### सलाह

- विवाह का साथ है; रिश्ते को समय और ईमानदार संवाद दें।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

SAMPLE

# संतान — मध्यम (4.9/10)

संतान का विचार पाँचवें भाव से होता है, और नौवाँ भाव पाँचवें से पाँचवाँ होने के कारण साथ में देखा जाता है। गुरु संतान का कारक है। सप्तांश (D7) से और विवरण मिलता है।

**निष्कर्ष:** संतान के विषय मध्यम रूप से समर्थित हैं; सही समय और स्वास्थ्य की अच्छी आदतें मदद करती हैं।

## क्या सहारा देता है

- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- शुक्र वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।

## क्या रोकता है

- भाव 5 के स्वामी शुक्र कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- राहु, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

## क्या अपेक्षा करें

- पाँचवें भाव के स्वामी शुक्र भाव 12 में हैं; गुरु की, शुक्र की और पाँचवें भाव के ग्रहों की अवधियाँ संतान संबंधी विषयों के सबसे संभावित समय हैं। यह अध्याय संतानों की संख्या नहीं बताता।

## विस्तार से: संतान

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 5 है। यह तुला राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

पाँचवें भाव में तुला राशि आकर्षक, निष्पक्ष संतान की ओर संकेत करती है जिसकी कलात्मक दृष्टि होती है; घर में सामंजस्य प्राथमिकता है।

आपके पाँचवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: संतान दूर रह सकती है या विदेश में पढ़ सकती है, या संतान तक का मार्ग खर्च या दूरी से जुड़ा हो सकता है; संतान के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि।

पाँचवें भाव में राहु अपरंपरागत, महत्वाकांक्षी मन और तकनीक या असामान्य विषयों में रुचि देता है; संतान के मामलों में अच्छा चिकित्सकीय मार्गदर्शन मदद करता है, और सट्टे से बचना बेहतर है।

आयु 22 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: गुरु–शुक्र (17/06/2017 से 11/03/2019 तक, आयु 22–23); शनि–शनि (27/08/2024 से 31/08/2027 तक, आयु 29–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39)।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/08/2036 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने

SAMPLE

वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 23/01/2038 से 13/05/2038 तक (आयु 42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – राहु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 04/10/2041 से 12/01/2042 तक (आयु 46): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 11/06/2042 से 30/08/2042 तक (आयु 46–47): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

## समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41); शनि–राहु (10/04/2038 से 14/02/2041 तक, आयु 42–45)।

## सलाह

- परिणाम ठीक-ठाक हैं; स्वास्थ्य की अच्छी आदतें और धैर्य मदद करते हैं।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

SAMPLE

# शिक्षा और विद्या — मध्यम (4.6/10)

प्रारंभिक शिक्षा का विचार चौथे भाव से, बुद्धि का पाँचवें से और उच्च शिक्षा का नौवें से होता है। बुध और गुरु इसके कारक हैं। चतुर्विंशांश (D24) से और विवरण मिलता है।

**निष्कर्ष:** शिक्षा मध्यम रूप से समर्थित है: परिणाम नियमित दिनचर्या और सही विषय पर निर्भर करते हैं।

### क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 35 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।

### क्या रोकता है

- भाव 4 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- भाव 5 के स्वामी शुक्र कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।

### क्या अपेक्षा करें

- आपके लिए उपयुक्त विषय: कला, डिज़ाइन, संगीत, फ़ैशन और होटल प्रबंधन (शुक्र द्वारा दर्शाए गए, जो पाँचवें भाव के स्वामी हैं)।
- आपकी पढ़ाई को सबसे अच्छा सहारा बुध से मिलता है, जो आपकी कुंडली में बुध और गुरु में से अधिक बलवान है: विश्लेषण, अभ्यास और संवाद।

### विस्तार से: शिक्षा और विद्या

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 5 है। यह तुला राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

पाँचवें भाव में तुला राशि संतुलित मन देती है जो दोनों पक्ष तौलता है; कानून, डिज़ाइन, कला और कूटनीति आपके अनुकूल हैं, और अध्ययन-समूह मदद करते हैं।

आपके पाँचवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: घर से दूर या विदेश में पढ़ाई; शोध, ध्यान और एकांत में किए जाने वाले विषय आपके अनुकूल हैं, और शिक्षा पर खर्च होता है।

पाँचवें भाव में राहु अपरंपरागत मन और तकनीक, विदेशी भाषाओं तथा असामान्य विषयों की प्रतिभा देता है; शॉर्टकट से बचें।

वृषभ में बुध धीरे और व्यावहारिक ढंग से सोचता है: आप दोहराकर सीखते हैं, अच्छा याद रखते हैं और मधुर बोलते हैं।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/12/2028 से 31/03/2029 तक (आयु 33): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 07/10/2029 से 25/01/2030 तक (आयु 34): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले

SAMPLE

भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 04/10/2041 से 12/01/2042 तक (आयु 46): गुरु तुला में और शनि तुला में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – गुरु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

## समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)।

## सलाह

- प्रतिभा से अधिक नियमित अभ्यास मायने रखता है; ऐसा विषय चुनें जो आपको पसंद हो।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

SAMPLE

# स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति — प्रयास ज़रूरी (3.7/10)

स्वास्थ्य का विचार पहले भाव (शरीर और जीवन-शक्ति), छठे (रोग और स्वास्थ्य-लाभ) और आठवें (पुराने रोग और आयु) से होता है। सूर्य जीवन-शक्ति और चंद्रमा मन दिखाता है। त्रिंशांश (D30) बताता है कि किन क्षेत्रों में सावधानी चाहिए। यह भाग केवल पारंपरिक मार्गदर्शन है और कभी भी डॉक्टर की सलाह का विकल्प नहीं है।

**निष्कर्ष:** स्वास्थ्य पर सचेत ध्यान चाहिए: नियमित जाँच, आराम और अनुशासित दिनचर्या सामान्य से अधिक मायने रखती है, विशेषकर परीक्षा वाली अवधियों में।

## क्या सहारा देता है

- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- बुध मित्र राशि में हैं, जो सहायक है।
- गुरु, स्वाभाविक शुभ ग्रह, इस भाव में बैठकर सहारा देते हैं।

## क्या रोकता है

- भाव 1 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- सूर्य, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।

## क्या अपेक्षा करें

- लग्न, छठे और आठवें भाव के अनुसार ध्यान रखने योग्य शरीर के अंग: कंधे, बाँहें, फेफड़े और नसें; प्रजनन और उत्सर्जन अंग; घुटने, हड्डियाँ और जोड़। ये ध्यान में रखने की प्रवृत्तियाँ हैं, निदान नहीं।
- स्वास्थ्य की किसी भी चिंता पर डॉक्टर को दिखाएँ; ज्योतिष सहारा देता है, चिकित्सा सलाह की जगह कभी नहीं लेता।

## विस्तार से: स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 1 है। यह मिथुन राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी बुध भाव 12 में बैठा है।

लग्न में मिथुन राशि पतली, बेचैन, नर्वस ऊर्जा देती है; कंधे, बाँहें, फेफड़े और नसों को आराम चाहिए, और अधिक सोचने से नींद आसानी से बिगड़ती है।

आपके लग्न का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: जीवनी-शक्ति आसानी से खर्च हो जाती है, इसलिए नींद, विश्राम और एकांत ज़रूरी हैं; अस्पताल या विदेश में रहना संभव है, और आध्यात्मिक साधना आपको पुनः ऊर्जा देती है।

पहले भाव में सूर्य मज़बूत जीवनी-शक्ति, प्रभावशाली उपस्थिति और गर्मी, सिरदर्द तथा आँखों के तनाव की ओर झुकाव देता है; पर्याप्त पानी पिएँ और विश्राम का सम्मान करें।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/12/2028 से 31/03/2029 तक (आयु 33): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 07/10/2029 से 25/01/2030 तक (आयु 34): गुरु तुला में और शनि मेष में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

SAMPLE

- 19/11/2036 से 28/04/2037 तक (आयु 41): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

### समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)।

### सलाह

- छोटे लक्षणों को अनदेखा न करें; नियमित जाँच और व्यायाम मदद करते हैं।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी सूर्य है। इसे मज़बूत करने के लिए: रविवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल, नारंगी पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ सूर्याय नमः)।

SAMPLE

# घर, संपत्ति और वाहन — मज़बूत (6.7/10)

घर और संपत्ति का विचार चौथे भाव से होता है, और लाभ का ग्यारहवें से। मंगल भूमि का तथा शुक्र वाहन और सुख-सुविधा का कारक है। चतुर्थांश (D4) से और विवरण मिलता है।

**निष्कर्ष:** घर, संपत्ति और वाहन अच्छी तरह समर्थित हैं: घर में सुख और संपत्ति में लाभ की आशा रखें, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

## क्या सहारा देता है

- इस भाव की राशि में 35 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो मज़बूत आधार है।
- बुध वर्गोत्तम हैं (D1 और D9 में एक ही राशि), जो स्थायी बल का संकेत है।
- भाव 2 के स्वामी चंद्र भाव 9 (भाग्य, पिता) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।

## क्या रोकता है

- भाव 4 के स्वामी बुध कठिन भाव 12 (खर्च, विदेश) में हैं, इसलिए इन विषयों में देरी, अधिक मेहनत या घुमावदार रास्ता मिलता है।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

## क्या अपेक्षा करें

- चौथे भाव के स्वामी बुध भाव 12 में हैं; मंगल, शुक्र, बुध और ग्यारहवें भाव के स्वामी की अवधियाँ घर, ज़मीन या वाहन खरीदने के सबसे संभावित समय हैं।
- चंद्र, जो माता और मन की शांति दर्शाते हैं, आपकी कुंडली में सुखद स्थिति में हैं।

## विस्तार से: घर, संपत्ति और वाहन

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 4 है। यह कन्या राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी बुध भाव 12 में बैठा है।

चौथे भाव में कन्या राशि साफ़-सुथरे, व्यावहारिक और व्यवस्थित घर की ओर संकेत करती है; संपत्ति के निर्णय सावधानी भरे होते हैं, और घर की स्वच्छता तथा स्वास्थ्य मायने रखते हैं।

आपके चौथे भाव का स्वामी बारहवें भाव में बैठा है: आप जन्मस्थान से दूर या विदेश में रह सकते हैं, और घर पर खर्च होता है; विदेश में संपत्ति संभव है।

इस भाव में कोई ग्रह नहीं बैठा है, इसलिए इसके फल मुख्यतः इसके स्वामी और इसे देखने वाले ग्रहों के माध्यम से मिलते हैं।

आयु 24 के बाद पहली दृढ़ता से सहायक दशाएँ ये हैं: शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–केतु (24/01/2046 से 21/01/2047 तक, आयु 50–51)।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने

SAMPLE

वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

- 17/12/2046 से 27/03/2047 तक (आयु 51): गुरु मीन में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 31/03/2048 से 18/08/2048 तक (आयु 52–53): गुरु वृषभ में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 05/01/2049 से 16/03/2049 तक (आयु 53): गुरु वृषभ में और शनि धनु में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

## समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54); बुध–चंद्र (27/09/2050 से 27/02/2052 तक, आयु 55–56)।

## सलाह

- घर और संपत्ति का साथ है; खरीद की योजना सावधानी से बनाएँ।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी मंगल है। इसे मज़बूत करने के लिए: मंगलवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग लाल पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ मंगलाय नमः)।

SAMPLE

# यात्रा और विदेश से संबंध — प्रबल संकेत (7.8/10)

विदेश यात्रा और विदेश में निवास का विचार बारहवें भाव से, लंबी यात्राओं का नौवें से और छोटी यात्राओं का तीसरे से होता है। राहु और चंद्रमा गतिशीलता और विदेशी संबंध दिखाते हैं।

**निष्कर्ष:** विदेश यात्रा, पढ़ाई या काम आपकी कुंडली में अच्छी तरह संकेतित है, विशेषकर नीचे बताई अवधियों में।

### क्या सहारा देता है

- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।
- गुरु इस भाव को देखते हैं, जो इसके विषयों के लिए शास्त्रीय आशीर्वाद है।

### क्या रोकता है

- इस भाव की राशि में केवल 22 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो कमज़ोर आधार है।
- शनि, पाप ग्रह, इस भाव को देखकर तनाव जोड़ते हैं।

### क्या अपेक्षा करें

- बारहवें भाव के स्वामी शुक्र भाव 12 में हैं, और राहु भाव 5 में है; राहु की, बारहवें और नवें भाव के स्वामियों की अवधियाँ विदेश यात्रा, पढ़ाई या बसने के सबसे संभावित समय हैं।

### विस्तार से: यात्रा और विदेश से संबंध

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 12 है। यह वृषभ राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शुक्र भाव 12 में बैठा है।

बारहवें भाव में वृषभ राशि सुख-सुविधा, धन, कला या कृषि के माध्यम से विदेश से जुड़ाव की ओर संकेत करती है; अच्छे भोजन वाली स्थिर जगहें आपके अनुकूल हैं, और आप आसानी से बस जाते हैं।

आपके बारहवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में ही बैठा है: विदेश में निवास या लंबी यात्राओं का मज़बूत संकेत, विदेश में खर्च और एक शांत विश्राम-स्थल के साथ।

बारहवें भाव में बुध विदेशी व्यापार, अध्ययन और संवाद के अनुकूल है; भाषाएँ और लेखन आपको विदेश से जोड़ते हैं।

बारहवें भाव में शुक्र विदेश में सुख और यात्रा तथा विलासिता का आनंद देता है; विदेशी साझेदारियाँ और कलात्मक उपक्रम।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/06/2031 से 17/10/2031 तक (आयु 36): गुरु वृश्चिक में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 15/03/2032 से 03/06/2032 तक (आयु 36): गुरु मकर में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 19/11/2036 से 28/04/2037 तक (आयु 41): गुरु वृषभ में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत

SAMPLE

समय-खंडों में से एक है।

- 21/02/2044 से 30/06/2044 तक (आयु 48–49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 08/09/2044 से 07/03/2045 तक (आयु 49): गुरु मकर में और शनि वृश्चिक में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक बुध – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

## समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); बुध–बुध (28/08/2043 से 24/01/2046 तक, आयु 48–50); बुध–शुक्र (21/01/2047 से 21/11/2049 तक, आयु 51–54)।

## सलाह

- विदेशी अवसर अच्छी तरह संकेतित हैं; कागज़ात और कौशल पहले से तैयार रखें।

SAMPLE

# आध्यात्मिक जीवन — मौजूद (4.6/10)

आध्यात्मिक जीवन का विचार नौवें भाव (धर्म), बारहवें (मोक्ष) और पाँचवें (मंत्र और भक्ति) से होता है। गुरु और केतु इसके कारक हैं। विंशांश (D20) से और विवरण मिलता है।

**निष्कर्ष:** मध्यम आध्यात्मिक रुचि दिखती है, जो उम्र और सही मार्गदर्शन के साथ बढ़ती है।

### क्या सहारा देता है

- भाव 9 के स्वामी शनि भाव 10 (करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) में हैं, जो सहायक भाव है; इससे ये विषय उस क्षेत्र से जुड़ते हैं।
- भाव 12 के स्वामी शुक्र अपने ही घर में हैं, जिससे इस भाव की हर बात को बल मिलता है।
- शुक्र अपनी राशि में हैं, इसलिए वे मज़बूत फल दे सकते हैं।

### क्या रोकता है

- चंद्र, स्वाभाविक पाप ग्रह, इस भाव में बैठकर दबाव या देरी जोड़ते हैं।
- इस भाव की राशि में केवल 22 सर्वाष्टकवर्ग अंक हैं (औसत 28), जो कमज़ोर आधार है।

### क्या अपेक्षा करें

- केतु भाव 11 में है और गुरु भाव 6 में; नवें भाव के स्वामी शनि भाव 10 में हैं। धर्म, ध्यान और सेवा में रुचि गुरु, केतु और नवें भाव के स्वामी की अवधियों में गहरी होती है।

### विस्तार से: आध्यात्मिक जीवन

इस क्षेत्र का मुख्य भाव, भाव 9 है। यह कुंभ राशि में पड़ता है, और इसका स्वामी शनि भाव 10 में बैठा है।

नौवें भाव में कुंभ राशि सार्वभौमिक, मानवतावादी आस्था देती है; विज्ञान और अध्यात्म मिलते हैं, और समाज की सेवा साधना बनती है।

आपके नौवें भाव का स्वामी दसवें भाव में बैठा है: आपका काम और कर्तव्य ही आपका धर्म बन जाता है, और भाग्य करियर तथा जनसेवा से आता है।

नौवें भाव में चंद्र भक्तिपूर्ण, भावनात्मक आस्था और तीर्थयात्रा के प्रति प्रेम देता है; माता का आशीर्वाद मायने रखता है।

**ध्यान देने योग्य वर्ष** — गुरु और शनि वे दो धीमे ग्रह हैं जो तय करते हैं कि जीवन की घटनाएँ वास्तव में कब होती हैं। जब दोनों एक साथ किसी क्षेत्र के भाव को प्रभावित करते हैं (इसे "दोहरा गोचर" कहते हैं), तब उस क्षेत्र के विषय सामने आने की प्रवृत्ति रखते हैं। अगले 25 वर्षों में आपके समय-खंड:

- 31/01/2027 से 10/06/2027 तक (आयु 31): गुरु कर्क में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शनि दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 27/11/2027 से 25/02/2028 तक (आयु 32): गुरु कन्या में और शनि मीन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – बुध दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 05/05/2030 से 02/10/2030 तक (आयु 34–35): गुरु तुला में और शनि वृषभ में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – केतु दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 04/04/2034 से 13/07/2034 तक (आयु 38–39): गुरु मीन में और शनि मिथुन में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – शुक्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

SAMPLE

- 10/09/2036 से 19/11/2036 तक (आयु 41): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – चंद्र दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।
- 28/04/2037 से 25/09/2037 तक (आयु 41–42): गुरु मिथुन में और शनि सिंह में, दोनों मिलकर इस क्षेत्र को दिखाने वाले भाव को प्रभावित करते हैं, और उसी समय सहायक शनि – मंगल दशा भी चल रही है, इसलिए यह आपके अधिक मज़बूत समय-खंडों में से एक है।

### समय

- अभी चल रही: शनि – शनि (31/08/2027 तक) सीधे इस क्षेत्र को छूती है, और इसके लिए उसका स्वर शुभ है।
- आगे की सबसे अच्छी अवधियाँ: शनि–शनि (22/11/2026 से 31/08/2027 तक, आयु 31–32); शनि–बुध (31/08/2027 से 10/05/2030 तक, आयु 32–34); शनि–शुक्र (19/06/2031 से 19/08/2034 तक, आयु 36–39); शनि–चंद्र (01/08/2035 से 01/03/2037 तक, आयु 40–41)।

### सलाह

- आध्यात्मिक रुचि मौजूद है; सरल दैनिक साधना मदद करती है।
- इस क्षेत्र की सबसे कमज़ोर कड़ी गुरु है। इसे मज़बूत करने के लिए: गुरुवार को शुभ कर्मों का नियमित दिन रखें, रंग पीला पहनें या अपनाएँ, और श्रद्धा से इसके मंत्र का जाप करें (ॐ गुरवे नमः)।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — भावों और उनके कारकों का विचार; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — भाव-अनुसार फल; वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी) — भावों के फल।*

SAMPLE

# वर्ग कुंडलियों से फल

## D9 — नवांश (जीवनसाथी, धर्म)

नवांश सबसे महत्वपूर्ण वर्ग कुंडली है। यह विवाह और जीवनसाथी, भीतरी चरित्र, धर्म और प्रत्येक ग्रह की वास्तविक शक्ति दिखाता है। नवांश में बलवान ग्रह भरोसेमंद फल देता है, भले ही वह जन्म कुंडली में कमज़ोर दिखे।

इस कुंडली का लग्न: वृषभ

**नवांश लग्न वृषभ:** आप स्नेही, वफ़ादार और रक्षा करने वाले हैं। आपका सातवाँ भाव वृश्चिक है, जिसका स्वामी मंगल है, इसलिए साथी प्रायः तीव्र, भावुक और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले होते हैं। किसी भी ओर से अधिकार-भाव को संभालना है; भरोसा और साझा दिनचर्या आपके वैवाहिक जीवन को सबसे अच्छा बनाते हैं।

| ग्रह | राशि | भाव | बल | इस कुंडली में स्थिति |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | तुला | 6 | नीच | कमज़ोर |
| चंद्र | मकर | 9 | सम राशि | अच्छी स्थिति |
| मंगल | कन्या | 5 | शत्रु राशि | अच्छी स्थिति |
| बुध | वृषभ | 1 | मित्र राशि | अच्छी स्थिति |
| गुरु | वृश्चिक | 7 | मित्र राशि | अच्छी स्थिति |
| शुक्र | वृषभ | 1 | स्वराशि | मज़बूत |
| शनि | कर्क | 3 | शत्रु राशि | मध्यम |
| राहु | धनु | 8 | सम राशि | सावधानी चाहिए |
| केतु | मिथुन | 2 | सम राशि | मध्यम |

इस कुंडली के लग्न का स्वामी शुक्र भाव 1 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत) में है, जो इस कुंडली के विषयों को सहारा देता है।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — षोडश वर्ग और उनके उपयोग।*

SAMPLE

# आपकी दशाएँ

विंशोत्तरी पद्धति में जीवन को नौ ग्रहों द्वारा एक तय क्रम में चलाई जाने वाली अवधियों (महादशाओं) में बाँटा गया है। हर अवधि उप-अवधियों (अंतर्दशाओं) में बँटी है। किसी अवधि के फल इस पर निर्भर करते हैं कि आपकी अपनी कुंडली में उसका स्वामी ग्रह किसका प्रतिनिधि है: किन भावों का स्वामी है, किस भाव में बैठा है और कितना बलवान है।

## शनि महादशा: 27/08/2024 से 28/08/2043 तक (अभी चल रही है)

शनि की दशा धैर्य, कड़ी मेहनत और ज़िम्मेदारी माँगती है। परिणाम धीरे आते हैं पर टिकाऊ होते हैं। यह अनुशासन बनाने, दूसरों की सेवा करने, जोड़ों का ध्यान रखने और शॉर्टकट से बचने का समय है।

शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है।

**कुल स्वर: शुभ।** यह अवधि मुख्यतः इन्हें सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ), संतान (शुभ)।

सबसे सहायक अंतर्दशाएँ: शनि (27/08/2024), शुक्र (19/06/2031)। जिन अंतर्दशाओं में अधिक सावधानी चाहिए: सूर्य (19/08/2034), मंगल (01/03/2037)।

### शनि – शनि: 27/08/2024 से 31/08/2027 तक

महादशा स्वामी की अपनी ही यह अंतर्दशा उसके फलों को और गहरा करती है। शनि आपके भाव 8 और 9 (अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु; भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 10, जो करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), करियर और व्यवसाय (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

### शनि – बुध: 31/08/2027 से 10/05/2030 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। बुध आपके भाव 1 और 4 (स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत; घर, माता, संपत्ति, वाहन और मन की शांति) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: यात्रा और विदेश से संबंध (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

### शनि – केतु: 10/05/2030 से 19/06/2031 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। केतु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी मंगल के अनुसार फल देता है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 11, जो आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ)।

### शनि – शुक्र: 19/06/2031 से 19/08/2034 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र हैं, जिससे वे सहज रूप से साथ काम करते हैं। शुक्र आपके भाव 5 और 12 (संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 12, जो खर्च, विदेश, आध्यात्मिक जीवन और नींद का भाव है। यह अपनी राशि में है, जिससे इसे आत्मविश्वास और स्थिरता मिलती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), संतान (शुभ)।

SAMPLE

### शनि – सूर्य: 19/08/2034 से 01/08/2035 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। सूर्य आपके भाव 3 (साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 1, जो स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और नई शुरुआत का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: अधिकतर अनुकूल। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (अधिकतर अनुकूल), स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति (अधिकतर अनुकूल)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

### शनि – चंद्र: 01/08/2035 से 01/03/2037 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। चंद्र आपके भाव 2 (धन, परिवार और वाणी) का स्वामी है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 9, जो भाग्य, पिता, गुरु, धर्म और लंबी यात्राएँ का भाव है। यह सम राशि में है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: आध्यात्मिक जीवन (शुभ), धन और आर्थिक स्थिति (शुभ)।

### शनि – मंगल: 01/03/2037 से 10/04/2038 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में मित्र नहीं हैं, इसलिए दोनों विषयों के बीच कुछ खिंचाव संभव है; धैर्य और उपाय सहायक होते हैं। मंगल आपके भाव 6 और 11 (प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु; आय, लाभ, मित्र और इच्छापूर्ति) का स्वामी है, और यह उपचय भाव (3, 6, 10 या 11) में है, जिसके फल समय के साथ प्रयास से बढ़ते हैं — भाव 3, जो साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

### शनि – राहु: 10/04/2038 से 14/02/2041 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। राहु छाया ग्रह है, जो अपनी राशि और उसके स्वामी शुक्र के अनुसार फल देता है, और यह आपकी कुंडली में सहायक भाव (केंद्र या त्रिकोण) में है, जो सामान्यतः अच्छे फल देता है — भाव 5, जो संतान, शिक्षा, बुद्धि और रचनात्मकता का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: संतान (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी 6/8 संबंध में हैं, इसलिए महादशा और अंतर्दशा के विषय एक-दूसरे के विपरीत खिंच सकते हैं।

### शनि – गुरु: 14/02/2041 से 28/08/2043 तक

महादशा और अंतर्दशा के स्वामी आपस में सम हैं, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपकी कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। गुरु आपके भाव 7 और 10 (विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार; करियर, पद-प्रतिष्ठा और अधिकार) का स्वामी है, और यह कठिन भाव (6, 8 या 12) में है, इसलिए इसके विषयों में सावधानी और धैर्य चाहिए — भाव 6, जो प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग, सेवा और शत्रु का भाव है। यह मित्र राशि में है, जो इसके फलों को सहारा देती है। स्वर: शुभ। सक्रिय करती है: करियर और व्यवसाय (शुभ), आध्यात्मिक जीवन (शुभ)। आपकी कुंडली में दोनों स्वामी स्थिति के अनुसार एक-दूसरे का सहारा देते हैं।

*आधार: बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है) — दशा और अंतर्दशा के फल; मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — दशाओं के फल; कालिदास का उत्तर कालामृत — दशा फल।*

SAMPLE

# आपके जीवन की समय-रेखा

यहाँ अगले बीस वर्षों की अंतर्दशाएँ आपकी आयु, आपकी कुंडली में उनके स्वामी के भावों, और आपके लग्न के लिए उनके कुल स्वभाव के साथ दी गई हैं।

| आयु | अवधि | से | तक | स्वभाव | किन विषयों पर ध्यान |
|---|---|---|---|---|---|
| 29–32 | **शनि – शनि** | 27/08/2024 | 31/08/2027 | सहायक | आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय, संतान |
| 32–34 | शनि – बुध | 31/08/2027 | 10/05/2030 | मिश्रित | शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन |
| 34–36 | शनि – केतु | 10/05/2030 | 19/06/2031 | मिश्रित | आध्यात्मिक जीवन |
| 36–39 | शनि – शुक्र | 19/06/2031 | 19/08/2034 | मिश्रित | संतान, यात्रा और विदेश से संबंध, शिक्षा और विद्या |
| 39–40 | शनि – सूर्य | 19/08/2034 | 01/08/2035 | सावधानी चाहिए | स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, करियर और व्यवसाय, यात्रा और विदेश से संबंध |
| 40–41 | शनि – चंद्र | 01/08/2035 | 01/03/2037 | मिश्रित | धन और आर्थिक स्थिति, आध्यात्मिक जीवन, विवाह और साझेदारी |
| 41–42 | शनि – मंगल | 01/03/2037 | 10/04/2038 | सावधानी चाहिए | करियर और व्यवसाय, धन और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति |
| 42–45 | शनि – राहु | 10/04/2038 | 14/02/2041 | मिश्रित | संतान, यात्रा और विदेश से संबंध |
| 45–48 | शनि – गुरु | 14/02/2041 | 28/08/2043 | सावधानी चाहिए | करियर और व्यवसाय, विवाह और साझेदारी, धन और आर्थिक स्थिति |
| 48–50 | बुध – बुध | 28/08/2043 | 24/01/2046 | मिश्रित | शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति, घर, संपत्ति और वाहन |
| 50–51 | बुध – केतु | 24/01/2046 | 21/01/2047 | मिश्रित | आध्यात्मिक जीवन |

स्वभाव: "सहायक" अवधियों के स्वामी आपके लग्न के लिए शुभ ग्रह हैं; "सावधानी चाहिए" वाली अवधियों के स्वामी अशुभ ग्रह हैं; "मिश्रित" बीच की स्थिति है या कठिन भाव से कमज़ोर हुई है।

SAMPLE

# आपके जीवन में शनि साढ़ेसाती

शनि को एक राशि पार करने में लगभग ढाई वर्ष लगते हैं। जब वह आपकी चंद्र राशि से पिछली राशि, आपकी चंद्र राशि और उससे अगली राशि से गुज़रता है, तो साढ़े सात वर्ष की इस अवधि को साढ़ेसाती कहते हैं। यह केवल कठिनाई का नहीं, बल्कि ज़िम्मेदारी, मेहनत और भीतरी विकास का समय है। बहुत से लोग ईमानदारी और धैर्य से काम करके साढ़ेसाती के दौरान स्थायी उपलब्धियाँ पाते हैं।

**अभी चल रही है:** साढ़ेसाती — शनि मीन में, 03/06/2027 तक। तीसरा चरण (चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि): पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक मामले केंद्र में आते हैं। सोच-समझकर बोलना, बचत करना और ईमानदार व्यवहार राहत देते हैं। चरण के अंत के साथ प्रभाव धीरे-धीरे हल्के होते जाते हैं।

## तीन चरण

पहला चरण (चंद्रमा से बारहवें भाव में शनि): खर्च, यात्रा, नींद में बाधा और भविष्य की चिंता हो सकती है। यह फ़िज़ूलखर्ची घटाने, आर्थिक योजना बनाने और स्वास्थ्य का ध्यान रखने का अच्छा समय है।

दूसरा चरण (चंद्र राशि पर शनि): यह सामान्यतः सबसे कठिन चरण होता है। काम का दबाव, भावनात्मक तनाव और धीमे परिणाम आम हैं। धैर्य, अनुशासन और शांत दिनचर्या आपको पार ले जाते हैं, और यही चरण अक्सर आगे की सफलता की नींव रखता है।

तीसरा चरण (चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि): पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और आर्थिक मामले केंद्र में आते हैं। सोच-समझकर बोलना, बचत करना और ईमानदार व्यवहार राहत देते हैं। चरण के अंत के साथ प्रभाव धीरे-धीरे हल्के होते जाते हैं।

ढैया (छोटी पनौती) तब होती है जब शनि चंद्रमा से चौथी या आठवीं राशि से गुज़रता है। चौथी राशि घर और संपत्ति की चिंताएँ लाती है; आठवीं स्वास्थ्य और अचानक बाधाओं में सावधानी माँगती है। हर ढैया लगभग ढाई वर्ष चलती है।

## पारंपरिक उपाय

पारंपरिक उपाय: शनिवार को हनुमान चालीसा या शनि स्तोत्र का पाठ करें; शनिवार की शाम पीपल के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएँ; ज़रूरतमंदों को काले तिल, उड़द दाल, लोहे की वस्तुएँ, कंबल या जूते-चप्पल दान करें; बुज़ुर्गों और मेहनतकश लोगों की सेवा करें; शराब, बेईमानी और कठोर व्यवहार से बचें। ये भक्ति और दान की पारंपरिक प्रथाएँ हैं और चिकित्सा या पेशेवर सलाह का विकल्प नहीं हैं।

SAMPLE

# मासिक भविष्यफल (गोचर)

ये भविष्यफल सूर्य, मंगल, गुरु, शनि और राहु के राशियों से गोचर पर आधारित हैं, जिसे आपकी चंद्र राशि (कुंभ) से गिना गया है, और साथ में आपकी चल रही दशा पर। गोचर हर महीने का माहौल दिखाता है; दशा मुख्य कहानी बताती है।

### नवंबर 2026 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** तुला में (चंद्रमा से भाव 9): नौवें भाव में सूर्य पिता या गुरुजनों से मतभेद और भाग्य में कमी ला सकता है। विनम्र रहें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है।
    - **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।
    - **विवाह की संभावनाएँ** — क्या हो सकता है: अच्छे प्रस्ताव और विवाह की बातचीत में प्रगति। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: व्यक्ति और परिवार को जानने के लिए समय लें, शांति से अनुकूलता जाँचें और जल्दबाज़ी न करें।
    - **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **शनि** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में शनि साढ़ेसाती का अंतिम चरण है। धन और पारिवारिक संबंधों पर ध्यान दें।
    - **बचत और हाथ में धन** — क्या हो सकता है: धन का हाथ से निकल जाना या बचत में देरी। क्या सहायक है: मासिक बजट रखें, पहले बचत करें फिर खर्च करें। निवेश या उधार देने से पहले योग्य वित्तीय सलाहकार से सलाह लें।
    - **पारिवारिक जीवन** — क्या हो सकता है: छोटी बातों पर निकट संबंधियों से मतभेद। क्या सहायक है: संभव हो तो साथ भोजन करें, ताने देने से बचें और रिश्तेदारों के बीच पैसों के मामले लिखित में तय करें।
    - **वाणी और संवाद** — क्या हो सकता है: कठोर शब्द या ग़लतफ़हमी। क्या सहायक है: बोलने से पहले सोचें, बहस से बचें और महत्वपूर्ण बातें लिखित में रखें।
- **राहु** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): आपकी चंद्र राशि पर राहु भ्रम और बेचैनी ला सकता है। जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।
    - **स्वास्थ्य और ऊर्जा** — क्या हो सकता है: थकान, कमज़ोर प्रतिरोधक क्षमता या छोटी-मोटी स्वास्थ्य शिकायतें। क्या सहायक है: सोने और खाने का समय तय रखें, रोज़ व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। कोई भी लक्षण हो तो इंतज़ार करने के बजाय जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
    - **आत्मविश्वास और व्यक्तित्व** — क्या हो सकता है: अधीरता, अहंकार का टकराव या स्वयं पर संदेह। क्या सहायक है: प्रतिक्रिया देने से पहले रुकें, पहले सुनें और बड़े निर्णय एक रात सोचकर ही लें।
    - **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरु करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

### दिसंबर 2026 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में सूर्य करियर, मान-सम्मान और सरकारी कामों में सफलता के लिए बहुत शुभ है।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।

SAMPLE

- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में राहु खर्च और यात्रा ला सकता है।
    - **अस्पताल और छिपी चिंताएँ** — क्या हो सकता है: अस्पताल जाना पड़ना या छिपी चिंताएँ। क्या सहायक है: जाँच जल्दी कराएँ और डॉक्टर से सलाह लें; छोटे लक्षणों को नज़रअंदाज़ न करें।
    - **लापरवाही से हानि** — क्या हो सकता है: लापरवाही से हानि, या छिपा विरोध। क्या सहायक है: कीमती वस्तुएँ सुरक्षित रखें, बिल और समझौते जाँचें और आँख मूँदकर भरोसा न करें।
    - **खर्च** — क्या हो सकता है: अनियोजित या भारी खर्च। क्या सहायक है: बजट रखें, आवेग में खरीदारी से बचें और आपातकालीन कोष बनाए रखें।

### जनवरी 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मकर में (चंद्रमा से भाव 12): बारहवें भाव में सूर्य खर्च, यात्रा और कम ऊर्जा ला सकता है। आराम करें और विवादों से बचें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### फ़रवरी 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** कुंभ में (चंद्रमा से भाव 1): सूर्य आपकी चंद्र राशि पर से गुज़र रहा है। ऊर्जा कम और स्वभाव में चिड़चिड़ापन रह सकता है; वरिष्ठों से टकराव टालें और पूरा आराम करें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में गुरु स्वास्थ्य की चिंता या विवाद ला सकता है। कर्ज़ के मामलों में सावधान रहें।
    - **स्वास्थ्य और दैनिक दिनचर्या** — क्या हो सकता है: पाचन, तनाव से जुड़ी या बार-बार होने वाली छोटी शिकायतें। क्या सहायक है: हल्का खाएँ, व्यायाम करें और नियमित जाँच कराएँ। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ; केवल उपायों पर निर्भर न रहें।
    - **सेवा और दैनिक कार्य** — क्या हो सकता है: काम का अधिक बोझ और थकान। क्या सहायक है: काम की प्राथमिकता तय करें, जहाँ हो सके सौंपें और ठीक से विश्राम लें।
    - **क़ानूनी विवाद** — क्या हो सकता है: विवाद का लंबा खिंचना। क्या सहायक है: समझौते को प्राथमिकता दें, सारे रिकॉर्ड रखें और योग्य वकील से सलाह लें।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### मार्च 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मीन में (चंद्रमा से भाव 2): चंद्रमा से दूसरे भाव में सूर्य अतिरिक्त खर्च और पारिवारिक बातचीत में तनाव ला सकता है। नरमी से बोलें और आँखों का ध्यान रखें।
- **मंगल** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में मंगल शुभ है। आप विरोधियों को हराते हैं और कड़ी मेहनत से लाभ पाते हैं।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

SAMPLE

### अप्रैल 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): चंद्रमा से तीसरे भाव में सूर्य शुभ है। साहस, प्रयासों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना की संभावना है।
- **मंगल** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में मंगल शुभ है। आप विरोधियों को हराते हैं और कड़ी मेहनत से लाभ पाते हैं।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### मई 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): चंद्रमा से तीसरे भाव में सूर्य शुभ है। साहस, प्रयासों में सफलता और वरिष्ठों से सराहना की संभावना है।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मीन में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 2), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### जून 2027 — सावधानी का महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** वृषभ में (चंद्रमा से भाव 4): चौथे भाव में सूर्य घर की शांति भंग कर सकता है और यात्रा या संपत्ति की चिंता ला सकता है। घर में शांत रहें।
- **मंगल** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या साझेदारों से बहस करा सकता है।
- **गुरु** कर्क में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 6), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में (चंद्रमा से भाव 3): तीसरे भाव में शनि शुभ है: मेहनत से सफलता, प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और लाभ।
    - **साहस और प्रयास** — क्या हो सकता है: अतिरिक्त साहस और जो शुरू करें उसे पूरा करने की ऊर्जा। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: छोटे दैनिक लक्ष्य रखें और अगला काम शुरू करने से पहले एक काम पूरा करें।
    - **छोटे भाई-बहन** — क्या हो सकता है: छोटे भाई-बहनों से निकटता और सहयोग। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: संपर्क में रहें, हिसाब रखे बिना मदद करें और संपत्ति या पैसों के मामले आपस में स्पष्ट रखें।
    - **छोटी यात्राएँ** — क्या हो सकता है: उपयोगी और सुखद छोटी यात्राएँ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: पहले से योजना बनाएँ, कागज़ात तैयार रखें और सावधानी से वाहन चलाएँ।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### जुलाई 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** मिथुन में (चंद्रमा से भाव 5): पाँचवें भाव में सूर्य मानसिक तनाव और संतान को लेकर चिंता ला सकता है। सट्टे से बचें।
- **मंगल** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में मंगल स्वास्थ्य, चोट और अचानक खर्च के मामले में सावधानी माँगता है।
- **गुरु** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में गुरु विवाह, साझेदारी और यात्रा के लिए शुभ है।
    - **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
    - **समझौते और अनुबंध** — क्या हो सकता है: अनुकूल समझौते और सहज बातचीत। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर धारा पढ़ें, हस्ताक्षर से पहले प्रश्न पूछें और प्रतियाँ रखें।
    - **जीवनसाथी और वैवाहिक जीवन** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी से समझ, प्रेम और सहयोग। इसे ऐसा ही

SAMPLE

बनाए रखने के लिए: रोज़ धैर्य से बात करें, निजी बातों में बाहर के लोगों को न आने दें और हर सप्ताह साथ समय तय करें।

- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### अगस्त 2027 — शुभ महीना

चल रही दशा: शनि – शनि

- **सूर्य** कर्क में (चंद्रमा से भाव 6): छठे भाव में सूर्य शुभ है। आप प्रतिद्वंद्वियों पर भारी पड़ते हैं, स्वास्थ्य सुधरता है और अधिकारियों का सहयोग मिलता है।
- **मंगल** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में मंगल स्वास्थ्य, चोट और अचानक खर्च के मामले में सावधानी माँगता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### सितंबर 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** सिंह में (चंद्रमा से भाव 7): सातवें भाव में सूर्य जीवनसाथी या साझेदारों से अनबन और थकाने वाली यात्रा दे सकता है। धैर्य रखें।
- **मंगल** तुला में (चंद्रमा से भाव 9): नौवें भाव में मंगल बाधाएँ और बड़ों से मतभेद ला सकता है।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

### अक्टूबर 2027 — मिला-जुला महीना

चल रही दशा: शनि – बुध

- **सूर्य** कन्या में (चंद्रमा से भाव 8): आठवें भाव में सूर्य स्वास्थ्य, खर्च और सरकारी मामलों में सावधानी माँगता है।
- **मंगल** वृश्चिक में (चंद्रमा से भाव 10): दसवें भाव में मंगल कामकाज में मिले-जुले फल देता है: काम आगे बढ़ सकता है, पर वरिष्ठों से टकराव से बचें।
- **गुरु** सिंह में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 7), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **शनि** मेष में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 3), फल ऊपर बताए अनुसार।
- **राहु** मकर में बना हुआ है (चंद्रमा से भाव 12), फल ऊपर बताए अनुसार।

*आधार: मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी) — गोचर के फल; वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी) — चंद्रमा से ग्रहों का गोचर; रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — गोचर के नियम।*

SAMPLE

# वर्ष-दर-वर्ष: अगले 5 वर्ष

हर वर्ष का सार चार स्वतंत्र संकेतकों से निकाला गया है: चल रही दशा, आपकी चंद्र राशि से गुरु और शनि का गोचर, साढ़ेसाती या ढैया, और अंक ज्योतिष का व्यक्तिगत वर्ष। जब अधिकतर संकेत एक जैसे हों, तो वर्ष का स्वरूप स्पष्ट होता है; जब वे अलग हों, तो वर्ष अवसर और परीक्षा दोनों लाता है।

### 2026 — सावधानी का वर्ष (आयु 31)

- दशा: शनि – शनि (31/08/2027 तक), जो आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 6 में गुरु: धीमी प्रगति; प्रतियोगिता, कर्ज़, रोग में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 2 में शनि: धन, परिवार और वाणी में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- साढ़ेसाती चल रही है (शनि मीन में)।
- व्यक्तिगत वर्ष 7: चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें।

**इस वर्ष ध्यान देने योग्य:**

- **कर्मचारी और सहायक** — क्या हो सकता है: वफ़ादार और उपयोगी सहायक या कर्मचारी; कठिन पक्ष में, कर्मचारियों या सहायकों से परेशानी। क्या सहायक है: स्पष्ट निर्देश दें और व्यवहार निष्पक्ष तथा लिखित में रखें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा** — क्या हो सकता है: पुराने या छिपे स्वास्थ्य मामलों और दुर्घटनाओं में सावधानी की आवश्यकता। क्या सहायक है: नियमित जाँच कराएँ, जोखिम भरी गतिविधियों से बचें और सावधानी से वाहन चलाएँ व यात्रा करें। डॉक्टर को जल्दी दिखाएँ।

### 2027 — शुभ वर्ष (आयु 32)

- दशा: शनि – शनि (31/08/2027 तक), जो आध्यात्मिक जीवन, करियर और व्यवसाय पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 7 में गुरु: विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 8: उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं।

**इस वर्ष ध्यान देने योग्य:**

- **व्यापारिक साझेदारी** — क्या हो सकता है: लाभदायक गठबंधन और भरोसेमंद साझेदार। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: हर शर्त लिखित में रखें और हस्ताक्षर से पहले क़ानूनी सलाह लें।
- **विरासत और साझा धन** — क्या हो सकता है: विरासत, बीमा या ससुराल पक्ष से लाभ। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वसीयत और कागज़ात स्पष्ट रखें और किसी भी समझौते से पहले क़ानूनी सलाह लें।

### 2028 — शुभ वर्ष (आयु 33)

- दशा: शनि – बुध (10/05/2030 तक), जो शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 7 में गुरु: विवाह, साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 9: पूर्णता का वर्ष। पुराने काम पूरे करें, जो अब उपयोगी नहीं उसे छोड़ें और नए चक्र की तैयारी करें।

**इस वर्ष ध्यान देने योग्य:**

- **ग्राहक और जनता से व्यवहार** — क्या हो सकता है: ग्राहकों, क्लाइंट और जनता से अच्छा प्रतिसाद। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: विनम्र रहें, वचन निभाएँ और समझौतों का उचित रिकॉर्ड रखें।
- **छवि और प्रतिष्ठा** — क्या हो सकता है: लोगों के बीच पहचान और अच्छी छवि। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: वादे निभाएँ, विनम्रता से बोलें और दिखावे से बचें।

SAMPLE

### 2029 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 34)

- दशा: शनि – बुध (10/05/2030 तक), जो शिक्षा और विद्या, स्वास्थ्य और जीवन-शक्ति पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 8 में गुरु: धीमी प्रगति; अचानक परिवर्तन, शोध, विरासत और आयु में सावधान रहें।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 3 में शनि: साहस, भाई-बहन, छोटी यात्राएँ और संवाद में मेहनत से स्थिर परिणाम।
- व्यक्तिगत वर्ष 1: नई शुरुआत का वर्ष। परियोजनाएँ शुरू करें, पहल करें और अगले नौ वर्षों के लिए बीज बोएँ।

**इस वर्ष ध्यान देने योग्य:**

- **जीवनसाथी की आर्थिक स्थिति** — क्या हो सकता है: जीवनसाथी के साधनों से सहयोग; कठिन पक्ष में, जीवनसाथी या साझा आर्थिक मामलों में खिंचाव। क्या सहायक है: पैसों पर खुलकर बात करें और साझा खाते व ज़िम्मेदारियाँ स्पष्ट रखें।
- **नई शुरुआत** — क्या हो सकता है: कुछ नया शुरू करने या तरीका बदलने के लिए अच्छा समय; कठिन पक्ष में, जल्दबाज़ी में या बिना योजना की शुरुआत। क्या सहायक है: पहले योजना बनाएँ, सलाह लें और छोटे स्तर से शुरू करें ताकि बड़ा करने से पहले परख सकें।

### 2030 — मिले-जुले फलों का वर्ष (आयु 35)

- दशा: शनि – केतु (19/06/2031 तक), जो आध्यात्मिक जीवन पर ध्यान लाती है।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 9 में गुरु: भाग्य, पिता, गुरु में वृद्धि, सहारा और अच्छी खबर।
- आपकी चंद्र राशि से भाव 4 में शनि: घर, माता, संपत्ति में ज़िम्मेदारियाँ और धैर्य की ज़रूरत।
- ढैया (छोटी पनौती) चल रही है (शनि वृषभ में)।
- व्यक्तिगत वर्ष 2: धैर्य और साझेदारी का वर्ष। सहयोग करें, संबंध मज़बूत करें और योजनाओं को चुपचाप बढ़ने दें।

**इस वर्ष ध्यान देने योग्य:**

- **भाग्य और सौभाग्य** — क्या हो सकता है: भाग्य साथ देता है और प्रयासों का फल मिलता है। इसे ऐसा ही बनाए रखने के लिए: लगातार काम करते रहें, केवल भाग्य पर निर्भर न रहें और कृतज्ञता के साथ दान करें।
- **बड़े भाई-बहन** — क्या हो सकता है: बड़े भाई-बहनों से सहयोग और अच्छी सलाह; कठिन पक्ष में, बड़े भाई-बहनों से मतभेद। क्या सहायक है: उनका सम्मान करें और पैसों के मामले रिश्ते से अलग रखें।

SAMPLE

# अंक ज्योतिष

### मूलांक 9

अंक 9 (मंगल) साहस, ऊर्जा और सेवा का प्रतीक है। आप बहादुर, उदार और रक्षा करने वाले हैं। क्रोध और जल्दबाज़ी पर नियंत्रण रखें।

### भाग्यांक 3

अंक 3 (गुरु) ज्ञान, अभिव्यक्ति और आशावाद का प्रतीक है। आप मिलनसार, रचनात्मक और दूसरों का मार्गदर्शन करने में कुशल हैं। अनुशासन आपकी प्रतिभा को परिणाम में बदलता है।

### जीवन पथ अंक 3

अंक 3 (गुरु) ज्ञान, अभिव्यक्ति और आशावाद का प्रतीक है। आप मिलनसार, रचनात्मक और दूसरों का मार्गदर्शन करने में कुशल हैं। अनुशासन आपकी प्रतिभा को परिणाम में बदलता है।

### आने वाले व्यक्तिगत वर्ष

| वर्ष | अंक | विषय |
|---|---|---|
| 2025 | 6 | परिवार और ज़िम्मेदारी का वर्ष। घर, विवाह और कर्तव्य आगे आते हैं; देखभाल दें और पाएँ। |
| 2026 | 7 | चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें। |
| 2027 | 8 | उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं। |
| 2028 | 9 | पूर्णता का वर्ष। पुराने काम पूरे करें, जो अब उपयोगी नहीं उसे छोड़ें और नए चक्र की तैयारी करें। |
| 2029 | 1 | नई शुरुआत का वर्ष। परियोजनाएँ शुरू करें, पहल करें और अगले नौ वर्षों के लिए बीज बोएँ। |
| 2030 | 2 | धैर्य और साझेदारी का वर्ष। सहयोग करें, संबंध मज़बूत करें और योजनाओं को चुपचाप बढ़ने दें। |
| 2031 | 3 | अभिव्यक्ति और सामाजिक जीवन का वर्ष। बातचीत करें, रचें और आनंद लें, पर खर्च पर नियंत्रण रखें। |
| 2032 | 4 | कड़ी मेहनत और नींव रखने का वर्ष। व्यवस्थित रहें, बचत करें और धीरे-धीरे निर्माण करें। |
| 2033 | 5 | परिवर्तन और गतिशीलता का वर्ष। यात्रा, नए संपर्क और अवसर आते हैं; लचीले रहें पर सावधान भी। |
| 2034 | 6 | परिवार और ज़िम्मेदारी का वर्ष। घर, विवाह और कर्तव्य आगे आते हैं; देखभाल दें और पाएँ। |
| 2035 | 7 | चिंतन और अध्ययन का वर्ष। आराम करें, सीखें, भीतर झाँकें और जल्दबाज़ी के निर्णयों से बचें। |
| 2036 | 8 | उपलब्धि और धन से जुड़े विषयों का वर्ष। करियर और आर्थिक मामलों पर मेहनत करें; परिणाम अच्छे हो सकते हैं। |

*अंक ज्योतिष शास्त्रीय वैदिक ज्योतिष का भाग नहीं है; इसे यहाँ एक लोकप्रिय सहायक पद्धति के रूप में शामिल किया गया है।*

SAMPLE

# उपाय और रत्न

## सरल पारंपरिक उपाय

ये लाल किताब और लोक परंपराओं में हर ग्रह से जुड़े, व्यापक रूप से किए जाने वाले सरल उपाय हैं। ये उन ग्रहों के लिए दिए गए हैं जिन्हें आपकी कुंडली में सहारे की ज़रूरत है।

### सूर्य (सोया हुआ, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
- पिता और बड़ों का आदर करें।
- जहाँ तक हो सके, दूसरों से मुफ़्त उपहार लेने से बचें।
- ताँबे का एक छोटा टुकड़ा अपने पास रखें या ताँबे का सिक्का बहते पानी में प्रवाहित करें।

### मंगल (आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- हनुमान मंदिर में मिठाई (जैसे गुड़) अर्पित करें।
- भाइयों से अच्छे संबंध रखें।
- क्रोध और लापरवाही से वाहन चलाने से बचें।

### बुध (लाल किताब के भाव से कमज़ोर, भाव 12 में)

- गायों को हरा चारा खिलाएँ।
- बहन, बेटी और बुआ-मौसी का आदर करें।
- दाँत और नाक साफ़ रखें।
- चुगली से बचें और वादे निभाएँ।

### गुरु (भाव 6 में, आपके लग्न के लिए अनुकूल नहीं)

- माथे पर केसर या हल्दी का छोटा तिलक लगाएँ।
- गुरुजनों, बड़ों और धार्मिक व्यक्तियों का आदर करें।
- पुस्तकें दान करें या शिक्षा में सहायता करें।
- अपना आचरण ईमानदार रखें।

### शुक्र (भाव 12 में)

- जीवनसाथी और सामान्य रूप से स्त्रियों का आदर करें।
- शुक्रवार को चावल, दही या कपड़े जैसी सफ़ेद वस्तुएँ दान करें।
- स्वयं को और घर को साफ़ और सुगंधित रखें।
- अति-भोग से बचें।

*आधार: लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं) — उपाय; गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग) — रत्नों की परीक्षा।*

SAMPLE

# आपका व्यक्तिगत कैलेंडर

मुहूर्त परंपरा के अनुसार वे दिन शुभ माने गए हैं जब चंद्रमा आपके जन्म नक्षत्र से गिनने पर अनुकूल नक्षत्र में हो (तारा बल) और आपकी चंद्र राशि से गिनने पर अनुकूल भाव में हो (चंद्र बल)। महत्वपूर्ण काम की शुरुआत, यात्रा, खरीदारी और मुलाकातों के लिए इन दिनों का उपयोग करें; सावधानी वाले दिनों में कोई बड़ा काम शुरू न करें।

### नवंबर 2026

**शुभ दिन:** 2, 4, 10, 12, 14, 18, 19, 23, 28, 30
**सावधानी के दिन:** 15, 20, 24

### दिसंबर 2026

**शुभ दिन:** 9, 11, 15, 16, 17, 21, 27, 29
**सावधानी के दिन:** 3, 18, 22, 30

### जनवरी 2027

**शुभ दिन:** 5, 7, 8, 11, 12, 13, 17, 22, 23, 25
**सावधानी के दिन:** 9, 14, 18, 26

*आधार: रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि — तारा बल और चंद्र बल।*

SAMPLE

## स्रोत और अस्वीकरण

इस रिपोर्ट के फलादेश नीचे दिए शास्त्रीय ग्रंथों के सिद्धांतों के आधार पर हमारे अपने शब्दों में लिखे गए हैं। संदर्भ ग्रंथ और विषय के नाम से दिए गए हैं।

- बृहत् पाराशर होरा शास्त्र (महर्षि पराशर रचित माना जाता है)
- वराहमिहिर का बृहज्जातक (छठी शताब्दी)
- कल्याणवर्मा की सारावली (लगभग 10वीं शताब्दी)
- मंत्रेश्वर की फलदीपिका (लगभग 14वीं शताब्दी)
- वैद्यनाथ दीक्षित का जातक पारिजात (लगभग 15वीं शताब्दी)
- कालिदास का उत्तर कालामृत
- नारायण भट्ट का चमत्कार चिंतामणि
- पृथुयशस का होरासार
- रामदैवज्ञ का मुहूर्त चिंतामणि
- गरुड़ पुराण (रत्न-परीक्षा प्रसंग)
- नीलकंठ की ताजिक नीलकंठी (वर्षफल)
- लाल किताब परंपरा (केवल पद्धति; उपाय सामान्य पारंपरिक उपाय हैं)

SAMPLE